Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

5.3 V2

ऋग्वेद संहिता

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म्

यजुर्वेद संहिता

दिव्य प्रकाशन
पतञ्जलि योगपीठ, दिव्य योग मन्दिर (ट्रस्ट)
दिल्ली हरिद्वार रोड, बहादराबाद
हरिद्वार-२४९४०२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशक : दिव्य प्रकाशन
पतञ्जलि योगपीठ, दिव्य योग मन्दिर (ट्रस्ट)
दिल्ली हरिद्वार रोड, बहादराबाद
हरिद्वार-249402, उत्तराखण्ड
ई-मेल : divyayoga@rediffmail.com
वैबसाइट : www.divyayoga.com
दूरभाष : (01334) 244107, 240008, 246737
संस्करण : 2009
मूल्य : 170.00
मुद्रक : आर्य प्रकाशन, दिल्ली
: राधा प्रेस, कैलाशनगर, दिल्ली-११००३१

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्ररोचना

परमपिता परमात्मा ने सृष्टि रचना के प्रारम्भ में ही मानव मात्र के कल्याण के लिए अग्नि; वायु, आदित्य एवं अंगिरा नामक ऋषियों के पवित्र अन्तःकरणों में वेदों का पवित्र ज्ञान प्रकाशित किया था। वेदों की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा करते हुए महर्षि मनु ने कहा था-'वेदोऽखिलो धर्म मूलम्' अर्थात् समस्त धर्म का मूल वेद है। वेदों की सर्वज्ञानमयता प्रतिपादित करते हुए मनुस्मृति में कहा गया है-

यः कश्चित् कस्यचित् धर्मो मनुना प्रकीर्तितः।
स सर्वोऽभिहितो वेदे सर्वज्ञानमयो हि सः।।

इसी सत्य को महाभारतकार वेदव्यास ने इस प्रकार कहा-

आदौ वेदमयी दिव्या यतः सर्वाः प्रवृत्तयः।

वेद के हजारों मन्त्रों में संसार का समस्त ज्ञान-विज्ञान समाहित है। न जाने कितने ऋषिमुनियों, वेदपाठी आचार्यो वेद कण्ठस्थ करने वाले ब्राह्मणों तथा याज्ञिकों ने अनेक कष्ट सहकर वेद-निधि की रक्षा की। वेदों का ज्ञान सार्वकालिक, सार्वभौमिक एवं पूर्ण रूप से वैज्ञानिक है। उसमें अध्यात्म, सांसारिकता के साथ-साथ मुक्ति का मार्ग प्रदर्शित करने वाला वैदिक-ज्ञान विश्व की अमूल्य निधि है। अनेक स्वनामधन्य वेद-भाष्यकारों ने वेदोदधि का मन्थन कर नाना प्रकार के अमूल्यरत्न विश्व को प्रदान किये हैं। वैदिक ज्ञान-गंगा ने न केवल भारतवासियों को अपितु सम्पूर्ण विश्व को आह्लादित किया है। लाखों, करोड़ों वर्षों बाद भी वेदमन्त्रों में एक अक्षर या मात्रा का कम अथवा अधिक न होना सिद्ध करता है कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है और वेद पाठ करने वाले विप्रों ने सर्वात्मना इस ज्ञान की रक्षा की है।

कैसा था वह स्वर्णिय युग जब घर-घर में वेद की पावन ऋचाएँ गूँजती थी। शुद्ध पर्यावरण था। सर्वत्र प्रेम, सौहार्द, शान्ति का साम्राज्य था। ईश्वर विश्वासी, सत्य और सार्वभौमिक धर्म में आस्था रखने वाला, परोपकारी, देशभक्त, चरित्रवान्, वेदज्ञजनों से यह धरती स्वर्ग सम थी। किन्तु जैसे दिन के पश्चात् रात्रि और रात्रि के पश्चात् दिन, सुख के पश्चात् दुःख और दुःख के पश्चात् सुख यह सृष्टि का अनादि, अनन्त क्रम है, इसी क्रम से मध्यकाल में वेदों का अध्ययन- अध्यापन और श्रवण-श्रावण बाधित हो जाने से मानव, नाना प्रकार के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, आत्मिक कष्टों से घिर गया, इन बहुविध दुःखों से छुटकारा पाने के लिए युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द ने पुनः वेद, यज्ञ और योग का मार्ग दिखाया। वर्तमान समय में योगऋषि पूज्य स्वामी रामदेव जी महाराज इस वेद, यज्ञ और योग की त्रिवेणी में स्नान करा कर असंख्य मानवों को सुख, शान्ति, प्रेम एवं नवोल्लास प्रदान कर रहे हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूज्य स्वामी रामदेव जी महाराज के मार्गदर्शन में पतंजलि योगपीठ पुनः सम्पूर्ण विश्व का मार्गदर्शन करने हेतु कृतसंकल्प है। हम वेदालोक से विश्व को आलोकित करना चाहते हैं। वेदों की स्वतः प्रामाण्यता सर्वविदित है। चारों वेदों में अभिव्यक्त सार्वभौमिक सिद्धान्तों की प्रतिष्ठापना से संकुचित अवधारणाएं समाप्त होंगी, आध्यामित्क वातावरण का निर्माण होगा, परस्पर राग-द्वेष, शत्रुता, मनोमालिन्य का भाव समाप्त होगा।

चारों वेदों में प्रतिपादित ज्ञान, कर्म और उपासना के अन्तर्गत यजुर्वेद का कार्य विषय है कर्म। कर्मकाण्ड अर्थात् आचार मीमांसा, जैसा हमने निर्मल ज्ञान प्राप्त किया तदनुसार श्रेष्ठ कर्म, उत्तम आचार, उत्तम जीवन जीना, आनन्द प्राप्ति का मार्ग है। 'यज्ञो वैश्रेष्ठतमं कर्म' यज्ञ संसार का सर्वश्रेष्ठ कर्म है, नित्यप्रति अग्निहोत्र एवं समय 2 पर बृहद यज्ञों का विधि-विधान पूर्वक श्रद्धा से अनुष्ठान। यह इस देश की महती विद्या है। आज यह सिद्ध हो चुका है कि यज्ञ विधान सर्वथा वैज्ञानिक है। यज्ञ की प्रत्येक विधि में दिव्य सन्देश समाहित है। वेदमन्त्रों के मधुर उच्चारण से जहाँ सम्पूर्ण वातावरण पवित्र होता है, वहाँ स्वाह स्वधाकार और 'इदं न मम' के उद्घोष से स्वार्थ की भावना दूर होती है, विश्व प्रेम का पवित्र भाव जागृत होता है। विविध जड़ी-बूटियों के द्वारा यज्ञ से रोग की निवृत्ति एवं वातावरण की शुद्धि होती है, पर्यावरण प्रदूषण की भयानक समस्या का समाधान भी यज्ञ से संभव है।

यजुर्वेद संहिता का यह शुद्ध संस्करण प्रकाशित करते हुए अपार हर्ष हो रहा है और मेरा यह विश्वास है कि इसके अध्ययन से यह बोध होगा कि इसमें परा और अपरा दोनों विधायें विद्यमान हैं और वे किसी-किसी व्यक्ति विशेष के लिये नहीं अपितु मानवमात्र के लिये हैं। इन विद्याओं के सर्वत्र प्रचार-प्रसार से विश्व का कल्याण होगा।

अन्त में **सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः**। तथा 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का दिव्य सन्देश सर्वत्र गुंजायमान होगा। इसी भावना के साथ 'दिव्य प्रकाशन' के माध्यम से यजुर्वेद संहिता आप वेदनिष्ठ श्रद्धालुओं के करकमलों में सस्नेह समर्पित है।

सादर

वेदानुरागी

आचार्य बालकृष्ण

(आचार्य बालकृष्ण)

महामन्त्री, पतंजलि योगपीठ

हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म्

यजुर्वेद-संहिता

अथ प्रथमोऽध्यायः

ऋषिः—परमेष्ठी प्रजापतिः १-३१॥

देवता—सविता १, ३, १०, २०, २५, २६। यज्ञः २, ७, १४, १५, २१, २७-३१। विष्णुः ४, ९। अग्निः ५, ८, ११, १७-१९, २३। प्रजापतिः ६। अप्सवितारौ १२। इन्द्रः[उ], अग्निः[क], यज्ञः[र] १३। वायुः[क], सविता[र] १६। यज्ञः[क], अग्निसवितारौ[र] २२। द्योविद्युतौ २४॥

छन्दः—स्वराड्बृहती[क], ब्राह्म्युष्णिक्[र] १। स्वराडार्षीत्रिष्टुप् २। भुरिग्जगती ३। अनुष्टुप् ४। आर्चीत्रिष्टुप् ५। आर्चीपङ्क्तिः ६। प्राजापत्याजगती ७। निचृदतिजगती ८। निचृत्त्रिष्टुप् ९। भुरिग्बृहती १०। स्वराड्जगती ११, १४। भुरिगत्यष्टिः १२। निचृदुष्णिक्[उ], भुरिगार्चीगायत्री[क], भुरिगुष्णिक्[र] १३। निचृज्जगती[क], याजुषीपङ्क्तिः[र] १५। स्वराड्ब्राह्मीत्रिष्टुप्[क], विराड्गायत्री[र] १६। निचृद्ब्राह्मीपङ्क्तिः १७। ब्राह्म्युष्णिक्[उ], आर्चीत्रिष्टुप्[क], आर्चीपङ्क्तिः[र] १८। निचृद्ब्राह्मीत्रिष्टुप् १९। विराड्ब्राह्मीत्रिष्टुप् २०, २५। गायत्री[क], निचृत्पङ्क्तिः[र] २१। स्वराट्त्रिष्टुप्[क], गायत्री[र] २२। बृहती २३। स्वराड्ब्राह्मीपङ्क्तिः २४। स्वराड्ब्राह्मीपङ्क्तिः[क], भुरिग्ब्राह्मीपङ्क्तिः[र] २६। ब्राह्मीत्रिष्टुप् २७। विराड्ब्राह्मीपङ्क्तिः २८। त्रिष्टुप्[क,र] २९। निचृज्जगती ३०। जगती[क], अनुष्टुप्[र] ३१॥

स्वरः—मध्यमः[क], ऋषभः[र] १। धैवतः २, ५, ९, १९, २०, २५, २७, २९। निषादः ३, ७, ८, ११, १४, ३०। गान्धारः ४, १२। पञ्चमः ६, १७, २४, २६, २८। मध्यमः १०, २३। ऋषभः[उ,र], षड्जः[क] १३। निषादः[क], पञ्चमः[र] १५। धैवतः[क], षड्जः[र] १६। ऋषभः[उ], धैवतः[क], पञ्चमः[र] १८। षड्जः[क], पञ्चमः[र] २१। धैवतः[क], षड्जः[र] २२। निषादः[क], गान्धारः[र] ३१॥

॥ ओ३म् ॥ [क]इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणऽआप्यायध्वमघ्न्याऽइन्द्राय भागं [र]प्रजावतीरनमीवाऽअयक्ष्मा मा व स्तेनऽईशत माघशꣳसो ध्रुवाऽअस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि ॥१॥

वसोः पवित्रमसि द्यौरसि पृथिव्यसि मातरिश्वनो घर्मोऽसि विश्वधाऽअसि। परमेण धाम्ना दृꣳहस्व मा ह्वार्मा ते यज्ञपतिर्ह्वार्षीत् ॥२॥

वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः॥३॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सा विश्वायुः सा विश्वकर्मा सा विश्वधायाः ।
इन्द्रस्य त्वा भागꣳसोमेनातनच्मि विष्णो हव्यꣳरक्ष ॥४॥
अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यताम् ।
इदमहमनृतात् सत्यमुपैमि ॥५॥
कस्त्वा युनक्ति स त्वा युनक्ति कस्मै त्वा युनक्ति
तस्मै त्वा युनक्ति। कर्मणे वां वेषाय वाम् ॥६॥
प्रत्युष्टꣳरक्षः प्रत्युष्टाऽअरातयो निष्टप्तꣳरक्षो निष्टप्ताऽअरातयः ।
उर्वन्तरिक्षमन्वेमि ॥७॥
धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं योऽस्मान् धूर्वति तं धूर्व यं वयं धूर्वामः।
देवानामसि वह्नितमꣳसस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम् ॥८॥
अह्रुतमसि हविर्धानं दृꣳहस्व मा ह्वार्मा ते यज्ञपतिर्ह्वार्षीत् ।
विष्णुस्त्वा क्रमतामुरु वातायापहतꣳरक्षो यच्छन्तां पञ्च ॥९॥
देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ।
अग्नये जुष्टं गृह्णाम्यग्नीषोमाभ्यां जुष्टं गृह्णामि ॥१०॥
भूताय त्वा नारातये स्वरभिविख्येषं दृꣳहन्तां दुर्याः पृथिव्यामुर्वन्तरिक्षमन्वेमि
पृथिव्यास्त्वा नाभौ सादयाम्यदित्याऽउपस्थेऽग्ने हव्यꣳरक्ष ॥११॥
पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण
सूर्यस्य रश्मिभिः। देवीरापोऽअग्रेगुवोऽअग्रेपुवोऽग्रऽइममद्य यज्ञं
नयताग्रे यज्ञपतिꣳ सुधातुं यज्ञपतिं देवयुवम् ॥१२॥
[ग]युष्माऽइन्द्रोऽवृणीत वृत्रतूर्ये यूयमिन्द्रमवृणीध्वं वृत्रतूर्ये प्रोक्षिता स्थ।
[क]अग्नये त्वा जुष्टं प्रोक्षाम्यग्नीषोमाभ्यां त्वा जुष्टं प्रोक्षामि। [र]दैव्याय
कर्मणे शुन्धध्वं देवयज्यायै यद्वोऽशुद्धाः पराजघ्नुरिदं वस्तच्छुन्धामि ॥१३॥
शर्मास्यवधूतꣳरक्षोऽवधूताऽअरातयोऽदित्यास्त्वगसि प्रति त्वादितिर्वेत्तु।
अद्रिरसि वानस्पत्यो ग्रावासि पृथुबुध्नः प्रति त्वादित्यास्त्वग्वेत्तु ॥१४॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[क]अग्नेस्तनूरसि वाचो विसर्जनं देववीतये त्वा गृह्णामि बृहद् ग्रावासि
वानस्पत्यः सऽइदं देवेभ्यो हविः शमीष्व सुशमि शमीष्व ।
[र]हविष्कृदेहि हविष्कृदेहि ॥१५॥

[क]कुक्कुटोऽसि मधुजिह्वऽइषमूर्जमावद त्वया वयꣳसङ्घातꣳसङ्घातं
जेष्म वर्षवृद्धमसि प्रति त्वा वर्षवृद्धं वेत्तु परापूतꣳरक्षः परापूता
अरातयोऽपहतꣳरक्षो वायुर्वो विविनक्तु [र]देवो वः सविता
हिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना ॥१६॥

धृष्टिरस्यपाऽग्नेऽअग्निमामादं जहि निष्क्रव्यादꣳसेधा देवयजं वह ।
ध्रुवमसि पृथिवीं दृꣳह ब्रह्मवनि त्वा क्षत्रवनि सजातवन्युपदधामि
भ्रातृव्यस्य वधाय ॥१७॥

[उ]अग्ने ब्रह्म गृभ्णीष्व धरुणमस्यन्तरिक्षं दृꣳह ब्रह्मवनि त्वा
क्षत्रवनि सजातवन्युपदधामि भ्रातृव्यस्य वधाय । [क]धर्त्रमसि दिवं
दृꣳह ब्रह्मवनि त्वा क्षत्रवनि सजातवन्युपदधामि भ्रातृव्यस्य वधाय ।
[र]विश्वाभ्यस्त्वाशाभ्यऽउपदधामि चित स्थोर्ध्वचितो भृगूणामङ्गिरसां
तपसा तप्यध्वम् ॥१८॥

शर्मास्यवधूतꣳरक्षोऽवधूताऽअरातयोऽदित्यास्त्वगसि प्रति त्वादितिर्वेत्तु ।
धिषणासि पर्वती प्रति त्वादित्यास्त्वग्वेत्तु दिव स्कम्भनीरसि धिषणासि
पार्वतेयी प्रति त्वा पर्वती वेत्तु ॥१९॥

धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणाय त्वोदानाय त्वा व्यानाय त्वा ।
दीर्घामनु प्रसितिमायुषे धां देवो वः सविता हिरण्यपाणिः
प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वा महीनां पयोऽसि ॥२०॥

[क]देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ।
सं वपामि [र]समापऽओषधीभिः समोषधयो रसेन ।
सꣳरेवतीर्जगतीभिः पृच्यन्ताꣳ सं मधुमतीर्मधुमतीभिः पृच्यन्ताम् ॥२१॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कजनयत्यै त्वा सँयौमीदमग्नेरिदमग्नीषोमयोरिषे त्वा घर्मोऽसि
विश्वायुरुरुप्रथाऽउरु प्रथस्वोरु ते यज्ञपतिः प्रथतामग्निष्टे त्वचं
मा हिꣳसीद्देवस्त्वा सविता श्रपयतु वर्षिष्ठेऽधि नाके ॥२२॥
मा भेर्मा संविक्थाऽअतमेरुर्यज्ञोऽतमेरुर्यजमानस्य प्रजा भूयात्
त्रिताय त्वा द्विताय त्वैकताय त्वा ॥२३॥
देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्।
आददेऽध्वरकृतं देवेभ्यऽइन्द्रस्य बाहुरसि दक्षिणः सहस्रभृष्टिः
शततेजा वायुरसि तिग्मतेजा द्विषतो वधः ॥२४॥
पृथिवि देवयजन्योषध्यास्ते मूलं मा हिꣳसिषं व्रजं गच्छ गोष्ठानं
वर्षतु ते द्यौर्बधान देव सवितः परमस्यां पृथिव्याꣳशतेन
पाशैर्योऽस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मस्तमतो मा मौक् ॥२५॥
कअपाररुं पृथिव्यै देवयजनाद्वध्यासं व्रजं गच्छ गोष्ठानं वर्षतु
ते द्यौर्बधान देव सवितः परमस्यां पृथिव्याꣳशतेन पाशैर्योऽ-
स्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मस्तमतो मा मौक्। रअररो दिवं मा
पप्तो द्रप्सस्ते द्यां मा स्कन् व्रजं गच्छ गोष्ठानं वर्षतु ते द्यौर्बधान
देव सवितः परमस्यां पृथिव्याꣳशतेन पाशैर्योऽस्मान्द्वेष्टि यं
च वयं द्विष्मस्तमतो मा मौक् ॥२६॥
गायत्रेण त्वा छन्दसा परिगृह्णामि त्रैष्टुभेन त्वा छन्दसा परिगृह्णामि
जागतेन त्वा छन्दसा परिगृह्णामि। सुक्ष्मा चासि शिवा चासि
स्योना चासि सुषदा चास्यूर्जस्वती चासि पयस्वती च ॥२७॥
पुरा क्रूरस्य विसृपो विरप्शिन्नुदादाय पृथिवीं जीवदानुम् ।
यामैरयँश्चन्द्रमसि स्वधाभिस्तामु धीरासोऽअनुदिश्य यजन्ते ।
प्रोक्षणीरासादय द्विषतो वधोऽसि ॥२८॥
कप्रत्युष्टꣳरक्षः प्रत्युष्टाऽअरातयो निष्टप्तꣳरक्षो निष्टप्ताऽअरातयः।
अनिशितोऽसि सपत्नक्षिद्वाजिनं त्वा वाजेध्यायै सम्मार्ज्मि।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[र] प्रत्युष्टꣳरक्षः प्रत्युष्टाऽअरातयो निष्टप्तꣳरक्षो निष्टप्ताऽअरातयः।
अनिशिताऽसि सपत्नक्षिद्वाजिनीं त्वा वाजेध्यायै सम्मार्ज्मि ॥२९॥
अदित्यै रास्नासि विष्णोर्वेष्पोस्यूर्जे त्वाऽदब्धेन त्वा चक्षुषावपश्यामि।
अग्नेर्जिह्वासि सुहूर्देवेभ्यो धाम्नेधाम्ने मे भव यजुषेयजुषे ॥३०॥
[क] सवितुस्त्वा प्रसवऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः।
सवितुर्वः प्रसवऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः।
[स] तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि धाम नामासि प्रियं देवाना-
मनाधृष्टं देवयजनमसि ॥३१॥

इति प्रथमोऽध्यायः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ द्वितीयोऽध्यायः

—:०:—

ऋषिः—परमेष्ठी प्रजापतिः १-१६, १८-२०। देवलः १७। वामदेवः २१-३४॥

देवता—यज्ञः १, २, ५। अग्निः ३, ४, ७, ९, १४, १७, २७-३०। विष्णुः ६, ८, २५। इन्द्रः १०, २२। द्यावापृथिवी ११। सविता १२। बृहस्पतिः १३। अग्निषोमौ [क], इन्द्राग्नी [र] १५। द्यावापृथिवी मित्रावरुणौ च [क], अग्निः [र] १६। विश्वेदेवाः १८। अग्निवायू १९। अग्निसरस्वत्यौ २०। प्रजापतिः २१, २३। त्वष्टा २४। ईश्वरः २६। पितरः ३१-३३। आपः ३४॥

छन्दः—निचृत्पङ्क्तिः १। स्वराड्जगती २। भुरिगार्चीत्रिष्टुप् [उ], भुरिगार्चीपङ्क्तिः [क], पङ्क्तिः [र] ३। निचृद्गायत्री ४, ३३। निचृद्ब्राह्मीबृहती ५। ब्राह्मीत्रिष्टुप् [क], निचृत्त्रिष्टुप् [र] ६। बृहती ७। विराड्ब्राह्मीपङ्क्तिः ८। जगती ९। भुरिग्ब्राह्मीपङ्क्तिः १०। ब्राह्मीबृहती ११। भुरिग्बृहती १२। विराड्जगती १३। अनुष्टुप् [क], भुरिगार्चीगायत्री [र] १४। ब्राह्मीबृहती [क], निचृदतिजगती [र] १५। भुरिगार्चीपङ्क्तिः [क], भुरिक्त्रिष्टुप् [र] १६। निचृज्जगती १७। स्वराट्त्रिष्टुप् १८। भुरिक्पङ्क्तिः १९, ३०। भुरिग्ब्राह्मीत्रिष्टुप् २०। भुरिग्ब्राह्मीबृहती २१। विराट्त्रिष्टुप् २२, २४। निचृद्बृहती २३। निचृदार्चीपङ्क्तिः [उ], आर्चीपङ्क्तिः [क], भुरिग्जगती [र] २५। उष्णिक् २६। निचृत्पङ्क्तिः [क], गायत्री [र] २७। भुरिगुष्णिक् २८, ३४। स्वराडार्षी अनुष्टुप् २९। बृहती ३१। ब्राह्मीबृहती [क], निचृद्बृहती [र] ३२॥

स्वरः—पञ्चमः १, ८, १०, १९, ३०। निषादः २, ९, १३, १७। धैवतः [उ], पञ्चमः [क,र] ३। षड्जः ४, ३३। मध्यमः ५, ७, ११, १२, २१, २३, ३१, ३२। धैवतः ६, १८, २०, २२, २४। गान्धारः [क], षड्जः [र] १४। मध्यमः [क], निषादः [र] १५। पञ्चमः [क], धैवतः [र] १६। पञ्चमः [उ,क], निषादः [र] २५। ऋषभः २६, २८, ३४। पञ्चमः [क], षड्जः [र] २७। गान्धारः २९॥

कृष्णोऽस्याखरेष्ठोऽग्नये त्वा जुष्टं प्रोक्षामि वेदिरसि बर्हिषे
त्वा जुष्टां प्रोक्षामि बर्हिरसि स्रुग्भ्यस्त्वा जुष्टं प्रोक्षामि ॥ १॥
अदित्यै व्युन्दनमसि विष्णो स्तुपोऽस्यूर्णम्रदसं त्वा स्तृणामि स्वासस्थां
देवेभ्यो भुवपतये स्वाहा भुवनपतये स्वाहा भूतानां पतये स्वाहा॥ २॥
[उ]गन्धर्वस्त्वा विश्वावसुः परिदधातु विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्य-
ग्निरिडऽईडितः। [क]इन्द्रस्य बाहुरसि दक्षिणो विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य
परिधिरस्यग्निरिडऽईडितः। [र]मित्रावरुणौ त्वोत्तरतः परिधत्तां ध्रुवेण
धर्मणा विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिडऽईडितः ॥ ३॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वीतिहोत्रं त्वा कवे द्युमन्तꣳसमिधीमहि । अग्ने बृहन्तमध्वरे ॥४॥
समिदसि सूर्यस्त्वा पुरस्तात् पातु कस्याश्चिदभिशस्त्यै ।
सवितुर्बाहू स्थऽऊर्णम्रदसं त्वा स्तृणामि स्वासस्थं
देवेभ्यऽआ त्वा वसवो रुद्राऽआदित्याः सदन्तु ॥५॥
घृताच्यसि जुहूर्नाम्ना सेदं प्रियेण धाम्ना प्रियꣳ सदऽआसीद
घृताच्यस्युपभृन्नाम्ना सेदं प्रियेण धाम्ना प्रियꣳ सदऽआसीद
घृताच्यसि ध्रुवा नाम्ना सेदं प्रियेण धाम्ना प्रियꣳ सदऽआसीद
प्रियेण धाम्ना प्रियꣳ सदऽआसीद। ध्रुवाऽअसदन्नृतस्य योनौ ता
विष्णो पाहि पाहि यज्ञं पाहि यज्ञपतिं पाहि मां यज्ञन्यम् ॥६॥
अग्ने वाजजिद् वाजं त्वा सरिष्यन्तं वाजजितꣳ सम्मार्ज्मि ।
नमो देवेभ्यः स्वधा पितृभ्यः सुयमे मे भूयास्तम् ॥७॥
अस्कन्नमद्य देवेभ्यऽआज्यꣳ संभ्रियासमङ्घ्रिणा विष्णो मा त्वावक्रमिषं
वसुमतीमग्ने ते च्छायामुपस्थेषं विष्णो स्थानमसीतऽइन्द्रो
वीर्यमकृणोदूर्ध्वोऽध्वरऽआस्थात् ॥८॥
अग्ने वेर्होत्रं वेर्दूत्यमवतां त्वां द्यावापृथिवीऽअव त्वं द्यावापृथिवी
स्विष्टकृद्देवेभ्यऽइन्द्रऽआज्येन हविषा भूत्स्वाहा सं ज्योतिषा ज्योतिः॥९॥
मयीदमिन्द्रऽइन्द्रियं दधात्वस्मान् रायो मघवानः सचन्ताम् ।
अस्माकꣳ सन्त्वाशिषः सत्या नः सन्त्वाशिषऽउपहूता पृथिवी
मातोप मां पृथिवी माता ह्वयतामग्निराग्नीध्रात् स्वाहा ॥१०॥
उपहूतो द्यौष्पितोप मां द्यौष्पिता ह्वयतामग्निराग्नीध्रात् स्वाहा।
देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्।
प्रतिगृह्णाम्यग्नेष्ट्वास्येन प्राश्नामि ॥११॥
एतं ते देव सवितर्यज्ञं प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे ।
तेन यज्ञमव तेन यज्ञपतिं तेन मामव ॥१२॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं
यज्ञꣳसमिमं दधातु। विश्वे देवासऽइह मादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ ॥१३॥
कएषा तेऽअग्ने समित्तया वर्धस्व चा च प्यायस्व ।
वर्धिषीमहि च वयमा च प्यासिषीमहि ।
रअग्ने वाजजिद्वाजं त्वा ससृवाꣳसं वाजजितꣳसम्मार्ज्मि ॥१४॥
कअग्नीषोमयोरुज्जितिमनूज्जेषं वाजस्य मा प्रसवेन प्रोहामि ।
अग्नीषोमौ तमपनुदतां योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मो
वाजस्यैनं प्रसवेनापोहामि। रइन्द्राग्न्योरुज्जितिमनूज्जेषं वाजस्य
मा प्रसवेन प्रोहामि। इन्द्राग्नी तमपनुदतां योऽस्मान् द्वेष्टि यं
च वयं द्विष्मो वाजस्यैनं प्रसवेनापोहामि ॥१५॥
कवसुभ्यस्त्वा रुद्रेभ्यस्त्वादित्येभ्यस्त्वा संजानाथां द्यावापृथिवी
मित्रावरुणौ त्वा वृष्ट्यावताम्।. रव्यन्तु वयोक्तꣳरिहाणा मरुतां
पृषतीर्गच्छ वशा पृश्निर्भूत्वा दिवं गच्छ ततो नो वृष्टिमावह।
चक्षुष्पाऽअग्नेऽसि चक्षुर्मे पाहि ॥१६॥
यं परिधिं पर्यधत्थाऽअग्ने देवपणिभिर्गुह्यमानः। तं तऽएतमनु
जोषं भराम्येष नेत्त्वदपचेतयाताऽअग्नेः प्रियं पाथोऽपीतम् ॥१७॥
सꣳस्रवभागा स्थेषा बृहन्तः प्रस्तरेष्ठाः परिधेयाश्च देवाः। इमां वाचमभि
विश्वे गृणन्तऽआसद्यास्मिन् बर्हिषि मादयध्वꣳस्वाहा वाट् ॥१८॥
घृताची स्थो धुर्यौ पातꣳ सुम्ने स्थः सुम्ने मा धत्तम्। यज्ञ नमश्च
तऽउप च यज्ञस्य शिवे सन्तिष्ठस्व स्विष्टे मे सन्तिष्ठस्व ॥१९॥
अग्नेऽदब्धायोऽशीतम पाहि मा दिद्योः पाहि प्रसित्यै पाहि दुरिष्ट्यै
पाहि दुरद्मन्याऽअविषं नः पितुं कृणु सुषदा योनौ स्वाहा
वाडग्नये संवेशपतये स्वाहा सरस्वत्यै यशोभगिन्यै स्वाहा ॥२०॥
वेदोऽसि येन त्वं देव वेद देवेभ्यो वेदोऽभवस्तेन मह्यं वेदो भूयाः।
देवा गातुविदो गातुं वित्त्वा गातुमित ।
मनसस्पतऽइमं देव यज्ञꣳस्वाहा वाते धाः ॥२१॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सं बर्हिरङ्क्ताᳬहविषा घृतेन समादित्यैर्वसुभिः सम्मरुद्भिः।
समिन्द्रो विश्वदेवेभिरङ्क्तां दिव्यं नभो गच्छतु यत् स्वाहा ॥२२॥
कस्त्वा विमुञ्चति स त्वा विमुञ्चति कस्मै त्वा विमुञ्चति
तस्मै त्वा विमुञ्चति। पोषाय रक्षसां भागोऽसि ॥२३॥
सं वर्चसा पयसा सन्तनूभिरगन्महि मनसा सᳬशिवेन ।
त्वष्टा सुदत्रो विदधातु रायोऽनुमार्ष्टु तन्वो यद्विलिष्टम् ॥२४॥
[उ]दिवि विष्णुर्व्यक्रᳬस्त जागतेन च्छन्दसा ततो निर्भक्तो
योऽस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मो[क]ऽन्तरिक्षे विष्णुर्व्यक्रᳬस्त त्रैष्टुभेन
च्छन्दसा ततो निर्भक्तो योऽस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः [र]पृथिव्यां
विष्णुर्व्यक्रᳬस्त गायत्रेण च्छन्दसा ततो निर्भक्तो योऽस्मान्द्वेष्टि यं
च वयं द्विष्मोऽस्मादन्नादस्यै प्रतिष्ठायाऽअगन्म स्वः सं ज्योतिषाभूम॥२५॥
स्वयंभूरसि श्रेष्ठो रश्मिर्वर्चोदाऽअसि वर्चो मे देहि ।
सूर्यस्यावृतमन्वावर्ते ॥२६॥
[क]अग्ने गृहपते सुगृहपतिस्त्वयाऽग्नेऽहं गृहपतिना भूयासᳬसुगृहपतिस्त्वं
मयाऽग्ने गृहपतिना भूयाः। [र]अस्थूरि णौ गार्हपत्यानि सन्तु शतᳬहिमाः
सूर्यस्यावृतमन्वावर्ते ॥२७॥
अग्ने व्रतपते व्रतमचारिषं तदशकं तन्मेऽराधीदमहं
यऽएवाऽस्मि सोऽस्मि ॥२८॥
अग्नये कव्यवाहनाय स्वाहा सोमाय पितृमते स्वाहा ।
अपहताऽअसुरा रक्षाᳬसि वेदिषदः ॥२९॥
ये रूपाणि प्रतिमुञ्चमानाऽअसुराः सन्तः स्वधया चरन्ति ।
परापुरो निपुरो ये भरन्त्यग्निष्टाँल्लोकात् प्रणुदात्यस्मात् ॥३०॥
अत्र पितरो मादयध्वं यथाभागमावृषायध्वम् ।
अमीमदन्त पितरो यथाभागमावृषायिषत ॥३१॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कनमो॑ वः पितरो॒ रसा॑य॒ नमो॑ वः पितर॒: शोषा॑य॒ नमो॑ वः
पितरो जी॒वाय॒ नमो॑ वः पितरः स्व॒धायै॒ नमो॑ वः पितरो घो॒राय॒
नमो॑ वः पितरो म॒न्यवे॒ ग्नमो॑ वः पितर॒: पित॑रो॒ नमो॑ वो गृ॒हान्नः
पितरो दत्त स॒तो वः पितरो देष्मै॒तद्वः पितरो॒ वासः ॥३२॥
आध॑त्त पितरो॒ गर्भं॑ कुमा॒रं पुष्क॑रस्रजम्। यथे॒ह पुरु॒षोऽस॑त्॥३३॥
ऊर्जं॒ वह॑न्तीर॒मृतं॑ घृ॒तं पयः की॒लालं॑ परि॒स्रुत॑म् ।
स्व॒धा स्थ त॒र्पय॑त मे पि॒तॄन् ॥३४॥

इति द्वितीयोऽध्यायः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ तृतीयोऽध्यायः

—:०:—

ऋषिः—विरूप आङ्गिरसः १। वसुश्रुतः २। भरद्वाजः ३, १३। प्रजापतिः ४, ५, ९, १०, ४४, ४५। सर्पराज्ञी कद्रूः ६-८। गोतमः ११, ५१, ५२। विरूपः १२। देववातभरतौ १४। वामदेवः १५, ३६, ३७। अवत्सारः १६-१९। याज्ञवल्क्यः २०, २१। वैश्वामित्रो मधुच्छन्दाः २२-२४। सुबन्धुः २५, २६। श्रुतबन्धुः २७। विप्रबन्धुः २८। मेधातिथिः २९। सत्यधृतिर्वारुणिः ३०-३३। मधुच्छन्दाः ३४। विश्वामित्रः ३५। आसुरिः ३८-४१। शँयुः ४२। शँयुर्बार्हस्पत्यः ४३। आगस्त्यः ४६, ४७। और्णवाभः ४८-५०। बन्धुः ५३-५९। वसिष्ठः ६०-६१। नारायणः ६२, ६३॥

देवता—अग्निः १-४, ६-८, ११, १२, १४-१९, २२-२७, ३६, ३८-४०, ४७। अग्निवायुसूर्याः ५। अग्निसूर्यौ ९। अग्निः[क], सूर्यः[र] १०। इन्द्राग्नी १३। आपः २०। विश्वेदेवाः २१। बृहस्पतिः २८, २९। ब्रह्मणस्पतिः ३०। आदित्यः ३१-३३। इन्द्रः ३४, ५०-५२। सविता ३५। प्रजापतिः ३७। वास्तुपतिरग्निः ४१, ४२। वास्तुपतिः ४३। मरुतः ४४, ४५। इन्द्रमारुतौ ४६। यज्ञः ४८, ४९। मनः ५३-५५। सोमः ५६। रुद्रः ५७-६३॥

छन्दः—गायत्री १, २, ४, ८, १६, २९, ४४, ५६। निचृद्गायत्री ३, ६, ११, १२, ३०, ३२, ३५, ३६, ५५। दैवीबृहती[क], निचृद्बृहती[र] ५। विराड्गायत्री ७, २३, २४, २७, २८, ३१, ३३, ५४। पङ्क्तिः[क], याजुषीपङ्क्तिः[र] ९। गायत्री[क], भुरिग्गायत्री[र] १०। विराट्त्रिष्टुप् १३। निचृदनुष्टुप् १४, ४०, ५७। भुरिक्त्रिष्टुप् १५। त्रिष्टुप् १७। निचृद्ब्राह्मीपङ्क्तिः १८। जगती १९। भुरिग्बृहती २०, २५, ३९। उष्णिक् २१, ६२। भुरिगासुरीगायत्री[क], गायत्री[र] २२। स्वराड्बृहती २६। पथ्याबृहती ३४। ब्राह्म्युष्णिक् ३७। अनुष्टुप् ३८, ४२, ४९। आर्षीपङ्क्तिः ४१। भुरिग्जगती ४३, ६३। स्वराडनुष्टुप् ४५। भुरिक्पङ्क्तिः ४६। विराडनुष्टुप् ४७। ब्राह्म्यनुष्टुप् ४८। भुरिगनुष्टुप् ५०। विराट्पङ्क्तिः ५१, ५२, ५८। अतिपादनिचृद्गायत्री ५३। स्वराड्गायत्री ५९। विराड्ब्राह्मीत्रिष्टुप् ६०। पङ्क्तिः ६१॥

स्वरः—षड्जः १-४, ६-८, १०-१२, १६, २२-२४, २७-३३, ३५, ३६, ४४, ५३-५६, ५९। मध्यमः ५, २०, २५, २६, ३४, ३९। पञ्चमः ९, १८, ४१, ४६, ५१, ५२, ५८, ६१। धैवतः १३, १५, १७, ६०। गान्धारः १४, ३८, ४०, ४२, ४५, ४७-५०, ५७। निषादः १९, ४३, ६३। ऋषभः २१, ३७, ६२॥

सुमिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्। आस्मिन् हुव्या जुहोतन ॥१॥

सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन। अग्नये जातवेदसे ॥२॥

तं त्वा सुमिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्द्धयामसि। बृहच्छोचा यविष्ठ्य ॥३॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उप त्वाग्ने हविष्मतीर्घृताचीर्यन्तु हर्यत। जुषस्व समिधो मम ॥४॥

[क]भूर्भुवः स्वः [र]द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा ।

तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे ॥५॥

आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन् मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः ॥६॥

अन्तश्चरति रोचनास्य प्राणादपानती। व्यख्यन् महिषो दिवम् ॥७॥

त्रिꣳशद्धाम विराजति वाक् पतङ्गाय धीयते। प्रति वस्तोरह द्युभिः ॥८॥

[क]अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा।

अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा।

[र]ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ॥९॥

[क]सजूर्देवेन सवित्रा सजू रात्र्येन्द्रवत्या। जुषाणोऽअग्निर्वेतु स्वाहा।

[र]सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या। जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा ॥१०॥

उपप्रयन्तोऽअध्वरं मन्त्रं वोचेमाग्नये। आरेऽअस्मे च शृण्वते ॥११॥

अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम्। अपाꣳरेताꣳसि जिन्वति ॥१२॥

उभा वामिन्द्राग्नीऽआहुवध्याऽउभा राधसः सह मादयध्यै ।

उभा दाताराविषाꣳरयीणामुभा वाजस्य सातये हुवे वाम् ॥१३॥

अयं ते योनिर्ऋत्वियो यतो जातोऽअरोचथाः ।

तं जानन्नग्नऽआरोहाथा नो वर्द्धया रयिम् ॥१४॥

अयमिह प्रथमो धायि धातृभिर्होता यजिष्ठोऽअध्वरेष्वीड्यः ।

यमप्नवानो भृगवो विरुरुचुर्वनेषु चित्रं विभ्वं विशेविशे ॥१५॥

अस्य प्रत्नामनु द्युतꣳशुक्रं दुदुह्रेऽअह्रयः। पयः सहस्रसामृषिम् ॥१६॥

तनूपाऽअग्नेऽसि तन्वं मे पाह्यायुर्दाऽअग्नेऽस्यायुर्मे देहि वर्चोदाऽ

अग्नेऽसि वर्चो मे देहि। अग्ने यन्मे तन्वाऽऊनं तन्मऽआपृण ॥१७॥

इन्धानास्त्वा शतꣳहिमा द्युमन्तꣳसमिधीमहि। वयस्वन्तो वयस्कृतꣳ

सहस्वन्तः सहस्कृतम्। अग्ने सपत्नदम्भनमदब्धासोऽअदाभ्यम्।

चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय ॥१८॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सं त्वमग्ने सूर्यस्य वर्चसागथाः समृषीणाᳬस्तुतेन। सं प्रियेण
धाम्ना समहमायुषा सं वर्चसा सं प्रजया सᳬरायस्पोषेण ग्मिषीय ॥१९॥
अन्ध स्थान्धो वो भक्षीय मह स्थ महो वो भक्षीयोर्ज स्थोर्जं वो
भक्षीय रायस्पोष स्थ रायस्पोषं वो भक्षीय ॥२०॥
रेवती रमध्वमस्मिन्योनावस्मिन् गोष्ठेऽस्मिँल्लोकेऽस्मिन् क्षये।
इहैव स्त मापगात ॥२१॥
सᳬहितासि विश्वरूप्यूर्जा माविश गौपत्येन ।
उप त्वाग्ने दिवेदिवे दोषावस्तर्धिया वयम्। नमो भरन्तऽएमसि ॥२२॥
राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिविम्। वर्द्धमानᳬस्वे दमे ॥२३॥
स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव। सचस्वा नः स्वस्तये ॥२४॥
अग्ने त्वं नोऽअन्तमऽउत त्राता शिवो भवा वरूथ्यः ।
वसुरग्निर्वसुश्रवाऽअच्छा नक्षि द्युमत्तमᳬरयिं दाः ॥२५॥
तं त्वा शोचिष्ठ दीदिवः सुम्नाय नूनमीमहे सखिभ्यः ।
स नो बोधि श्रुधी हवमुरुष्या णोऽअघायतः समस्मात् ॥२६॥
इडऽएह्यदितऽएहि काम्याऽएत। मयि वः कामधरणं भूयात् ॥२७॥
सोमानᳬस्वरणं कृणुहि ब्रह्मणस्पते। कक्षीवन्तं यऽऔशिजः ॥२८॥
यो रेवान् योऽअमीवहा वसुवित्पुष्टिवर्द्धनः। स नः सिषक्तु यस्तुरः ॥२९॥
मा नः शᳬसोऽअररुषो धूर्तिः प्रणङ् मर्त्यस्य। रक्षा णो ब्रह्मणस्पते ॥३०॥
महि त्रीणामवोऽस्तु द्युक्षं मित्रस्यार्यम्णः। दुराधर्षं वरुणस्य ॥३१॥
नहि तेषाममा चन नाध्वसु वारणेषु। ईशे रिपुरघशᳬसः ॥३२॥
ते हि पुत्रासोऽअदितेः प्र जीवसे मर्त्याय। ज्योतिर्यच्छन्त्यजस्रम् ॥३३॥
कदा चन स्तरीरसि नेन्द्र सश्चसि दाशुषे ।
उपोपेन्नु मघवन् भूयऽइन्नु ते दानं देवस्य पृच्यते ॥३४॥
तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् ॥३५॥
परि ते दूडभो रथोऽस्माँ२॥ऽअश्नोतु विश्वतः। येन रक्षसि दाशुषः ॥३६॥
भूर्भुवः स्वः सुप्रजाः प्रजाभिः स्याᳬसुवीरो वीरैः सुपोषः पोषैः।
नर्य प्रजां मे पाहि शᳬस्य पशून् मे पाह्यथर्य पितुं मे पाहि ॥३७॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगन्म विश्ववेदसमस्मभ्यं वसुवित्तमम् ।
अग्ने सम्राडभि द्युम्नमभि सहऽआयच्छस्व ॥३८॥
अयमग्निर्गृहपतिर्गार्हपत्यः प्रजाया वसुवित्तमः ।
अग्ने गृहपतेऽभि द्युम्नमभि सहऽआयच्छस्व ॥३९॥
अयमग्निः पुरीष्यो रयिमान् पुष्टिवर्धनः ।
अग्ने पुरीष्याभि द्युम्नमभि सहऽआयच्छस्व ॥४०॥
गृहा मा बिभीत मा वेपध्वमूर्जं बिभ्रतऽएमसि ।
ऊर्जं बिभ्रद्वः सुमनाः सुमेधा गृहानैमि मनसा मोदमानः ॥४१॥
येषामध्येति प्रवसन् येषु सौमनसो बहुः ।
गृहानुपह्वयामहे ते नो जानन्तु जानतः ॥४२॥
उपहूताऽइह गावऽउपहूताऽअजावयः। अथोऽअन्नस्य कीलालऽउपहूतो
गृहेषु नः। क्षेमाय वः शान्त्यै प्रपद्ये शिवꣳशग्मꣳशंयोःशंयोः॥४३॥
प्रघासिनो हवामहे मरुतश्च रिशादसः। करम्भेण सजोषसः॥४४॥
यद् ग्रामे यदरण्ये यत् सभायां यदिन्द्रिये ।
यदेनश्चकृमा वयमिदं तदवयजामहे स्वाहा ॥४५॥
मो षू णऽइन्द्रात्र पृत्सु देवैरस्ति हि ष्मा ते शुष्मिन्नवयाः ।
महश्चिद्यस्य मीढुषो यव्या हविष्मतो मरुतो वन्दते गीः ॥४६॥
अक्रन् कर्म कर्मकृतः सह वाचा मयोभुवा ।
देवेभ्यः कर्म कृत्वास्तं प्रेत सचाभुवः ॥४७॥
अवभृथ निचुम्पुण निचेरुरसि निचुम्पुणः ।
अव देवैर्देवकृतमेनोऽयासिषमव मर्त्यैर्मर्त्यकृतं पुरुराव्णो देव रिषस्पाहि॥४८॥
पूर्णा दर्वि परा पत सुपूर्णा पुनरापत ।
वस्नेव विक्रीणावहाऽइषमूर्जꣳशतक्रतो ॥४९॥
देहि मे ददामि ते नि मे धेहि नि ते दधे ।
निहारं च हरासि मे निहारं निहराणि ते स्वाहा॥५०॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रियाऽअधूषत ।
अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजा न्विन्द्र ते हरी ॥५१॥
सुसन्दृशं त्वा वयं मघवन् वन्दिषीमहि ।
प्र नूनं पूर्णबन्धुर स्तुतो यासि वशाँ२॥ऽअनु योजा न्विन्द्र ते हरी ॥५२॥
मनो न्वाह्वामहे नाराशꣳसेन स्तोमेन। पितृणां च मन्मभिः ॥५३॥
आ नऽएतु मनः पुनः क्रत्वे दक्षाय जीवसे। ज्योक् च सूर्यं दृशे ॥५४॥
पुनर्नः पितरो मनो ददातु दैव्यो जनः। जीवं व्रातꣳसचेमहि ॥५५॥
वयꣳसोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि ॥५६॥
एष ते रुद्र भागः सह स्वस्राम्बिकया तं जुषस्व स्वाहैष ते
रुद्र भागऽआखुस्ते पशुः ॥५७॥
अव रुद्रमदीमह्यव देवं त्र्यम्बकम् ।
यथा नो वस्यसस्करद्यथा नः श्रेयसस्करद्यथा नो व्यवसाययात् ॥५८॥
भेषजमसि भेषजं गवेऽश्वाय पुरुषाय भेषजम्। सुखं मेषाय मेष्यै ॥५९॥
त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ।
त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पतिवेदनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामुतः ॥६०॥
एतत्ते रुद्रावसं तेन परो मूजवतोऽतीहि ।
अवततधन्वा पिनाकावसः कृत्तिवासाऽअहिꣳसन्नः शिवोऽतीहि॥६१॥
त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम् ।
यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषम् ॥६२॥
शिवो नामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्तेऽअस्तु मा मा हिꣳसीः।
निवर्त्तयाम्यायुषेऽन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय ॥६३॥

इति तृतियोऽध्यायः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ चतुर्थोऽध्यायः

—:o:—

ऋषिः—प्रजापतिः १-७। आत्रेयः ८। आङ्गिरसः ९-१५। वत्सः १६-३६। गोतमः ३७॥

देवता—अबोषध्यौ १। आपः २, १२, १३। मेघः ३। परमात्मा ४। यज्ञः ५, ६, १०, २४, २६, ३७। अग्न्यब्बृहस्पतयः ७। ईश्वरः ८। विद्वान् ९, २७। अग्निः ११, १४-१७, २८, २९, ३२। वाग्विद्युतौ १८-२३। सविता २५। वरुणः ३०, ३१। सूर्यविद्वांसौ ३३। यजमानः ३४। सूर्यः ३५, ३६॥

छन्दः—विराड्ब्राह्मीजगती १। स्वराड्ब्राह्मीत्रिष्टुप् २। भुरिगार्चीत्रिष्टुप् ३। निचृद्ब्राह्मीपङ्क्तिः ४, १९। निचृदार्ष्यनुष्टुप् ५, ६, २९, ३२। पङ्क्तिः[क], आर्षीबृहती[र] ७। आर्ष्यनुष्टुप् ८। आर्षीपङ्क्तिः ९। निचृदार्षीजगती[क], साम्नीत्रिष्टुप्[र] १०। स्वराड्ब्राह्म्यनुष्टुप्[क], आर्ष्युष्णिक्[र] ११। भुरिग्ब्राह्म्यनुष्टुप् १२। भुरिगार्षीबृहती १३। स्वराडार्ष्युष्णिक् १४। ब्राह्मीबृहती १५। भुरिगार्षीपङ्क्तिः १६। आर्चीत्रिष्टुप् १७। स्वराडार्षीबृहती १८। साम्नीजगती[क], भुरिगार्ष्युष्णिक्[र] २०। विराडार्षीबृहती २१। ब्राह्मीपङ्क्तिः २२। आस्तारपङ्क्तिः २३। ब्राह्मीजगती[क], याजुषी-पङ्क्तिः[र] २४। भुरिक्शक्वरी[क], भुरिगार्षीगायत्री[र] २५। भुरिग्ब्राह्मीपङ्क्तिः २६, २७। साम्नी-बृहती[क], साम्न्युष्णिक्[र] २८। स्वराड्याजुषीत्रिष्टुप्[क], आर्षीत्रिष्टुप्[र] ३०। विराडार्षीत्रिष्टुप् ३१। निचृदार्षीगायत्री[क], याजुषीजगती[र] ३३। भुरिगार्चीगायत्री[क], भुरिगार्चीबृहती[र], विराडार्च्यनुष्टुप्[उ] ३४। निचृदार्षीजगती ३५। विराड्ब्राह्मीबृहती ३६। निचृदार्षीत्रिष्टुप् ३७॥

स्वरः—निषादः १, ३५। धैवतः २, ३, १७, ३०, ३१, ३७। पञ्चमः ४, ९, १६, १९, २२, २३, २६, २७। गान्धारः ५, ६, ८, १२, २९, ३२। पञ्चमः[क], मध्यमः[र] ७। निषादः[क], धैवतः[र] १०। गान्धारः[क], ऋषभः[र] ११। मध्यमः १३, १५, १८, २१, ३६। ऋषभः १४। निषादः[क], ऋषभः[र] २०। निषादः[क], पञ्चमः[र] २४। धैवतः[क] षड्जः[र] २५। मध्यमः[क] ऋषभः[र] २८। षड्जः[क], निषादः[र] ३३। षड्जः[क], मध्यमः[र], गान्धारः[उ] ३४॥

एदमगन्म देवयजनं पृथिव्या यत्र देवासोऽअजुषन्त विश्वे।
ऋक्सामाभ्याꣳसन्तरन्तो यजुर्भी रायस्पोषेण समिषा मदेम।
इमाऽआपः शमु मे सन्तु देवीरोषधे त्रायस्व स्वधिते मैनꣳहिꣳसीः॥१॥
आपोऽअस्मान् मातरः शुन्धयन्तु घृतेन नो घृतप्वः पुनन्तु।
विश्वꣳहि रिप्रं प्रवहन्ति देवीरुदिदाभ्यः शुचिरा पूतऽएमि।
दीक्षातपसोस्तनूरसि तां त्वा शिवाꣳशग्मां परिदधे भद्रं वर्णं पुष्यन्॥२॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महीनां पयोऽसि वर्चोदाऽअसि वर्चो मे देहि ।
वृत्रस्यासि कनीनकश्चक्षुर्दाऽअसि चक्षुर्मे देहि ॥३॥
चित्पतिर्मा पुनातु वाक्पतिर्मा पुनातु देवो मा सविता
पुनात्वच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः ।
तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम् ॥४॥
आ वो देवासऽईमहे वामं प्रयत्यध्वरे ।
आ वो देवासऽआशिषो यज्ञियासो हवामहे ॥५॥
स्वाहा यज्ञं मनसः स्वाहोरोरन्तरिक्षात् स्वाहा
द्यावापृथिवीभ्याꣳस्वाहा वातादारभे स्वाहा ॥६॥
[क]आकूत्यै प्रयुजेऽग्नये स्वाहा मेधायै मनसेऽग्नये स्वाहा दीक्षायै
तपसेऽग्नये स्वाहा सरस्वत्यै पूष्णेऽग्नये स्वाहा । [र]आपो देवीर्बृहतीर्विश्व-
शम्भुवो द्यावापृथिवीऽउरोऽअन्तरिक्ष । बृहस्पतये हविषा विधेम स्वाहा ॥७॥
विश्वो देवस्य नेतुर्मर्तो वुरीत सख्यम् ।
विश्वो रायऽइषुध्यति द्युम्नं वृणीत पुष्यसे स्वाहा ॥८॥
ऋक्सामयोः शिल्पे स्थस्ते वामारभे ते मा पातमास्य यज्ञस्योदृचः ।
शर्मासि शर्म मे यच्छ नमस्तेऽअस्तु मा मा हिꣳसीः ॥९॥
[क]ऊर्गस्याङ्गिरस्यूर्णम्रदाऽऊर्जं मयि धेहि । सोमस्य नीविरसि
विष्णोः शर्मासि शर्म यजमानस्येन्द्रस्य योनिरसि सुसस्याः कृषीस्कृधि ।
[र]उच्छ्रयस्व वनस्पतऽऊर्ध्वो मा पाह्यꣳहसऽआस्य यज्ञस्योदृचः ॥१०॥
[क]व्रतं कृणुत व्रतं कृणुताग्निर्ब्रह्माग्निर्यज्ञो वनस्पतिर्यज्ञियः ।
दैवीं धियं मनामहे सुमृडीकामभिष्टये वर्चोधां यज्ञवाहसꣳसुतीर्था
नोऽअसद्वशे । [र]ये देवा मनोजाता मनोयुजो दक्षक्रतवस्ते नोऽवन्तु
ते नः पान्तु तेभ्यः स्वाहा ॥११॥
श्वात्राः पीता भवत यूयमापोऽअस्माकमन्तरुदरे सुशेवाः ।
ताऽअस्मभ्यमयक्ष्माऽअनमीवाऽअनागसः स्वदन्तु देवीरमृताऽऋतावृधः ॥१२॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इयं ते यज्ञिया तनूरपो मुञ्चामि न प्रजाम् ।
अꣳहोमुचः स्वाहाकृताः पृथिवीमाविशत पृथिव्या सम्भव ॥१३॥
अग्ने त्वꣳ सु जागृहि वयꣳ सु मन्दिषीमहि ।
रक्षा णोऽअप्रयुच्छन् प्रबुधे नः पुनस्कृधि ॥१४॥
पुनर्मनः पुनरायुर्मऽआगन्पुनः प्राणः पुनरात्मा मऽआगन्पुनश्चक्षुः पुनः
श्रोत्रं मऽआगन्। वैश्वानरोऽअदब्धस्तनूपाऽअग्निर्नः पातु दुरितादवद्यात् ॥१५॥
त्वमग्ने व्रतपाऽअसि देवऽआ मर्त्येष्वा। त्वं यज्ञेष्वीड्यः ।
रास्वेयत्सोमा भूयो भर देवो नः सविता वसोर्दाता वस्वदात् ॥१६॥
एषा ते शुक्र तनूरेतद्वर्चस्तया सम्भव भ्राजङ्गच्छ ।
जूरसि धृता मनसा जुष्टा विष्णवे ॥१७॥
तस्यास्ते सत्यसवसः प्रसवे तन्वो यन्त्रमशीय स्वाहा ।
शुक्रमसि चन्द्रमस्यमृतमसि वैश्वदेवमसि ॥१८॥
चिदसि मनासि धीरसि दक्षिणासि क्षत्रियासि
यज्ञियास्यदितिरस्युभयतः शीर्ष्णी। सा नः सुप्राची
सुप्रतीच्येधि मित्रस्त्वा पदि बध्नीतां पूषाऽध्वनस्पात्विन्द्रायाध्यक्षाय ॥१९॥
[क]अनु त्वा माता मन्यतामनु पिताऽनु भ्राता सगर्भ्योऽनु
सखा सयूथ्यः। [ग]सा देवि देवमच्छेहीन्द्राय सोमꣳरुद्रस्त्वावर्त्तयतु
स्वस्ति सोमसखा पुनरेहि ॥२०॥
वस्व्यस्यदितिरस्यादित्यासि रुद्रासि चन्द्रासि ।
बृहस्पतिष्ट्वा सुम्ने रम्णातु रुद्रो वसुभिराचके ॥२१॥
अदित्यास्त्वा मूर्द्धन्नाजिघर्म्मि देवयजने पृथिव्याऽइडायास्पदमसि
घृतवत् स्वाहा। अस्मे रमस्वास्मे ते बन्धुस्त्वे रायो मे रायो मा
वयꣳ रायस्पोषेण वियौष्म तोतो रायः ॥२२॥
समख्ये देव्या धिया सं दक्षिणयोरुचक्षसा ।
मा मऽआयुः प्रमोषीर्मोऽअहं तव वीरं विदेय तव देवि सन्दृशि ॥२३॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कएष ते गायत्रो भागऽइति मे सोमाय ब्रूतादेष ते त्रैष्टुभो
भागऽइति मे सोमाय ब्रूतादेष ते जागतो भागऽइति मे
सोमाय ब्रूताच्छन्दोनामानाᳬसाम्राज्यङ्गच्छेति मे सोमाय
ब्रूतादास्माकोऽसि शुक्रस्ते रग्रह्यो विचितस्त्वा विचिन्वन्तु ॥२४॥
कअभि त्यं देवᳬसवितारमोण्योः कविक्रतुमर्चामि सत्यसवᳬ
रत्नधामभि प्रियं मतिं कविम्। ऊर्ध्वा यस्यामतिर्भाऽ
अदिद्युतत्सवीमनि हिरण्यपाणिरमिमीत रसुक्रतुः कृपा स्वः।
प्रजाभ्यस्त्वा प्रजास्त्वाऽनुप्राणन्तु प्रजास्त्वमनुप्राणिहि ॥२५॥
शुक्रं त्वा शुक्रेण क्रीणामि चन्द्रं चन्द्रेणामृतममृतेन ।
सग्मे ते गोरस्मे ते चन्द्राणि तपसस्तनूरसि प्रजापतेर्वर्णः
परमेण पशुना क्रीयसे सहस्रपोषं पुषेयम् ॥२६॥
मित्रो नऽएहि सुमित्रधऽइन्द्रस्योरुमाविश दक्षिणमुशन्नुशन्तᳬस्योनः
स्योनम्। स्वान भ्राजाङ्घारे बम्भारे हस्त सुहस्त कृशानवेते वः
सोमक्रयणास्तान्रक्षध्वं मा वो दभन् ॥२७॥
कपरि माग्ने दुश्चरिताद् बाधस्वा मा सुचरिते भज ।
रउदायुषा स्वायुषोदस्थाममृताँ२॥ऽअनु ॥२८॥
प्रति पन्थामपद्महि स्वस्तिगामनेहसम् ।
येन विश्वाः परि द्विषो वृणक्ति विन्दते वसु ॥२९॥
कअदित्यास्त्वगस्यदित्यै सदऽआसीद ।
रअस्तभ्नाद् द्यां वृषभोऽअन्तरिक्षममिमीत वरिमाणम्पृथिव्याः।
आसीदद्विश्वा भुवनानि सम्राड् विश्वेत्तानि वरुणस्य व्रतानि ॥३०॥
वनेषु व्यन्तरिक्षं ततान वाजमर्वत्सु पयऽउस्रियासु ।
हृत्सु क्रतुं वरुणो विक्ष्वग्निं दिवि सूर्यमदधात् सोममद्रौ ॥३१॥
सूर्यस्य चक्षुरारोहाग्नेरक्षणः कनीनकम् ।
यत्रैतशेभिरीयसे भ्राजमानो विपश्चिता ॥३२॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[क]उस्रावेतं धूर्षाहौ युज्येथामनश्रूऽअवीरहणौ ब्रह्मचोदनौ ।
[र]स्वस्ति यजमानस्य गृहान् गच्छतम् ॥३३॥
[क]भद्रो मेऽसि प्रच्यवस्व भुवस्पते विश्वान्यभि धामानि। [र]मा त्वा
परिपरिणो विदन्मा त्वा परिपन्थिनो विदन्मा त्वा वृकाऽअघायवो
विदन्। [उ]श्येनो भूत्वा परापत यजमानस्य गृहान् गच्छ तन्नौ सँस्कृतम् ॥३४॥
नमो मित्रस्य वरुणस्य चक्षसे महो देवाय तदृतꣳसपर्यत ।
दूरेदृशे देवजाताय केतवे दिवस्पुत्राय सूर्याय शꣳसत ॥३५॥
वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनी स्थो वरुणस्यऽ
ऋतसदन्यसि वरुणस्यऽऋतसदनमसि वरुणस्यऽऋतसदनमासीद ॥३६॥
या ते धामानि हविषा यजन्ति ता ते विश्वा परिभूरस्तु यज्ञम् ।
गयस्फानः प्रतरणः सुवीरोऽवीरहा प्रचरा सोम दुर्यान् ॥३७॥

इति चतुर्थोऽध्यायः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ पञ्चमोऽध्यायः

—:o:—

ऋषिः—गोतमः १-१४। मेधातिथिः १५। वसिष्ठः १६, १७। औतथ्यो दीर्घतमा १८-२९। मधुच्छन्दाः ३०-३५। आगस्त्यः ३६-४३॥

देवता—विष्णुः १, १५-२१, ३८, ४१। विष्णुर्यज्ञः २। यज्ञः ३, १३, २२, २३, २५-२८, ४३। अग्निः ४, ६, ८, ९, ३१-३७, ४०, ४२। विद्युत् ५। सोमः ७। वाक् १०-१२। सविता १४। सूर्यविद्वांसौ २४। ईश्वरसभाध्यक्षौ २९, ३०। सोमसवितारौ ३९॥

छन्दः—स्वराड्ब्राह्मीबृहती १, ३४। आर्षीगायत्री [क], आर्चीत्रिष्टुप् [र] २। आर्षीपङ्क्तिः ३। आर्षीत्रिष्टुप् ४। आर्ष्युष्णिक् [क], भुरिगार्षीपङ्क्तिः [र] ५। विराड्ब्राह्मीपङ्क्तिः ६। आर्षीबृहती [क], आर्षीजगती [र] ७। विराडार्षीबृहती [क], निचृदार्षीबृहती [र,ग] ८। भुरिगार्षीगायत्री [१], भुरिग्ब्राह्मीबृहती [२], निचृद्ब्राह्मीजगती [३], याजुष्यनुष्टुप् [४] ९। ब्राह्म्युष्णिक् १०। निचृद् ब्राह्मीत्रिष्टुप् ११, ४०। भुरिग्ब्राह्मीपङ्क्तिः १२। भुरिगार्ष्यनुष्टुप् १३, २४, ३८, ४१। स्वराडार्षीजगती १४। भुरिगार्षीगायत्री १५। स्वराडार्षीत्रिष्टुप् १६, १८। स्वराड्ब्राह्मीत्रिष्टुप् १७, ३२, ४२। निचृदार्षीजगती १९। विराडार्षीत्रिष्टुप् २०। भुरिगार्चीपङ्क्तिः २१। साम्नीपङ्क्तिः[क], भुरिगार्षीबृहती [र] २२। याजुषीबृहती [ग], आसुरीगायत्री [क], ब्राह्म्यनुष्टुप् [ख], स्वराड्ब्राह्म्युष्णिक् [र] २३। ब्राह्मीबृहती [क], आर्षीपङ्क्तिः[र] २५। निचृदार्षीपङ्क्तिः[क], निचृदार्षीत्रिष्टुप् [र] २६। ब्राह्मीजगती २७। आर्षीजगती २८। अनुष्टुप् २९। आर्च्युष्णिक् ३०। विराडार्ष्यनुष्टुप् ३१। ब्राह्मीपङ्क्तिः ३३। विराड्ब्राह्मीबृहती ३५। निचृदार्चीत्रिष्टुप् ३६। भुरिगार्षीत्रिष्टुप् ३७। साम्नीबृहती [क], निचृदार्षीपङ्क्तिः[र] ३९। ब्राह्मीत्रिष्टुप् ४३॥

स्वरः—मध्यमः १, ८, ३४, ३५। षड्जः[क], धैवतः[र] २। पञ्चमः ३, ६, १२, २१, ३३। धैवतः ४, ११, १६-१८, २०, ३२, ३६, ३७, ४०, ४२, ४३। ऋषभः[क], पञ्चमः[र] ५। मध्यमः[क], निषादः[र] ७। षड्जः[१], मध्यमः[२], निषादः[३], गान्धारः[४] ९। ऋषभः १०, ३०। गान्धारः १३, २४, २९, ३१, ३८, ४१। निषादः १४, १९, २७, २८। षड्जः १५। पञ्चमः[क], मध्यमः[र] २२। मध्यमः[ग], षड्जः[क], गान्धारः[ख], ऋषभः[र] २३। मध्यमः[क], पञ्चमः[र] २५। पञ्चमः[क], धैवतः[र] २६। मध्यमः[क], पञ्चमः[र] ३९॥

अग्नेस्तनूरसि विष्णवे त्वा सोमस्य तनूरसि विष्णवे
त्वाऽतिथेरातिथ्यमसि विष्णवे त्वा श्येनाय त्वा सोमभृते
विष्णवे त्वाऽग्नये त्वा रायस्पोषदे विष्णवे त्वा ॥१॥

[क] अग्नेर्जनित्रमसि वृषणौ स्थऽउर्वश्यस्यायुरसि पुरूरवाऽअसि ।
[र] गायत्रेण त्वा छन्दसा मन्थामि त्रैष्टुभेन त्वा छन्दसा मन्थामि
जागतेन त्वा छन्दसा मन्थामि ॥२॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भवतं नः समनसौ सचेतसावरेपसौ ।
मा यज्ञꣳहिꣳसिष्टं मा यज्ञपतिं जातवेदसौ शिवौ भवतमद्य नः ॥३॥
अग्नावग्निश्चरति प्रविष्टऽऋषीणां पुत्रोऽअभिशस्तिपावा ।
स नः स्योनः सुयजा यजेह देवेभ्यो हव्यꣳसदमप्रयुच्छन्त्स्वाहा ॥४॥
[क]आपतये त्वा परिपतये गृह्णामि तनूनप्त्रे शाक्वराय शक्वनऽओजिष्ठाय ।
[ख]अनाधृष्टमस्यनाधृष्यं देवानामोजोऽनभिशस्त्यभिशस्तिपाऽ
अनभिशस्तेन्यमञ्जसा सत्यमुपगेषꣳस्विते मा धाः ॥५॥
अग्ने व्रतपास्त्वे व्रतपा या तव तनूरियꣳसा मयि यो मम तनूरेषा सा त्वयि ।
सह नौ व्रतपते व्रतान्यनु मे दीक्षां दीक्षापतिर्मन्यतामनु तपस्तपस्पतिः ॥६॥
[क]अꣳशुरꣳशुष्टे देव सोमाप्यायतामिन्द्रायैकधनविदे ।
आ तुभ्यमिन्द्रः प्यायतामा त्वमिन्द्राय प्यायस्व ।
[ख]आप्याययास्मान्त्सखीन्त्सन्न्या मेधया स्वस्ति ते देव सोम सुत्यामशीय ।
एष्टा रायः प्रेषे भगायऽऋतमृतवादिभ्यो नमो द्यावापृथिवीभ्याम् ॥७॥
[क]या तेऽअग्नेऽयःशया तनूर्वर्षिष्ठा गह्वरेष्ठा ।
उग्रं वचोऽअपावधीत्त्वेषं वचोऽअपावधीत् स्वाहा ।
[ख]या तेऽअग्ने रजःशया तनूर्वर्षिष्ठा गह्वरेष्ठा ।
उग्रं वचोऽअपावधीत्त्वेषं वचोऽअपावधीत् स्वाहा ।
[ग]या तेऽअग्ने हरिशया तनूर्वर्षिष्ठा गह्वरेष्ठा ।
उग्रं वचोऽअपावधीत्त्वेषं वचोऽअपावधीत् स्वाहा ॥८॥
[१]तप्तायनी मेऽसि वित्तायनी मेऽस्यवतान्मा नाथितादवतान्मा
व्यथितात् । [२]विदेदग्निर्नभो नामाग्नेऽअङ्गिरऽआयुना नाम्नेहि
योऽस्यां पृथिव्यामसि यत्तेऽनाधृष्टं नाम यज्ञियं तेन त्वा दधे
विदेदग्निर्नभो नामाग्नेऽअङ्गिरऽआयुना [३]नाम्नेहि यो द्वितीयस्यां
पृथिव्यामसि यत्तेऽनाधृष्टं नाम यज्ञियं तेन त्वा दधे विदेदग्निर्नभो
नामाग्नेऽअङ्गिरऽआयुना नाम्नेहि यस्तृतीयस्यां पृथिव्यामसि
यत्तेऽनाधृष्टं नाम यज्ञियं तेन त्वा दधे । [४]अनु त्वा देववीतये ॥९॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिꣳहीरसि सपत्नसाही देवेभ्यः कल्पस्व सिꣳहीरसि सपत्नसाही
देवेभ्यः शुन्धस्व सिꣳहीरसि सपत्नसाही देवेभ्यः शुम्भस्व ॥१०॥
इन्द्रघोषस्त्वा वसुभिः पुरस्तात्पातु प्रचेतास्त्वा रुद्रैः पश्चात्पातु
मनोजवास्त्वा पितृभिर्दक्षिणतः पातु विश्वकर्मा त्वादित्यैरुत्तरतः
पात्विदमहं तप्तं वार्बहिर्धा यज्ञान्निःसृजामि ॥११॥
सिꣳहीरसि स्वाहा सिꣳहीरस्यादित्यवनिः स्वाहा सिꣳहीरसि
ब्रह्मवनिः क्षत्रवनिः स्वाहा सिꣳहीरसि सुप्रजावनी रायस्पोषवनिः
स्वाहा सिꣳहीरस्यावह देवान्यजमानाय स्वाहा भूतेभ्यस्त्वा ॥१२॥
ध्रुवोऽसि पृथिवीं दृꣳह ध्रुवक्षिदस्यन्तरिक्षं दृꣳहाच्युतक्षिदसि
दिवं दृꣳहाग्नेः पुरीषमसि ॥१३॥
युञ्जते मनऽउत युञ्जते धियो विप्रा विप्रस्य बृहतो विपश्चितः ।
वि होत्रा दधे वयुनाविदेकऽइन्मही देवस्य सवितुः परिष्टुतिः स्वाहा ॥१४॥
इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा ॥१५॥
इरावती धेनुमती हि भूतꣳसूयवसिनी मनवे दशस्या ।
व्यस्कभ्ना रोदसी विष्णवेते दाधर्थ पृथिवीमभितो मयूखैः स्वाहा ॥१६॥
देवश्रुतौ देवेष्वाघोषतं प्राची प्रेतमध्वरं कल्पयन्तीऽऊर्ध्वं यज्ञं नयतं
मा जिह्वरतम्। स्वं गोष्ठमावदतं देवी दुर्येऽआयुर्मा निर्वादिष्टं प्रजां
मा निर्वादिष्टमत्र रमेथां वर्ष्मन् पृथिव्याः ॥१७॥
विष्णोर्नु कं वीर्याणि प्रवोचं यः पार्थिवानि विममे रजाꣳसि ।
योऽअस्कभायदुत्तरꣳसधस्थं विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायो विष्णवे त्वा ॥१८॥
दिवो वा विष्णऽउत वा पृथिव्या महो वा विष्णऽउरोरन्तरिक्षात् ।
उभा हि हस्ता वसुना पृणस्वा प्रयच्छ दक्षिणादोत सव्याद्विष्णवे त्वा ॥१९॥
प्र तद्विष्णु स्तवते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः।
यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा ॥२०॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि।
वैष्णवमसि विष्णवे त्वा ॥२१॥

कदेवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्।
ग आददे नार्यसीदमहꣳरक्षसां ग्रीवाऽअपि कृन्तामि ।
बृहन्नसि बृहद्रवा बृहतीमिन्द्राय वाचं वद ॥२२॥

उरक्षोहणं वलगहनं कवैष्णवीमिदमहं तं वलगमुत्किरामि खयं मे निष्ट्यो
यममात्यो निचखानेदमहं तं वलगमुत्किरामि यं मे समानो यमसमानो
निचखानेदमहं तं वलगमुत्किरामि गयं मे सबन्धुर्यमसबन्धुर्निचखानेदमहं
तं वलगमुत्किरामि यं मे सजातो यमसजातो निचखानोत्कृत्याङ्किरामि ॥२३॥

स्वराडसि सपत्नहा सत्रराडस्यभिमातिहा
जनराडसि रक्षोहा सर्वराडस्यमित्रहा ॥२४॥

करक्षोहणो वो वलगहनः प्रोक्षामि वैष्णवान्रक्षोहणो वो
वलगहनोऽवनयामि वैष्णवान्रक्षोहणो वो वलगहनोऽवस्तृणामि
वैष्णवान्रक्षोहणौ गवां वलगहनाऽउपदधामि वैष्णवी रक्षोहणौ
वां वलगहनौ पर्यूहामि वैष्णवी वैष्णवमसि वैष्णवा स्थ ॥२५॥

कदेवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्।
आददे नार्यसीदमहꣳरक्षसां ग्रीवाऽअपि कृन्तामि। गयवोऽसि
यवयास्मद् द्वेषो यवयारातीर्दिवे त्वाऽन्तरिक्षाय त्वा पृथिव्यै त्वा
शुन्धन्ताँल्लोकाः पितृषदनाः पितृषदनमसि ॥२६॥

उद्दिवꣳस्तभानान्तरिक्षं पृण दृꣳहस्व पृथिव्यां द्युतानस्त्वा मारुतो
मिनोतु मित्रावरुणौ ध्रुवेण धर्मणा। ब्रह्मवनि त्वा क्षत्रवनि
रायस्पोषवनि पर्यूहामि। ब्रह्म दृꣳह क्षत्रं दृꣳहायुर्दृꣳह प्रजां दृꣳह॥२७॥

ध्रुवासि ध्रुवोऽयं यजमानोऽस्मिन्नायतने प्रजया पशुभिर्भूयात्।
घृतेन द्यावापृथिवी पूर्येथामिन्द्रस्य छदिरसि विश्वजनस्य छाया॥२८॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परि त्वा गिर्वणो गिरऽइमा भवन्तु विश्वतः ।
वृद्धायुमनु वृद्धयो जुष्टा भवन्तु जुष्टयः ॥२९॥
इन्द्रस्य स्यूरसीन्द्रस्य ध्रुवोऽसि। ऐन्द्रमसि वैश्वदेवमसि ॥३०॥
विभूरसि प्रवाहणो वह्निरसि हव्यवाहनः ।
श्वात्रोऽसि प्रचेतास्तुथोऽसि विश्ववेदाः ॥३१॥
उशिगसि कविरङ्घारिरसि बम्भारिरवस्यूरसि दुवस्वाञ्छुन्ध्यूरसि
मार्जालीयः सम्राडसि कृशानुः परिषद्योऽसि पवमानो नभोऽसि
प्रतक्वा मृष्टोऽसि हव्यसूदनऽऋतधामासि स्वर्ज्योतिः ॥३२॥
समुद्रोऽसि विश्वव्यचाऽअजोऽस्येकपादहिरसि बुध्न्यो वागस्यैन्द्रमसि
सदोऽस्यृतस्य द्वारौ मा मा सन्ताप्तमध्वनामध्वपते प्र मा तिर
स्वस्ति मेऽस्मिन् पथि देवयाने भूयात् ॥३३॥
मित्रस्य मा चक्षुषेक्षध्वमग्नयः सगराः सगरा स्थ सगरेण
नाम्ना रौद्रेणानीकेन पात माग्नयः पिपृत माग्नयो गोपायत
मा नमो वोऽस्तु मा मा हिꣳसिष्ट ॥३४॥
ज्योतिरसि विश्वरूपं विश्वेषां देवानाꣳसमित्। त्वꣳसोम
तनूकृद्भ्यो द्वेषोभ्योऽन्यकृतेभ्यऽउरु यन्तासि वरूथꣳस्वाहा
जुषाणोऽअप्तुराज्यस्य वेतु स्वाहा ॥३५॥
अग्ने नय सुपथा रायेऽअस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नमऽउक्तिं विधेम ॥३६॥
अयं नोऽअग्निर्वरिवस्कृणोत्वयं मृधः पुरऽएतु प्रभिन्दन्।
अयं वाजाञ्जयतु वाजसातावयꣳशत्रूञ्जयतु जर्हृषाणः स्वाहा ॥३७॥
उरु विष्णो विक्रमस्वोरु क्षयाय नस्कृधि ।
घृतं घृतयोने पिब प्रप्र यज्ञपतिं तिर स्वाहा ॥३८॥
कदेव सवितरेष ते सोमस्तꣳरक्षस्व मा त्वा दभन् ।
एतत्त्वं देव सोम देवो देवाँ२॥ऽउपागाऽइदमहं मनुष्यान्त्सह
रायस्पोषेण स्वाहा निर्वरुणस्य पाशान्मुच्ये ॥३९॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्ने व्रतपास्त्वे व्रतपा या तव तनूर्मय्यभूदेषा सा त्वयि
यो मम तनूस्त्वय्यभूदियꣳसा मयि। यथायथं नौ व्रतपते
व्रतान्यनु मे दीक्षां दीक्षापतिरमꣳस्तानु तपस्तपस्पतिः ॥४०॥
उरु विष्णो विक्रमस्वोरु क्षयाय नस्कृधि ।
घृतं घृतयोने पिब प्रप्र यज्ञपतिं तिर स्वाहा ॥४१॥
अत्यन्याँ२॥ऽअगां नान्याँ२॥ऽउपागामर्वाक् त्वा परेभ्योऽविदं परोऽ
वरेभ्यः। तं त्वा जुषामहे देव वनस्पते देवयज्यायै देवास्त्वा देवयज्यायै
जुषन्तां विष्णवे त्वा। ओषधे त्रायस्व स्वधिते मैनꣳहिꣳसीः॥४२॥
द्यां मा लेखीरन्तरिक्षं मा हिꣳसीः पृथिव्या सम्भव ।
अयꣳहि त्वा स्वधितिस्तेतिजानः प्रणिनाय महते सौभगाय ।
अतस्त्वं देव वनस्पते शतवल्शो विरोह सहस्रवल्शा वि वयꣳरुहेम॥४३॥

इति पञ्चमोऽध्यायः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ षष्ठोऽध्यायः

—:०:—

ऋषिः—आगस्त्यः १। शाकल्यः २। दीर्घतमा ३, ६, ८, ९, १७-२३। मेधातिथिः ४, ५, ७, १०-१६, २४-२८। मधुच्छन्दाः २९-३६। गोतमः ३७॥

देवता—सविता १, २, ३०। विष्णुः ३, ४, ५। विद्वांसः ६, १२, १४, १५। त्वष्टा ७, २०। बृहस्पतिः ८। सविता, अश्विनौ, पूषा ९। आपः १०, १३, १७, २७। वातः ११। द्यावापृथिव्यौ १६, ३५। अग्निः १८, २९। विश्वेदेवाः १९। सेनापतिः २१। वरुणः २२। अप्-यज्ञ-सूर्याः २३। लिङ्गोक्ताः २४। सोमः २५, २६, ३३, ३६। प्रजा २८। प्रजासभ्यराजानः ३१। सभापतीराजा ३२। यज्ञः ३४। इन्द्रः ३७॥

छन्दः—निचृत्पङ्क्तिः[उ], आसुर्युष्णिक्[क], भुरिगार्ष्युष्णिक्[र] १। निचृद्गायत्री[क], स्वराट्पङ्क्तिः[र] २। आर्च्युष्णिक्[उ], भुरिगार्च्युष्णिक्[क], निचृत्प्राजापत्याबृहती[र] आसुरीगायत्री[ख] ३। निचृदार्षीगायत्री ४। गायत्री ५। आर्ष्युष्णिक्[क], भुरिक्साम्नीबृहती ६। निचृदार्षीबृहती ७। प्राजापत्यानुष्टुप्[क], भुरिक्प्राजापत्याबृहती[र] ८। प्राजापत्याबृहती[क], पङ्क्तिः[र], याजुषीत्रिष्टुप्[उ] ९। प्राजापत्याबृहती[क], विराडार्चीबृहती[र] १०। भुरिगार्ष्युष्णिक्[क,र], स्वराडार्च्युष्णिक्[उ] ११। भुरिक्प्राजापत्यानुष्टुप् भुरिगासुर्यनुष्टुप्[र] १२। निचृदार्ष्यनुष्टुप् १३, २३, २८। भुरिगार्षीजगती १४। भुरिगार्चीत्रिष्टुप्[क], आर्षीपङ्क्तिः[र] १५। ब्राह्म्युष्णिक्[क,र] १६। निचृद्ब्राह्म्यनुष्टुप् १७। प्राजापत्यानुष्टुप्[क] दैवीपङ्क्तिः[र], आर्चीपङ्क्तिः[उ] १८। ब्राह्म्यनुष्टुप् १९। ब्राह्मीत्रिष्टुप् २०। साम्नी[क], ब्राह्मी[ख], भुरिगार्षी[र], आर्ष्युष्णिक्[र] २१। स्वराडब्राह्म्युष्णिक्[क], त्रिपाद्विराड्गायत्री[र] २२। आर्षीत्रिष्टुप्[क], त्रिपाद्गायत्री[र] २४। विराडार्ष्यनुष्टुप् २५। भुरिग्गायत्री[क], आर्षीत्रिष्टुप्[र] २६। निचृदार्षीत्रिष्टुप् २७। भुरिगार्षीगायत्री २९। स्वराडार्षीपङ्क्तिः[क], निचृदार्ष्यनुष्टुप्[र] ३०। ब्राह्म्युष्णिक्[क], आर्ष्युष्णिक्[र] ३१। पञ्चपान्मध्येज्योतिष्मतीजगती ३२। भुरिगार्षीबृहती ३३। स्वराडार्षीबृहती ३४। भुरिगार्ष्यनुष्टुप् ३५, ३७। उष्णिक् ३६॥

स्वरः—पञ्चमः[उ], ऋषभः[क,र] १। षड्जः,[क] पञ्चमः[र] २। ऋषभः[उ,क], मध्यमः[र] षड्जः[ख] ३। षड्जः ४, ५, २९। ऋषभः[क], मध्यमः[र] ६। मध्यमः ७, १०, ३३, ३४। गान्धारः[क], मध्यमः[र] ८। मध्यमः[क], पञ्चमः[र], धैवतः[उ] ९। ऋषभः ११, १६, २१, ३१, ३६। गान्धारः १२, १३, १७, १९, २३, २५, २८, ३५, ३७। निषादः १४, ३२। धैवतः[क] पञ्चमः[र] १५। गान्धारः[क], पञ्चमः[र,उ] १८। धैवतः २०, २७। ऋषभः[क], षड्जः[र] २२। धैवतः[क] षड्जः[र] २४। षड्जः[क], धैवतः[र] २६। पञ्चमः[क], गान्धारः[र] ३०॥

[उ]दे॒वस्य॑ त्वा सवि॒तुः प्र॑स॒वे॒ऽश्विनो॑र्बा॒हुभ्या॑म् पू॒ष्णो हस्ता॑भ्याम् ।
आद॑दे॒ नार्य॑सी॒दम॒हꣳ रक्ष॑सां ग्री॒वाऽअपि॑ कृन्तामि ।
[क]यवो॑ऽसि य॒वया॒स्मद् द्वेषो॑ य॒वयारा॑तीर् [र]दि॒वे त्वा॒ऽन्तरि॑क्षाय
त्वा पृथि॒व्यै त्वा॒ शुन्ध॑न्तां॒ल्लो॒काः पि॑तृ॒षद॑नाः पि॑तृ॒षद॑नमसि ॥१॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[क]अग्रेणीरसि स्वावेशऽउन्नेतॄणामेतस्य वित्तादधि त्वा स्थास्यति
[ख]देवस्त्वा सविता मध्वानक्तु सुपिप्पलाभ्यस्त्वौषधीभ्यः ।
द्यामग्रेणास्पृक्षऽआन्तरिक्षं मध्येनाप्राः पृथिवीमुपरेणादृꣳहीः ॥२॥
[ग]या ते धामान्युश्मसि गमध्यै यत्र गावो भूरिशृङ्गाऽअयासः ।
[क]अत्राह तदुरुगायस्य विष्णोः परमं पदमवभारि भूरि ।
[ख]ब्रह्मवनि त्वा क्षत्रवनि रायस्पोषवनि पर्यूहामि ।
ब्रह्म दृꣳह क्षत्रं दृꣳहायुर्दृꣳह प्रजां दृꣳह ॥३॥
विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे । इन्द्रस्य युज्यः सखा ॥४॥
तद्विष्णोः परमं पदꣳसदा पश्यन्ति सूरयः । दिवीव चक्षुराततम् ॥५॥
[क]परिवीरसि परि त्वा दैवीर्विशो व्ययन्तां परीमं यजमानꣳरायो
मनुष्याणाम् । [ख]दिवः सूनुरस्येष ते पृथिव्याँल्लोकऽआरण्यस्ते पशुः ॥६॥
उपावीरस्युप देवान्दैवीर्विशः प्रागुरुशिजो वह्नितमान् ।
देव त्वष्टर्वसु रम हव्या ते स्वदन्ताम् ॥७॥
[क]रेवती रमध्वं बृहस्पते धारया वसूनि ।
[ख]ऋतस्य त्वा देवहविः पाशेन प्रतिमुञ्चामि धर्षा मानुषः ॥८॥
[क]देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ।
[ख]अग्नीषोमाभ्यां जुष्टं नियुनज्मि । अद्भ्यस्त्वौषधीभ्योऽनु त्वा
माता मन्यतामनु पितानु भ्राता सगर्भ्योऽनु सखा सयूथ्यः ।
अग्नीषोमाभ्यां त्वा जुष्टं प्रोक्षामि ॥९॥
[क]अपां पेरुरस्यापो देवीः स्वदन्तु स्वात्तं चित्सद्देवहविः ।
[ख]सं ते प्राणो वातेन गच्छताꣳ समङ्गानि यजत्रैः सं यज्ञपतिराशिषा ॥१०॥
[क]घृतेनाक्तौ पशूँस्त्रायेथाꣳ रेवति यजमाने प्रियं धाऽआविश ।
[ख]उरोरन्तरिक्षात्सजूर्देवेन वातेनास्य हविषस्त्मना यज समस्य तन्वा भव ।
[ग]वर्षो वर्षीयसि यज्ञे यज्ञपतिं धाः स्वाहा देवेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा ॥११॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माहिर्भूर्मा पृदाकुर्नमस्तऽआतानानर्वा प्रेहि ।
[ग]घृतस्य कुल्याऽउपऽऋतस्य पथ्याऽअनु ॥१२॥
देवीरापः शुद्धा वोढ्वं सुपरिविष्टा देवेषु सुपरिविष्टा
वयं परिवेष्टारो भूयास्म ॥१३॥
वाचं ते शुन्धामि प्राणं ते शुन्धामि चक्षुस्ते शुन्धामि
श्रोत्रं ते शुन्धामि नाभिं ते शुन्धामि मेढ्रं ते शुन्धामि
पायुं ते शुन्धामि चरित्राँस्ते शुन्धामि ॥१४॥
[क]मनस्तऽआप्यायतां वाक् तऽआप्यायतां प्राणस्तऽआप्यायतां
चक्षुस्तऽआप्यायताꣳ श्रोत्रं तऽआप्यायताम्। [ग]यत्ते क्रूरं यदास्थितं
तत्तऽआप्यायतां निष्ट्यायतां तत्ते शुध्यतु शमहोभ्यः ।
ओषधे त्रायस्व स्वधिते मैनꣳहिꣳसीः ॥१५॥
[क]रक्षसां भागोऽसि निरस्तꣳरक्षऽइदमहꣳरक्षोऽभितिष्ठामीदमहꣳ
रक्षोऽवबाधऽइदमहꣳरक्षोऽधमं तमो नयामि। [ग]घृतेन द्यावापृथिवी
प्रोर्णुवाथां वायो वे स्तोकानामग्निराज्यस्य वेतु स्वाहा
स्वाहाकृतेऽऊर्ध्वनभसं मारुतं गच्छतम् ॥१६॥
इदमापः प्रवहतावद्यं च मलं च यत् ।
यच्चाभिदुद्रोहानृतं यच्च शेपेऽअभीरुणम् ।
आपो मा तस्मादेनसः पवमानश्च मुञ्चतु ॥१७॥
[क]सं ते मनो मनसा सं प्राणः प्राणेन गच्छताम् ।
[ग]रेडस्यग्निष्ट्वा श्रीणात्वापस्त्वा समरिणन्वातस्य त्वा ध्राज्यै
पूष्णो रꣳह्याऽऊष्मणो व्यथिषत्प्रयुतं द्वेषः ॥१८॥
घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि
स्वाहा। दिशः प्रदिशऽआदिशो विदिशऽउद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा ॥१९॥
ऐन्द्रः प्राणोऽअङ्गेऽअङ्गे निदीध्यदैन्द्रऽउदानोऽअङ्गेऽअङ्गे निधीतः ।
देव त्वष्टर्भूरि ते सꣳसमेतु सलक्ष्मा यद्विषुरूपं भवाति ।
देवत्रा यन्तमवसे सखायोऽनु त्वा माता पितरो मदन्तु ॥२०॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[क]समुद्रं गच्छ स्वाहाऽन्तरिक्षं गच्छ स्वाहा [ख]देवꣳसवितारं
गच्छ स्वाहा मित्रावरुणौ गच्छ स्वाहाऽहोरात्रे गच्छ स्वाहा
छन्दाꣳसि गच्छ स्वाहा द्यावापृथिवी गच्छ स्वाहा [ग]यज्ञं गच्छ
स्वाहा सोमं गच्छ स्वाहा दिव्यं नभो गच्छ स्वाहाग्निं वैश्वानरं
गच्छ स्वाहा [घ]मनो मे हार्दि यच्छ दिवं ते धूमो गच्छतु
स्वर्ज्योतिः पृथिवीं भस्मनापृण स्वाहा ॥२१॥

[क]मापो मौषधीर्हिꣳसीर्धाम्नोधाम्नो राजँस्ततो वरुण नो मुञ्च।
यदाहुरघ्न्याऽइति वरुणेति शपामहे ततो वरुण नो मुञ्च ।
[ग]सुमित्रिया नऽआपऽओषधयः सन्तु दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु
योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः ॥२२॥

हविष्मतीरिमाऽआपो हविष्माँ२॥ऽआविवासति ।
हविष्मान्देवोऽअध्वरो हविष्माँ२॥ऽअस्तु सूर्यः ॥२३॥

[क]अग्नेर्वोऽपन्नगृहस्य सदसि सादयामीन्द्राग्न्योर्भागधेयी स्थ
मित्रावरुणयोर्भागधेयी स्थ विश्वेषां देवानां भागधेयी स्थ ।
[ग]अमूर्याऽउप सूर्ये याभिर्वा सूर्यः सह । ता नो हिन्वन्त्वध्वरम् ॥२४॥

हृदे त्वा मनसे त्वा दिवे त्वा सूर्याय त्वा ।
ऊर्ध्वमिममध्वरं दिवि देवेषु होत्रा यच्छ ॥२५॥

[क]सोम राजन्विश्वास्त्वं प्रजाऽउपावरोह विश्वास्त्वां प्रजाऽउपावरोहन्तु।
[ग]शृणोत्वग्निः समिधा हवं मे शृण्वन्त्वापो धिषणाश्च देवीः।
श्रोता ग्रावाणो विदुषो न यज्ञꣳशृणोतु देवः सविता हवं मे स्वाहा ॥२६॥

देवीरापोऽअपान्नपाद्यो वऽऊर्मिर्हविष्यऽइन्द्रियावान् मदिन्तमः ।
तं देवेभ्यो देवत्रा दत्त शुक्रपेभ्यो येषां भाग स्थ स्वाहा ॥२७॥

कार्षिरसि समुद्रस्य त्वा क्षित्याऽउन्नयामि ।
समापोऽअद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः ॥२८॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यमग्ने पृत्सु मर्त्यमवा वाजेषु यं जुनाः । स यन्ता शश्वतीरिषः स्वाहा ॥२९॥
[क]देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ।
आददे रावासि गभीरमिममध्वरं कृधीन्द्राय सुषूतमम् ।
[र]उत्तमेन पविनोर्जस्वन्तं मधुमन्तं पयस्वन्तं निग्राभ्या स्थ
देवश्रुतस्तर्पयत मा ॥३०॥
[क]मनो मे तर्पयत वाचं मे तर्पयत प्राणं मे तर्पयत चक्षुर्मे मे
तर्पयत श्रोत्रं मे तर्पयतात्मानं मे तर्पयत [र]प्रजां मे तर्पयत
पशून्मे तर्पयत गणान्मे तर्पयत गणा मे मा वितृषन् ॥३१॥
इन्द्राय त्वा वसुमते रुद्रवतऽइन्द्राय त्वादित्यवतऽइन्द्राय
त्वाभिमातिघ्ने। श्येनाय त्वा सोमभृतेऽग्नये त्वा रायस्पोषदे ॥३२॥
यत्ते सोम दिवि ज्योतिर्यत्पृथिव्यां यदुरावन्तरिक्षे ।
तेनास्मै यजमानायोरु राये कृध्यधि दात्रे वोचः ॥३३॥
श्वात्रा स्थ वृत्रतुरो राधोगूर्त्ताऽअमृतस्य पत्नीः ।
ता देवीर्देवत्रेमं यज्ञं नयतोपहूताः सोमस्य पिबत ॥३४॥
मा भेर्मा संविक्थाऽऊर्जं धत्स्व धिषणे वीड्वी सती
वीडयेथामूर्जं दधाथाम्। पाप्मा हतो न सोमः ॥३५॥
प्रागपागुदगधराक्सर्वतस्त्वा दिशऽआधावन्तु ।
अम्ब निष्पर समरीर्विदाम् ॥३६॥
त्वमङ्ग प्रशꣳसिषो देवः शविष्ठ मर्त्यम् ।
न त्वदन्यो मघवन्नस्ति मर्डितेन्द्र ब्रवीमि ते वचः ॥३७॥

इति षष्ठोऽध्यायः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ सप्तमोऽध्यायः

—:०:—

ऋषिः—गोतमः १-६। वसिष्ठः ७। मधुच्छन्दाः ८, ३३। गृत्समदः ९, ३४। त्रिसदस्युः १०। मेधातिथिः ११। वत्सारः काश्यपः १२-२३। भरद्वाजः २४, २५, ३९। देवश्रवाः २६-३०। विश्वामित्रः ३१, ३५-३८। त्रिशोकः ३२। वत्सः ४०। प्रस्कण्वः ४१। कुत्सः ४२। आङ्गिरसः ४३-४८॥

देवता—प्राणः १। सोमः २, २१। विद्वांसः ३, ४६। मघवा ४। ईश्वरः ५। योगी ६। वायुः ७। इन्द्रवायू ८। मित्रावरुणौ ९, १०। अश्विनौ ११। विश्वेदेवाः १२-१७, १९, २२-२४, ३२-३४। प्रजापतिः १८, २९, ३०, ३५-३८, ४०, ४४, ४५। यज्ञः २०, २६। वैश्वानरः २५। यज्ञपतिः २७, २८। इन्द्राग्नी ३१। प्रजासेनापतिः ३९। सूर्यः ४१, ४२। अन्तर्यामी जगदीश्वरः ४३। वरुणः ४७। आत्मा ४८॥

छन्दः—निचृदार्ष्युनुष्टुप् १। निचृदार्षीपङ्क्तिः २। विराड्ब्राह्मीजगती ३। आर्ष्युष्णिक् ४, ४८। आर्षीपङ्क्तिः ५। भुरिक्त्रिष्टुप् ६। निचृज्जगती ७। आर्षीगायत्री[क], स्वराडार्षीगायत्री[र] ८। आर्षीगायत्री[क], आसुरीगायत्री[र] ९। ब्राह्मीबृहती १०। ब्राह्म्युष्णिक् ११। निचृदार्षीजगती[क], पङ्क्तिः[र] १२। निचृदार्षीत्रिष्टुप्[क], प्राजापत्यागायत्री[र] १३। विराड्जगती १४। निचृद्ब्राह्म्यनुष्टुप् १५। निचृदार्षीत्रिष्टुप्[क], साम्नीगायत्री[र] १६। स्वराड्ब्राह्मीत्रिष्टुप् १७। निचृत्त्रिष्टुप्[क], प्राजापत्यागायत्री[र] १८। भुरिगार्षीपङ्क्तिः १९। निचृदार्षीजगती २०। स्वराड्ब्राह्मीत्रिष्टुप्[क], याजुषीजगती[र] २१। विराड्ब्राह्मीत्रिष्टुप् २२। अनुष्टुप्[१], प्राजापत्यानुष्टुप्[२], स्वराट्साम्न्यनुष्टुप्[३], भुरिगार्चीगायत्री[४], भुरिक्साम्न्यनुष्टुप्[५] २३। आर्षीत्रिष्टुप् २४, ३१। याजुष्यनुष्टुप्[क], विराडार्षीबृहती[र,ड] २५। स्वराड्ब्राह्मीबृहती २६। आसुर्यनुष्टुप्[१,२,६], आसुर्युष्णिक्[३,७], साम्नीगायत्री[४], आसुरीगायत्री[५] २७। ब्राह्मीबृहती २८। आर्चीपङ्क्तिः[क], भुरिक्साम्नीपङ्क्तिः[र] २९। साम्नीगायत्री[१,३,४,५,९,११], आसुर्यनुष्टुप्[२,६,१०,१२], याजुषीपङ्क्तिः[७,८], आसुर्युष्णिक्[१३] ३०। आर्षीगायत्री[क], आर्च्युष्णिक्[र] ३२। आर्षीगायत्री[क], आर्चीबृहती[र] ३३। आर्षीगायत्री[क], निचृदार्ष्युष्णिक्[र] ३४। आर्षीत्रिष्टुप्[क], आर्ष्युष्णिक्[र] ३५। विराडार्षीत्रिष्टुप्[१], आर्ष्युष्णिक्[२], साम्न्युष्णिक्[३] ३६। निचृदार्षीत्रिष्टुप्[क], प्राजापत्यात्रिष्टुप्[र] ३७, ३८। भुरिक्पङ्क्तिः[क], साम्नीत्रिष्टुप्[र] ३९। आर्षीगायत्री[क], विराडार्षीगायत्री[र] ४०। भुरिगार्षीगायत्री ४१। भुरिगार्षीत्रिष्टुप् ४२-४४, ४६। विराड्जगती ४५। भुरिक्प्राजापत्याजगती[१], स्वराट्प्राजापत्याजगती[२], निचृदार्चीजगती[३], विराडार्चीजगती[४] ४७॥

स्वरः—गान्धारः १, १५। पञ्चमः २, ५, १९, २९। निषादः ३, ७, १४, २०, ४५, ४७। ऋषभः, ४, ११, ४८। धैवतः ६, १७, २२, २४, ३१, ३७, ३८, ४२-४४, ४६। षड्जः ८, ९, ४०, ४१। मध्यमः १०, २६, २८। निषादः[क], पञ्चमः[र] १२। धैवतः[क], षड्जः[र] १३, १६, १८। धैवतः[क], निषादः[र] २१। गान्धारः[१,२,३,५], षड्जः[४] २३। गान्धारः[क], मध्यमः[र,ड] २५। गान्धारः[१,२,६], ऋषभः[३,७], षड्जः[४,५], २७। षड्जः[१,३,४,५,९,११], गान्धारः[२,६,१०,१२]

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पञ्चमः[७-८], ऋषभः[१३] ३०। षड्जः[क], ऋषभः[र] ३२, ३४। षड्जः[क] मध्यमः[र] ३३। धैवतः[क] ऋषभः[र] ३५, ३६। पञ्चमः[क], धैवतः[र] ३९॥

वाचस्पतये पवस्व वृष्णोऽअꣳशुभ्यां गभस्तिपूतः ।
देवो देवेभ्यः पवस्व येषां भागोऽसि ॥१॥
मधुमतीर्नऽइषस्कृधि यत्ते सोमादाभ्यं नाम जागृवि
तस्मै ते सोम सोमाय स्वाहा स्वाहोर्वन्तरिक्षमन्वेमि ॥२॥
स्वाङ्कृतोऽसि विश्वेभ्यऽइन्द्रियेभ्यो दिव्येभ्यः पार्थिवेभ्यो
मनस्त्वाष्टु स्वाहा त्वा सुभव सूर्याय देवेभ्यस्त्वा
मरीचिपेभ्यो देवाꣳशो यस्मै त्वेडे तत्सत्यमुपरिप्रुता भङ्गेन
हतोऽसौ फट् प्राणाय त्वा व्यानाय त्वा ॥३॥
उपयामगृहीतोऽस्यन्तर्यच्छ मघवन् पाहि सोमम् ।
उरुष्य रायऽएषो यजस्व ॥४॥
अन्तस्ते द्यावापृथिवी दधाम्यन्तर्दधाम्युर्वन्तरिक्षम् ।
सजूर्देवेभिरवरैः परैश्चान्तर्यामे मघवन् मादयस्व ॥५॥
स्वाङ्कृतोऽसि विश्वेभ्यऽइन्द्रियेभ्यो दिव्येभ्यः पार्थिवेभ्यो
मनस्त्वाष्टु स्वाहा त्वा सुभव सूर्याय देवेभ्यस्त्वा
मरीचिपेभ्यऽउदानाय त्वा ॥६॥
आ वायो भूष शुचिपाऽउप नः सहस्रं ते नियुतो विश्ववार ।
उपो तेऽअन्धो मद्यमयामि यस्य देव दधिषे पूर्वपेयं वायवे त्वा ॥७॥
[क]इन्द्रवायूऽइमे सुताऽउप प्रयोभिरागतम्। इन्दवो वामुशन्ति हि ।
उपयामगृहीतोऽसि वायवऽइन्द्रवायुभ्यां त्वैष ते योनिः
सजोषोभ्यां त्वा ॥८॥
[क]अयं वां मित्रावरुणा सुतः सोमऽऋतावृधा। ममेदिह श्रुतꣳहवम् ।
[र]उपयामगृहीतोऽसि मित्रावरुणाभ्यां त्वा ॥९॥
राया वयꣳससवाꣳसो मदेम हव्येन देवा यवसेन गावः ।
तां धेनुं मित्रावरुणा युवं नो विश्वाहा धत्तमनपस्फुरन्तीमेष
ते योनिरृतायुभ्यां त्वा ॥१०॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

या वां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती। तया यज्ञं मिमिक्षतम् ।
उपयामगृहीतोऽस्यश्विभ्यां त्वैष ते योनिर्माध्वीभ्यां त्वा ॥११॥
कतं प्रत्नथा पूर्वथा विश्वथेमथा ज्येष्ठतातिं बर्हिषदꣳस्वर्विदम् ।
प्रतीचीनं वृजनं दोहसे धुनिमाशुं जयन्तमनु यासु वर्धसे ।
रउपयामगृहतोऽसि शण्डाय त्वैष ते योनिर्वीरतां पाह्यपमृष्टः
शण्डो देवास्त्वा शुक्रपाः प्रणयन्त्वनाधृष्टासि ॥१२॥
कसुवीरो वीरान् प्रजनयन् परीह्यभि रायस्पोषेण यजमानम् ।
संजग्मानो दिवा पृथिव्या शुक्रःशुक्रशोचिषा निरस्तः
शण्डः रशुक्रस्याधिष्ठानमसि ॥१३॥
अच्छिन्नस्य ते देव सोम सुवीर्यस्य रायस्पोषस्य ददितारः स्याम ।
सा प्रथमा सँस्कृतिर्विश्ववारा स प्रथमो वरुणो मित्रोऽअग्निः ॥१४॥
स प्रथमो बृहस्पतिश्चिकित्वाँस्तस्माऽइन्द्राय सुतमा जुहोत स्वाहा ।
तृम्पन्तु होत्रा मध्वो याः स्विष्टा याः सुप्रीताः सुहुता यत्स्वाहायाडग्नीत् ॥१५॥
कअयं वेनश्चोदयत् पृश्निगर्भा ज्योतिर्जरायू रजसो विमाने ।
इममपाꣳसङ्गमे सूर्यस्य शिशुं न विप्रा मतिभी रिहन्ति ।
रउपयामगृहीतोऽसि मर्काय त्वा ॥१६॥
मनो न येषु हवनेषु तिग्मं विपः शच्या वनुथो द्रवन्ता ।
आ यः शर्याभिस्तुविनृम्णोऽअस्याश्रीणीतादिशं गभस्तावेष
ते योनिः प्रजाः पाह्यपमृष्टो मर्को देवास्त्वा मन्थिपाः
प्रणयन्त्वनाधृष्टासि ॥१७॥
कसुप्रजाः प्रजाः प्रजनयन् परीह्यभि रायस्पोषेण यजमानम् ।
संजग्मानो दिवा पृथिव्या मन्थी मन्थिशोचिषा
निरस्तो मर्को रमन्थिनोऽधिष्ठानमसि ॥१८॥
ये देवासो दिव्येकादश स्थ पृथिव्यामध्येकादश स्थ ।
अप्सुक्षितो महिनैकादश स्थ ते देवासो यज्ञमिमं जुषध्वम् ॥१९॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपयामगृहीतोऽस्याग्रयणोऽसि स्वाग्रयणः। पाहि यज्ञं पाहि यज्ञपतिं विष्णुस्त्वामिन्द्रियेण पातु विष्णुं त्वं पाह्यभि सवनानि पाहि ॥२०॥

[क]सोमः पवते सोमः पवतेऽस्मै ब्रह्मणेऽस्मै क्षत्रायास्मै सुन्वते यजमानाय पवतऽइषऽऊर्जे पवतेऽद्भ्यऽओषधीभ्यः पवते द्यावापृथिवीभ्यां पवते सुभूताय पवते विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यऽ [ग]एष ते योनिर्विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यः ॥२१॥

उपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा बृहद्वते वयस्वतऽउक्थाव्यं गृह्णामि। यत्तऽइन्द्र बृहद्वयस्तस्मै त्वा विष्णवे त्वैष ते योनिरुक्थेभ्यस्त्वा देवेभ्यस्त्वा देवाव्यं यज्ञस्यायुषे गृह्णामि ॥२२॥

[१]मित्रावरुणाभ्यां त्वा देवाव्यं यज्ञस्यायुषे गृह्णामीन्द्राय त्वा देवाव्यं यज्ञस्यायुषे गृह्णामी[२]न्द्राग्निभ्यां त्वा देवाव्यं यज्ञस्यायुषे गृह्णामी[३]न्द्रावरुणाभ्यां त्वा देवाव्यं यज्ञस्यायुषे गृह्णामी[४]न्द्राबृहस्पतिभ्यां त्वा देवाव्यं यज्ञस्यायुषे गृह्णामी[५]न्द्राविष्णुभ्यां त्वा देवाव्यं यज्ञस्यायुषे गृह्णामि ॥२३॥

मूर्द्धानं दिवोऽअरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृतऽआजातमग्निम्। कविꣳसम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः ॥२४॥

[क]उपयामगृहीतोऽसि [ग]ध्रुवोऽसि ध्रुवक्षितिर्ध्रुवाणां ध्रुवतमोऽच्युतानामच्युतक्षित्तमऽएष ते योनिर्वैश्वानराय त्वा। [उ]ध्रुवं ध्रुवेण मनसा वाचा सोममवनयामि। अथा नऽइन्द्रऽइद्विशोऽसपत्नाः समनसस्करत् ॥२५॥

यस्ते द्रप्स स्कन्दति यस्तेऽअꣳशुर्ग्रावच्युतो धिषणयोरुपस्थात्। अध्वर्योर्वा परि वा यः पवित्रात्तं ते जुहोमि मनसा वषट्कृतꣳस्वाहा देवानामुत्क्रमणमसि ॥२६॥

[१]प्राणाय मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व [२]व्यानाय मे वर्चोदा वर्चसे पवस्वो[३]दानाय मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व [४]वाचे मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व [५]क्रतूदक्षाभ्यां मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व [६]श्रोत्राय मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व [७]चक्षुर्भ्यां मे वर्चोदसौ वर्चसे पवेथाम् ॥२७॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्मने मे वर्चोदा वर्चसे पवस्वौजसे मे वर्चोदा
वर्चसे पवस्वायुषे मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व विश्वाभ्यो मे
प्रजाभ्यो वर्चोदसौ वर्चसे पवेथाम् ॥२८॥
[क]कोऽसि कतमोऽसि कस्यासि को नामासि ।
यस्य ते नामामन्महि यं त्वा सोमेनातीतृपाम ।
[ख]भूर्भुवः स्वः सुप्रजाः प्रजाभिः स्याᳬं सुवीरो वीरैः सुपोषः पोषैः ॥२९॥
[१]उपयामगृहीतोऽसि मधवे त्वोपयामगृहीतोऽसि [२]माधवाय त्वोपयाम-
गृहीतोऽसि [३]शुक्राय त्वोपयामगृहीतोऽसि [४]शुचये त्वोपयामगृहीतोऽसि
[५]नभसे त्वोपयामगृहीतोऽसि [६]नभस्याय त्वोपयामगृहीतोऽसीषे [७]त्वोपयाम-
गृहीतोऽस्यूर्जे [८]त्वोपयामगृहीतोऽसि [९]सहसे [१०]त्वोपयामगृहीतोऽसि
सहस्याय [११]त्वोपयामगृहीतोऽसि तपसे [१२]त्वोपयामगृहीतोऽसि तपस्याय
[१३]त्वोपयामगृहीतोऽस्यᳬंहसस्पतये त्वा ॥३०॥
इन्द्राग्नीऽआगतᳬंसुतं गीर्भिर्नभो वरेण्यम्। अस्य पातं धियेषिता।
उपयामगृहीतोऽसीन्द्राग्निभ्यां त्वैष ते योनिरिन्द्राग्निभ्यां त्वा ॥३१॥
[क]आ घा येऽअग्निमिन्धते स्तृणन्ति बर्हिरानुषक्। येषामिन्द्रो युवा सखा।
[ख]उपयामगृहीतोऽस्यग्नीन्द्राभ्यां त्वैष ते योनिरग्नीन्द्राभ्यां त्वा ॥३२॥
[क]ओमासश्चर्षणीधृतो विश्वे देवासऽआगत ।
दाश्वाᳬंसो दाशुषः सुतम्। [ख]उपयामगृहीतोऽसि
विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यऽएष ते योनिर्विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यः ॥३३॥
[क]विश्वे देवासऽआगत शृणुता म इमᳬंहवम् ।
एदं बर्हिर्निषीदत। [ख]उपयामगृहीतोऽसि विश्वेभ्यस्त्वा
देवेभ्यऽएष ते योनिर्विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यः ॥३४॥
[क]इन्द्र मरुत्वऽइह पाहि सोमं यथा शार्यातेऽअपिबः सुतस्य ।
तव प्रणीती तव शूर शर्मन्नाविवासन्ति कवयः सुयज्ञाः। [ख]उपयाम-
गृहीतोऽसीन्द्राय त्वा मरुत्वतऽएष ते योनिरिन्द्राय त्वा मरुत्वते ॥३५॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[१]मरुत्वन्तं वृषभं वावृधानमकवारिं दिव्यꣳशासमिन्द्रम् ।
विश्वासाहमवसे नूतनायोग्रꣳसहोदामिह तꣳहुवेम ।
[२]उपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा मरुत्वतऽएष ते योनिरिन्द्राय त्वा मरुत्वते ।
[३]उपयामगृहीतोऽसि मरुतां त्वौजसे ॥३६॥
[क]सजोषाऽइन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान् ।
जहि शत्रूँ१॥ऽरप मृधो नुदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतो नः ।
[र]उपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा मरुत्वतऽएष ते योनिरिन्द्राय त्वा मरुत्वते ॥३७॥
[क]मरुत्वाँ२॥ऽइन्द्र वृषभो रणाय पिबा सोममनुष्वधं मदाय ।
आसिञ्चस्व जठरे मध्वऽऊर्मिं त्वꣳराजासि प्रतिपत्सुतानाम् ।
[र]उपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा मरुत्वतऽएष ते योनिरिन्द्राय त्वा मरुत्वते ॥३८॥
[क]महाँ२॥ऽइन्द्रो नृवदाचर्षणिप्राऽउत द्विबर्हाऽअमिनः सहोभिः ।
अस्मद्र्यग्वावृधे वीर्यायोरुः पृथुः सुकृतः कर्तृभिर्भूत् ।
[र]उपयामगृहीतोऽसि महेन्द्राय त्वैष ते योनिर्महेन्द्राय त्वा ॥३९॥
[क]महाँ२॥ऽइन्द्रो यऽओजसा पर्जन्यो वृष्टिमाँ२॥ऽइव। स्तोमैर्वत्सस्य वावृधे ।
[र]उपयामगृहीतोऽसि महेन्द्राय त्वैष ते योनिर्महेन्द्राय त्वा ॥४०॥
उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यꣳस्वाहा ॥४१॥
चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः ।
आप्रा द्यावापृथिवीऽअन्तरिक्षꣳसूर्यऽआत्मा जगतस्तस्थुषश्च स्वाहा ॥४२॥
अग्ने नय सुपथा रायेऽअस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नमऽउक्तिं विधेम स्वाहा ॥४३॥
अयं नोऽअग्निर्वरिवस्कृणोत्वयं मृधः पुरऽएतु प्रभिन्दन् ।
अयं वाजाञ्जयतु वाजसातावयꣳशत्रूञ्जयतु जर्हृषाणः स्वाहा ॥४४॥
रूपेण वो रूपमभ्यागां तुथो वो विश्ववेदा विभजतु ।
ऋतस्य पथा प्रेत चन्द्रदक्षिणा वि स्वः पश्य
व्युन्तरिक्षं यतस्व सदस्यैः ॥४५॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्राह्मणमद्य विदेयं पितृमन्तं पैतृमत्यमृषिमार्षेयꣳसुधातुदक्षिणम्।
अस्मद्राता देवत्रा गच्छत प्रदातारमाविशत ॥४६॥
[१]अग्नये त्वा मह्यं वरुणो ददातु सोऽमृतत्वमशीयायुर्दात्रऽएधि
मयो मह्यं प्रतिग्रहीत्रे [२]रुद्राय त्वा मह्यं वरुणो ददातु
सोऽमृतत्वमशीय प्राणो दात्रऽएधि वयो मह्यं प्रतिग्रहीत्रे
[३]बृहस्पतये त्वा मह्यं वरुणो ददातु सोऽमृतत्वमशीय
त्वग्दात्रऽएधि मयो मह्यं प्रतिग्रहीत्रे [४]यमाय त्वा मह्यं वरुणो
ददातु सोऽमृतत्वमशीय हयो दात्रऽएधि वयो मह्यं प्रतिग्रहीत्रे॥४७॥
कोऽदात्कस्माऽअदात्कामोऽदात्कामायादात्।
कामो दाता कामः प्रतिग्रहीता कामैतत्ते॥४८॥

इति सप्तमोऽध्यायः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथाष्टमोऽध्यायः

—:0:—

ऋषिः—आङ्गिरसः १-३। कुत्सः ४, ५। भरद्वाजः ६-१४। अत्रिः १५-२२, २४-३०। अत्रिः[उ], शुनःशेपः[क] २३। गोतमः ३१, ३३, ३५। मेधातिथिः ३२। मधुच्छन्दाः ३४। विवस्वान् ३६, ३७। वैखानसः ३८, ३९। प्रस्कण्वः ४०, ४१। कुसुरुविन्दुः ४२, ४३। शासः ४४-४७। देवाः ४८-५३। वसिष्ठः ५४-६२। कश्यपः ६३॥

देवता—बृहस्पतिस्सोमः १। गृहपतिर्मघवा २। आदित्यो गृहपतिः ३, ४। गृहपतयः ५, ६, १०-१२, १४-१६, १८, २०-२६, ३३-३५, ५३। सविता गृहपतिः ७। विश्वेदेवा गृहपतयः ८, १७, १९। गृहपतयो विश्वेदेवाः ९, १३। दम्पती २७-३२। परमेश्वरः ३६। सम्राड्माण्डलिकौ राजानौ ३७। राजादयो गृहपतयः ३८, ४०। राजादयो गृहस्थाः ३९। सूर्यः ४१। पत्नीः ४२, ४३। इन्द्रः ४४। ईश्वरसभेशौ राजानौ ४५। विश्वकर्मेन्द्रः ४६, ४७। प्रजापतयः ४८, ५०। विश्वेदेवाः प्रजापतयः ४९। प्रजापतयो गृहस्थाः ५१। प्रजापतिः ५२। परमेष्ठी प्रजापतिः ५४। इन्द्रादयः ५५। विश्वेदेवाः गृहस्थाः ५६। विश्वेदेवाः ५७-६१। यज्ञः ६२, ६३॥

छन्दः—आर्चीपङ्क्तिः १। भुरिगार्षीपङ्क्तिः २। निचृदार्षीपङ्क्तिः ३। निचृज्जगती ४। प्राजापत्यानुष्टुप्[क], निचृदार्षीजगती[र] ५। निचृदार्षीत्रिष्टुप् ६, १९। विराड्ब्राह्म्यनुष्टुप् ७। प्राजापत्यागायत्री[क], निचृदार्षीबृहती[र] ८। प्राजापत्यागायत्री[उ], आर्ष्युष्णिक्[क], स्वराडार्षीपङ्क्तिः[र] ९। विराड्ब्राह्मीबृहती १०, ४७। भुरिगार्ष्यनुष्टुप् ११। आर्षीपङ्क्तिः १२, ४३, ५५। निचृत्साम्न्युष्णिक्[१,३,४], साम्न्युष्णिक्[२], प्राजापत्योष्णिक्[५], निचृदार्ष्युष्णिक्[६] १३। विराडार्षीत्रिष्टुप् १४, १६। भुरिगार्षीत्रिष्टुप् १५, ३६। स्वराडार्षीत्रिष्टुप् १७, २०, ६२। आर्षीत्रिष्टुप् १८, २४। स्वराडार्ष्युष्णिक् २१। विराडार्च्युष्णिक्[क], विराडार्चीबृहती[र] २२। याजुष्युष्णिक्[उ], निचृदार्षीत्रिष्टुप्[क], आसुरीगायत्री[र] २३। भुरिगार्षीपङ्क्तिः २५। स्वराडार्षीबृहती २६। भुरिक्प्राजापत्यानुष्टुप्[क], स्वराडार्षीबृहती[र] २७। भुरिक्साम्न्युष्णिक्[उ], प्राजापत्यानुष्टुप्[क] भुरिगासुर्युष्णिक्[र], २८। भुरिगार्ष्यनुष्टुप् २९। आर्षीजगती ३०। आर्षीगायत्री ३१, ३२। आर्ष्यनुष्टुप्[क], आर्ष्युष्णिक्[र] ३३। विराडार्ष्यनुष्टुप्[क], विराडार्ष्युष्णिक्[र] ३४। विराडार्ष्यनुष्टुप्[क], आर्ष्युष्णिक्[र] ३५। साम्नीत्रिष्टुप्[क], विराडार्चीत्रिष्टुप्[र] ३७। भुरिक्त्रिपादनिचृद्गायत्री[उ], स्वराडार्च्यनुष्टुप्[क], भुरिगार्च्यनुष्टुप्[र] ३८। आर्षीगायत्री[उ,क], आर्च्युष्णिक्[र] ३९। आर्षीगायत्री[उ,क], स्वराडार्षीगायत्री[र] ४०। निचृदार्षीगायत्री[क], स्वराडार्षीगायत्री[र] ४१। स्वराड्ब्राह्म्युष्णिक् ४२। निचृदनुष्टुप्[क], स्वराडार्षीगायत्री[र] ४४। भुरिगार्षीत्रिष्टुप्[क], विराडार्ष्यनुष्टुप्[र] ४५। निचृदार्षीत्रिष्टुप्[क], विराडार्ष्यनुष्टुप्[र] ४६। आसुरीत्रिष्टुप्[१], याजुषीजगती[२,४,५], याजुषीत्रिष्टुप्[३], साम्नीबृहती[६] ४८। विराट्प्राजापत्याजगती[क], निचृदार्ष्युष्णिक्[र] ४९। भुरिगार्षीजगती ५०, ५१। निचृदार्षीबृहती ५२। आर्ष्यनुष्टुप्[१], आसुर्युष्णिक्[२], प्राजापत्याबृहती[३], विराट्प्राजापत्यापङ्क्तिः[४] ५३। निचृद्ब्राह्म्युष्णिक् ५४। आर्षीबृहती ५६। निचृद्ब्राह्मीबृहती ५७।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निचृदार्षीजगती ५८। निचृदार्षीजगती[क], विराडार्षीगायत्री[र] ५९। स्वराड्ब्राह्मीत्रिष्टुप् ६०। ब्राह्म्युष्णिक् ६१। स्वराडार्षीगायत्री ६३॥

स्वरः—पञ्चमः १-३, १२, २५, ४३, ५५। निषादः ४, ३०, ५०, ५१, ५८। गान्धारः[क], निषादः[र] ५। धैवतः ६, १४-२०, २४, ३६, ३७, ६०, ६२। गान्धारः ७, ११, २९। षड्जः[क], मध्यमः[र] ८। षड्जः[उ], ऋषभः[क], पञ्चमः[र] ९। मध्यमः १०, २६, ४७, ५२, ५६, ५७। ऋषभः १३, २१, ४२, ५४, ६१। ऋषभः[क], मध्यमः[र] २२। ऋषभः[उ], धैवतः[क], षड्जः[र] २३। गान्धारः[क], मध्यमः[र] २७। ऋषभः[उ,र], गान्धारः[क] २८। षड्जः ३१, ३२, ४०, ४१, ६३। गान्धारः[क], ऋषभः[र] ३३, ३४, ३५। षड्जः[उ], गान्धारः[क,र], ३८। षड्जः[उ,क], ऋषभः[र] ३९। गान्धारः[क], षड्जः[र] ४४। धैवतः[क], गान्धारः[र] ४५, ४६। धैवतः[१,३], निषादः[२,४,५], मध्यमः[६] ४८। निषादः[क], ऋषभः[र], ४९। गान्धारः[१], ऋषभः[२], मध्यमः[३], पञ्चमः[४] ५३। निषादः[क], षड्जः[र] ५९॥

उपयामगृहीतोऽस्यादित्येभ्यस्त्वा ।
विष्णऽउरुगायैष ते सोमस्तꣳरक्षस्व मा त्वा दभन् ॥१॥

कदा चन स्तरीरसि नेन्द्र सश्चसि दाशुषे ।
उपोपेन्नु मघवन्भूयऽइन्नु ते दानं देवस्य पृच्यतऽआदित्येभ्यस्त्वा ॥२॥

कदा चन प्रयुच्छस्युभे निपासि जन्मनी ।
तुरीयादित्य सवनं तऽइन्द्रियमातस्थावमृतं दिव्यादित्येभ्यस्त्वा ॥३॥

यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नमादित्यासो भवता मृडयन्तः ।
आ वोऽर्वाची सुमतिर्ववृत्यादꣳहोश्चिद्या वरिवोवित्तरासदादित्येभ्यस्त्वा॥४॥

[क]विवस्वन्नादित्यैष ते सोमपीथस्तस्मिन् मत्स्व ।
[र]श्रदस्मै नरो वचसे दधातन यदाशीर्दा दम्पती वाममश्नुतः ।
पुमान् पुत्रो जायते विन्दते वस्वधा विश्वाहारपऽएधते गृहे ॥५॥

वाममद्य सवितर्वाममु श्वो दिवेदिवे वाममस्मभ्यꣳसावीः ।
वामस्य हि क्षयस्य देव भूरेरया धिया वामभाजः स्याम ॥६॥

उपयामगृहीतोऽसि सावित्रोऽसि चनोधाश्चनोधाऽअसि चनो मयि धेहि।
जिन्व यज्ञं जिन्व यज्ञपतिं भगाय देवाय त्वा सवित्रे ॥७॥

[क]उपयामगृहीतोऽसि [र]सुशर्मासि सुप्रतिष्ठानो बृहदुक्षाय नमः ।
विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यऽएष ते योनिर्विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यः ॥८॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[३]उपयामगृहीतोऽसि [४क]बृहस्पतिसुतस्य देव सोम तऽइन्दोरिन्द्रियावतः
पत्नीवतो ग्रहाँ२।।ऽऋध्यासम्। [१]अहं परस्तादहमवस्ताद्यदन्तरिक्षं तदु
मे पिताभूत्। अहꣳसूर्यमुभयतो ददर्शाहं देवानां परमं गुहा यत् ।।९।।
अग्ना३।।ऽइ पत्नीवन्त्सजूर्देवेन त्वष्ट्रा सोमं पिब स्वाहा। प्रजापतिर्वृषासि
रेतोधा रेतो मयि धेहि प्रजापतेस्ते वृष्णो रेतोधसो रेतोधामशीय ।।१०।।
उपयामगृहीतोऽसि हरिरसि हारियोजनो हरिभ्यां त्वा ।
हर्योर्धाना स्थ सहसोमाऽइन्द्राय ।।११।।
यस्तेऽअश्वसनिर्भक्षो यो गोसनिस्तस्य तऽइष्टयजुष स्तुतस्तोमस्य
शस्तोक्थस्योपहूतस्योपहूतो भक्षयामि ।।१२।।
[१]देवकृतस्यैनसोऽवयजनमसि [२]मनुष्यकृतस्यैनसोऽवयजनमसि
[३]पितृकृतस्यैनसोऽवयजनमस्यात्मकृतस्यैनसोऽवयजनमस्येनसऽएनसोऽ
वयजनमसि। [५]यच्चाहमेनो विद्वाँश्चकार यच्चाविद्वाँस्तस्य
सर्वस्यैनसोऽवयजनमसि ।।१३।।
सं वर्चसा पयसा सं तनूभिरगन्महि मनसा सꣳशिवेन ।
त्वष्टा सुदत्रो विदधातु रायोऽनुमार्ष्टु तन्वो यद्विलिष्टम् ।।१४।।
समिन्द्र णो मनसा नेषि गोभिः सꣳसूरिभिर्मघवन्त्सꣳस्वस्त्या।
सं ब्रह्मणा देवकृतं यदस्ति सं देवानाꣳसुमतौ यज्ञियानाꣳस्वाहा ।।१५।।
सं वर्चसा पयसा सं तनूभिरगन्महि मनसा सꣳशिवेन ।
त्वष्टा सुदत्रो विदधातु रायोऽनुमार्ष्टु तन्वो यद्विलिष्टम् ।।१६।।
धाता रातिः सवितेदं जुषन्तां प्रजापतिर्निधिपा देवोऽअग्निः।
त्वष्टा विष्णुः प्रजया सꣳरराणा यजमानाय द्रविणं दधात स्वाहा ।।१७।।
सुगा वो देवाः सदनाऽअकर्म यऽआजग्मेदꣳसवनं जुषाणाः।
भरमाणा वहमाना हवीꣳष्यस्मे धत्त वसवो वसूनि स्वाहा ।।१८।।
याँ२।।ऽआवहऽउशतो देव देवाँस्तान् प्रेरय स्वेऽअग्ने सधस्थे।
जक्षिवाꣳसः पपिवाꣳसश्च विश्वेऽसुं घर्मꣳस्वरातिष्ठतानु स्वाहा ।।१९।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वयꣳहि त्वा प्रयति यज्ञेऽअस्मिन्नग्ने होतारमवृणीमहीह ।
ऋधगया ऽऋधगुताशमिष्ठाः प्रजानन् यज्ञमुपयाहि विद्वान्त्स्वाहा ॥२०॥
देवा गातुविदो गातुं वित्त्वा गातुमित ।
मनसस्पतऽइमं देव यज्ञꣳस्वाहा वाते धाः ॥२१॥
कयज्ञ यज्ञं गच्छ यज्ञपतिं गच्छ स्वां योनिं गच्छ स्वाहा ।
खएष ते यज्ञो यज्ञपते सहसूक्तवाकः सर्ववीरस्तं जुषस्व स्वाहा ॥२२॥
गमाहिर्भूर्मा पृदाकुः । कउरुꣳहि राजा वरुणश्चकार सूर्याय पन्थामन्वेतवाऽउ ।
अपदे पादा प्रतिधातवेऽकरुतापवक्ता हृदयाविधश्चित् ।
खनमो वरुणायाभिष्ठितो वरुणस्य पाशः ॥२३॥
अग्नेरनीकमपऽआविवेशापान्नपात् प्रतिरक्षन्नसुर्यम् ।
दमेदमे समिधं यक्ष्यग्ने प्रति ते जिह्वा घृतमुच्चरण्यत् स्वाहा ॥२४॥
समुद्रे ते हृदयमप्स्वन्तः सं त्वा विशन्त्वोषधीरुतापः ।
यज्ञस्य त्वा यज्ञपते सूक्तोक्तौ नमोवाके विधेम यत् स्वाहा ॥२५॥

देवीरापऽएष वो गर्भस्तꣳसुप्रीतꣳसुभृतं बिभृत ।
देव सोमैष ते लोकस्तस्मिञ्छञ्च वक्ष्व परि च वक्ष्व ॥२६॥
कअवभृथ निचुम्पुण निचेरुरसि निचुम्पुणः ।
खअव देवैर्देवकृतमेनोऽयासिषमव मर्त्यैर्मर्त्यकृतं
पुरुराव्णो देव रिषस्पाहि देवानाꣳसमिदसि ॥२७॥
गएजतु दशमास्यो गर्भो जरायुणा सह ।
कयथायं वायुरेजति यथा समुद्रऽएजति ।
खएवायं दशमास्योऽअस्रञ्जरायुणा सह ॥२८॥
यस्यै ते यज्ञियो गर्भो यस्यै योनिर्हिरण्ययी ।
अङ्गान्यह्रुता यस्य तं मात्रा समजीगमꣳस्वाहा ॥२९॥

पुरुदस्मो विषुरूपऽइन्दुरन्तर्महिमानमानञ्ज धीरः ।
एकपदीं द्विपदीं त्रिपदीं चतुष्पदीमष्टापदीं भुवनानु प्रथन्ताꣳस्वाहा ॥३०॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मरुतो यस्य हि क्षये पाथा दिवो विमहसः । स सुगोपातमो जनः ॥३१॥
मही द्यौः पृथिवी च नऽइमं यज्ञं मिमिक्षताम् । पिपृतां नो भरीमभिः ॥३२॥
[क]आतिष्ठ वृत्रहन्रथं युक्ता ते ब्रह्मणा हरी ।
अर्वाचीनꣳसु ते मनो ग्रावा कृणोतु वग्नुना । [र]उपयामगृहीतोऽसीन्द्राय
त्वा षोडशिनऽएष ते योनिरिन्द्राय त्वा षोडशिने ॥३३॥
[क]युक्ष्वा हि केशिना हरी वृषणा कक्ष्यप्रा ।
अथा नऽइन्द्र सोमपा गिरामुपश्रुतिं चर । [र]उपयामगृहीतोऽसीन्द्राय
त्वा षोडशिनऽएष ते योनिरिन्द्राय त्वा षोडशिने ॥३४॥
[क]इन्द्रमिद्धरी वहतोऽप्रतिधृष्टशवसम् ।
ऋषीणां च स्तुतीरुप यज्ञं च मानुषाणाम् । [र]उपयामगृहीतोऽसीन्द्राय
त्वा षोडशिनऽएष ते योनिरिन्द्राय त्वा षोडशिने ॥३५॥
यस्मान्न जातः परोऽअन्योऽअस्ति यऽआविवेश भुवनानि विश्वा ।
प्रजापतिः प्रजया सꣳरराणस्त्रीणि ज्योतीꣳषि सचते स षोडशी॥३६॥
[क]इन्द्रश्च सम्राड् वरुणश्च राजा तौ ते भक्षं चक्रतुरग्रऽएतम् ।
[र]तयोरहमनु भक्षं भक्षयामि वाग्देवी जुषाणा सोमस्य तृप्यतु
सह प्राणेन स्वाहा ॥३७॥
[उ]अग्ने पवस्व स्वपाऽअस्मे वर्चः सुवीर्यम् । दधद्रयिं मयि पोषम् ।
[क]उपयामगृहीतोऽस्यग्नये त्वा वर्चसऽएष ते योनिरग्नये त्वा वर्चसे ।
[र]अग्ने वर्चस्विन्वर्चस्वाँस्त्वं देवेष्वसि वर्चस्वानहं मनुष्येषु भूयासम्॥३८॥
[उ]उत्तिष्ठन्नोजसा सह पीत्वी शिप्रेऽअवेपयः । सोममिन्द्र चमू सुतम् ।
[क]उपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वौजसऽएष ते योनिरिन्द्राय त्वौजसे ।
[र]इन्द्रौजिष्ठौजिष्ठस्त्वं देवेष्वस्योजिष्ठोऽहं मनुष्येषु भूयासम् ॥३९॥
[उ]अदृश्रमस्य केतवो वि रश्मयो जनाँ२ऽअनु । भ्राजन्तो अग्नयो यथा ।
[क]उपयामगृहीतोऽसि सूर्याय त्वा भ्राजायैष ते योनिः सूर्याय त्वा भ्राजाय ।
[र]सूर्य भ्राजिष्ठ भ्राजिष्ठस्त्वं देवेष्वसि भ्राजिष्ठोऽहं मनुष्येषु भूयासम्॥४०॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम्। उपयाम-
गृहीतोऽसि सूर्याय त्वा भ्राजायैष ते योनिः सूर्याय त्वा भ्राजाय ॥४१॥
आजिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः। पुनरूर्जा निवर्त्तस्व
सा नः सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्माविशताद्रयिः ॥४२॥
इडे रन्ते हव्ये काम्ये चन्द्रे ज्योतेऽदिते सरस्वति महि विश्रुति।
एता तेऽअघ्न्ये नामानि देवेभ्यो मां सुकृतं ब्रूतात् ॥४३॥
वि नऽइन्द्र मृधो जहि नीचा यच्छ पृतन्यतः।
योऽअस्माँ२॥ऽअभिदासत्यधरं गमया तमः।
उपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा विमृधऽएष ते योनिरिन्द्राय त्वा विमृधे ॥४४॥
वाचस्पतिं विश्वकर्माणमूतये मनोजुवं वाजेऽअद्या हुवेम।
स नो विश्वानि हवनानि जोषद्विश्वशम्भूरवसे साधुकर्मा।
उपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा विश्वकर्मणऽएष
ते योनिरिन्द्राय त्वा विश्वकर्मणे ॥४५॥
विश्वकर्मन् हविषा वर्धनेन त्रातारमिन्द्रमकृणोरवध्यम्।
तस्मै विशः समनमन्त पूर्वीरयमुग्रो विहव्यो यथासत्।
उपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा विश्वकर्मणऽएष ते
योनिरिन्द्राय त्वा विश्वकर्मणे ॥४६॥
उपयामगृहीतोऽस्यग्नये त्वा गायत्रच्छन्दसं गृह्णामीन्द्राय
त्वा त्रिष्टुप्छन्दसं गृह्णामि विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यो
जगच्छन्दसं गृह्णाम्यनुष्टुप्तेऽभिगरः ॥४७॥
[1]व्रेशीनां त्वा पत्मन्नाधूनोमि [2]कुकूननानां त्वा पत्मन्नाधूनोमि।
[3]भन्दनानां त्वा पत्मन्नाधूनोमि [4]मदिन्तमानां त्वा पत्मन्नाधूनोमि।
[5]मधुन्तमानां त्वा पत्मन्नाधूनोमि [6]शुक्रं त्वा शुक्रऽआधूनोम्यह्नो
रूपे सूर्यस्य रश्मिषु ॥४८॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[क]ककुभꣳरूपं वृषभस्य रोचते बृहच्छुक्रः शुक्रस्य पुरोगाः
सोमः सोमस्य पुरोगाः । [ग]यत्ते सोमादाभ्यं नाम जागृवि तस्मै
त्वा गृह्णामि तस्मै ते सोम सोमाय स्वाहा ॥४९॥
उशिक् त्वं देव सोमाग्नेः प्रियं पाथोऽपीहि वशी त्वं देव
सोमेन्द्रस्य प्रियं पाथोऽपीह्यस्मत्सखा त्वं देव सोम विश्वेषां
देवानां प्रियं पाथोऽपीहि ॥५०॥
इह रतिरिह रमध्वमिह धृतिरिह स्वधृतिः स्वाहा ।
उपसृजन्धरुणं मात्रे धरुणो मातरं धयन् ।
रायस्पोषमस्मासु दीधरत् स्वाहा ॥५१॥
सत्रस्यऽऋद्धिर्रस्यगन्म ज्योतिरमृताऽअभूम ।
दिवं पृथिव्याऽअध्यारुहामाविदाम देवान्त्स्वर्ज्योतिः ॥५२॥
[१]युवं तमिन्द्रापर्वता पुरोयुधा यो नः पृतन्यादप तन्तमिद्धतं
वज्रेण तन्तमिद्धतम् । [२]दूरे चत्ताय छन्त्सद् गहनं यदिनक्षत् ।
[३]अस्माकꣳशत्रून् परि शूर विश्वतो दर्मा दर्षीष्ट विश्वतः ।
[४]भूर्भुवः स्वः सुप्रजाः प्रजाभिः स्याम सुवीरा वीरैः सुपोषाः पोषैः ॥५३॥
परमेष्ठ्यभिधीतः प्रजापतिर्वाचि व्याहृतायामन्धोऽअच्छेतः ।
सविता सन्यां विश्वकर्मा दीक्षायां पूषा सोमक्रयण्याम् ॥५४॥
इन्द्रश्च मरुतश्च क्रयायोपोत्थितोऽसुरः पण्यमानो मित्रः क्रीतो
विष्णुः शिपिविष्टऽऊरावासन्नो विष्णुर्नरन्धिषः ॥५५॥
प्रोह्यमाणः सोमऽआगतो वरुणऽआसन्द्यामासन्नोऽग्निराग्नीध्रऽइन्द्रो
हविर्द्धानेऽथर्वोपावह्रियमाणः ॥५६॥
विश्वे देवाऽअꣳशुषु न्युप्तो विष्णुराप्रीतपाऽआप्याय्यमानो यमः
सूयमानो विष्णुः सम्भ्रियमाणो वायुः पूयमानः शुक्रः पूतः ।
शुक्रः क्षीरश्रीर्मन्थी सक्तुश्रीः ॥५७॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वे देवाश्चमसेषून्नीतोऽसुर्होमायोद्यतो रुद्रो
हूयमानो वातोऽभ्यावृतो नृचक्षाः प्रतिख्यातो भक्षो
भक्ष्यमाणः पितरो नाराशꣳसाः ॥५८॥
सन्नः सिन्धुरवभृथायोद्यतः समुद्रोऽभ्यवह्रियमाणः सलिलः
प्रप्लुतो ययोरोजसा स्कभिता रजाꣳसि वीर्येभिर्वीरतमा शविष्ठा।
या पत्येते अप्रतीता सहोभिर्विष्णूऽअगन्वरुणा पूर्वहूतौ ॥५९॥
देवान् दिवमगन्यज्ञस्ततो मा द्रविणमष्टु मनुष्यानन्तरिक्षमगन्यज्ञस्ततो
मा द्रविणमष्टु पितॄन् पृथिवीमगन्यज्ञस्ततो मा द्रविणमष्टु यं
कं च लोकमगन्यज्ञस्ततो मे भद्रमभूत् ॥६०॥
चतुस्त्रिꣳशत्तन्तवो ये वितत्निरे यऽइमं यज्ञꣳस्वधया ददन्ते।
तेषां छिन्नꣳसम्वेतद्दधामि स्वाहा घर्मोऽअप्येतु देवान् ॥६१॥
यज्ञस्य दोहो विततः पुरुत्रा सोऽअष्टधा दिवमन्वाततान ।
स यज्ञ धुक्ष्व महि मे प्रजायाꣳरायस्पोषं विश्वमायुरशीय स्वाहा॥६२॥
आपवस्व हिरण्यवदश्ववत्सोम वीरवत्।
वाजं गोमन्तमाभर स्वाहा ॥६३॥

इत्यष्टमोऽध्यायः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ नवमोऽध्यायः

—:०:—

ऋषिः—इन्द्राबृहस्पती १। बृहस्पतिः २-१३। दधिक्रावा १४, १५। वसिष्ठः १६, १८-२५। नाभानेदिष्ठः १७। तापसः २६-३४। वरुणः ३५, ३६। देववातः ३७-४०॥

देवता—सविता १, ५, १३। इन्द्रः २, ३। राजधर्मराजादयः ४। अश्वः ६। सेनापतिः ७। प्रजापतिः ८, १९, २०, २३-२५। वीरः ९। इन्द्राबृहस्पती १०-१२। बृहस्पतिः १४-१८। यज्ञः २१। दिशः २२। सोमाग्न्यादित्यविष्णुसूर्यबृहस्पतयः २६। अर्यमादिमन्त्रोक्ताः २७, २९। अग्निः २८, ३७। सम्राट् ३०। अग्न्यादयो मन्त्रोक्ताः ३१। पूषादयो मन्त्रोक्ताः ३२। मित्रादयो मन्त्रोक्ताः ३३। वस्वादयो मन्त्रोक्ताः ३४। विश्वेदेवाः ३५, ३६। रक्षोघ्नः ३८, ३९। यजमानः ४०॥

छन्दः—स्वराडार्षीत्रिष्टुप् १। आर्षीपङ्क्तिः[क], विकृतिः[र] २। निचृदतिशक्वरी ३। भुरिक्कृतिः ४। भुरिगष्टिः ५। भुरिग्जगती ६। भुरिगुष्णिक् ७। भुरिक्त्रिष्टुप् ८। धृतिः ९। विराडुत्कृतिः १०। जगती ११, १४, १५, १७, २४, ३०। स्वराडतिधृतिः १२। निचृदतिजगती १३। भुरिक्पङ्क्तिः १६। निचृत्त्रिष्टुप् १८। निचृद्धृतिः १९। भुरिक्कृतिः २०। अत्यष्टिः २१। निचृदत्यष्टिः २२। स्वराट्त्रिष्टुप् २३, २५। अनुष्टुप् २६। स्वराडनुष्टुप् २७। भुरिगनुष्टुप् २८। भुरिगार्षीगायत्री २९। स्वराडतिधृतिः ३१। कृतिः ३२, ३३। निचृज्जगती[क], निचृद्धृतिः[र] ३४। विराडुत्कृतिः ३५। विकृतिः ३६। निचृदनुष्टुप् ३७। भुरिग्ब्राह्मीबृहती ३८। अतिजगती ३९। स्वराड्ब्राह्मीत्रिष्टुप् ४०॥

स्वरः—धैवतः १, ८, १८, २३, २५, ४०। पञ्चमः[क], मध्यमः[र] २। पञ्चमः ३, १६। निषादः ४, ६, ११, १३-१५, १७, २०, २४, ३०, ३२, ३३, ३९। मध्यमः ५, ३६, ३८। ऋषभः ७, ९, १९। षड्जः १०, १२, २९, ३१, ३५। गान्धारः २१, २२, २६-२८, ३७। निषादः[क], ऋषभः[र] ३४॥

देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय ।
दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाजं नः स्वदतु स्वाहा ॥१॥

[क]ध्रुवसदं त्वा नृषदं मनःसदमुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्। [र]अप्सुषदं त्वा घृतसदं व्योमसदमुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्। पृथिविसदं त्वाऽन्तरिक्षसदं दिविसदं देवसदं नाकसदमुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम् ॥२॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपाᳫं रसमुद्वयसᳫं सूर्ये सन्तᳫं समाहितम्।
अपाᳫं रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय
त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम् ॥३॥
ग्रहाऽऊर्जाहुतयो व्यन्तो विप्राय मतिम्। तेषां विशिप्रियाणां
वोऽहमिषमूर्जᳫं समग्रभमुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं
गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्। सम्पृचौ स्थः सं
मा भद्रेण पृङ्क्तं विपृचौ स्थो वि मा पाप्मना पृङ्क्तम् ॥४॥
इन्द्रस्य वज्रोऽसि वाजसास्त्वयाऽयं वाजᳫं सेत्। वाजस्य नु प्रसवे
मातरं महीमदितिं नाम वचसा करामहे। यस्यामिदं विश्वं
भुवनमाविवेश तस्यां नो देवः सविता धर्म साविषत् ॥५॥
अप्स्वन्तरमृतमप्सु भेषजमपामुत प्रशस्तिष्वश्वा भवत वाजिनः।
देवीरापो यो वऽऊर्मिः प्रतूर्तिः ककुन्मान्वाजसास्तेनायं वाजᳫं सेत्॥६॥
वातो वा मनो वा गन्धर्वाः सप्तविᳫं शतिः।
तेऽअग्रेऽश्वमयुञ्जँस्तेऽअस्मिन् जवमादधुः ॥७॥
वातरᳫं हा भव वाजिन् युज्यमानऽइन्द्रस्येव दक्षिणः श्रियैधि।
युञ्जन्तु त्वा मरुतो विश्ववेदसऽआ ते त्वष्टा पत्सु जवं दधातु॥८॥
जवो यस्ते वाजिन्निहितो गुहा यः श्येने परीत्तोऽअचरच्च वाते।
तेन नो वाजिन् बलवान् बलेन वाजजिच्च भव समने च पारयिष्णुः।
वाजिनो वाजजितो वाजᳫं सरिष्यन्तो बृहस्पतेर्भागमवजिघ्रत ॥९॥
देवस्याहᳫं सवितुः सवे सत्यसवसो बृहस्पतेरुत्तमं नाकᳫं रुहेयम्।
देवस्याहᳫं सवितुः सवे सत्यसवसऽइन्द्रस्योत्तमं नाकᳫं रुहेयम्।
देवस्याहᳫं सवितुः सवे सत्यप्रसवसो बृहस्पतेरुत्तमं नाकमरुहम्।
देवस्याहᳫं सवितुः सवे सत्यप्रसवसऽइन्द्रस्योत्तमं नाकमरुहम् ॥१०॥
बृहस्पते वाजं जय बृहस्पतये वाचं वदत बृहस्पतिं वाजं जापयत।
इन्द्र वाजं जयेन्द्राय वाचं वदतेन्द्रं वाजं जापयत ॥११॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एषा वः सा सत्या संवागभूद्यया बृहस्पतिं वाजमजीजपताजीजपत
बृहस्पतिं वाजं वनस्पतयो विमुच्यध्वम्। एषा वः सा सत्या
संवागभूद्ययेन्द्रं वाजमजीजपताजीजपतेन्द्रं वाजं वनस्पतयो विमुच्यध्वम् ॥१२॥
देवस्याहꣳसवितुः सवे सत्यप्रसवसो बृहस्पतेर्वाजजितो वाजं जेषम्।
वाजिनो वाजजितोऽध्वन स्कभ्नुवन्तो योजना मिमानाः काष्ठां गच्छत ॥१३॥
एष स्य वाजी क्षिपणिं तुरण्यति ग्रीवायां बद्धोऽअपिकक्षऽआसनि।
क्रतुं दधिक्राऽअनु सꣳसनिष्यदत्पथामङ्काꣳस्यन्वापनीफणत् स्वाहा ॥१४॥
उत स्मास्य द्रवतस्तुरण्यतः पर्णं न वेरनुवाति प्रगर्धिनः ।
श्येनस्येव ध्रजतोऽअङ्कसं परि दधिक्राव्णः सहोर्जा तरित्रतः स्वाहा ॥१५॥
शन्नो भवन्तु वाजिनो हवेषु देवताता मितद्रवः स्वर्काः ।
जम्भयन्तोऽहिं वृकꣳरक्षाꣳसि सनेम्यस्मद्युयवन्नमीवाः ॥१६॥
ते नोऽअर्वन्तो हवनश्रुतो हवं विश्वे शृण्वन्तु वाजिनो मितद्रवः।
सहस्रसा मेधसाता सनिष्यवो महो ये धनꣳसमिथेषु जभ्रिरे ॥१७॥
वाजेवाजेऽवत वाजिनो नो धनेषु विप्राऽअमृताऽऋतज्ञाः ।
अस्य मध्वः पिबत मादयध्वं तृप्ता यात पथिभिर्देवयानैः ॥१८॥
आ मा वाजस्य प्रसवो जगम्यादेमे द्यावापृथिवी विश्वरूपे।
आ मा गन्तां पितरा मातरा चा मा सोमोऽअमृतत्वेन गम्यात्।
वाजिनो वाजजितो वाजꣳससृवाꣳसो बृहस्पतेर्भागमवजिघ्रत निमृजानाः ॥१९॥
आपये स्वाहा स्वापये स्वाहाऽपिजाय स्वाहा क्रतवे स्वाहा वसवे
स्वाहाऽहर्पतये स्वाहाऽह्ने मुग्धाय स्वाहा मुग्धाय वैनꣳशिनाय
स्वाहा विनꣳशिनऽआन्त्यायनाय स्वाहाऽऽन्त्याय भौवनाय स्वाहा
भुवनस्य पतये स्वाहाऽधिपतये स्वाहा ॥२०॥
आयुर्यज्ञेन कल्पतां प्राणो यज्ञेन कल्पतां चक्षुर्यज्ञेन कल्पताꣳश्रोत्रं
यज्ञेन कल्पतां पृष्ठं यज्ञेन कल्पतां यज्ञो यज्ञेन कल्पताम् ।
प्रजापतेः प्रजाऽअभूम स्वर्देवाऽअगन्मामृताऽअभूम ॥२१॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अस्मे वोऽअस्त्विन्द्रियमस्मे नृम्णमुत क्रतुरस्मे वर्चांᳬसि सन्तु वः।
नमो मात्रे पृथिव्यै नमो मात्रे पृथिव्याऽइयं ते राड्यन्तासि यमनो
ध्रुवोऽसि धरुणः। कृष्यै त्वा क्षेमाय त्वा रय्यै त्वा पोषाय त्वा ॥२२॥
वाजस्येमं प्रसवः सुषुवेऽग्रे सोमꣳराजानमोषधीष्वप्सु ।
ताऽअस्मभ्यं मधुमतीर्भवन्तु वयꣳराष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः स्वाहा ॥२३॥
वाजस्येमां प्रसवः शिश्रिये दिवमिमा च विश्वा भुवनानि सम्राट्।
अदित्सन्तं दापयति प्रजानन्त्स नो रयिꣳसर्ववीरं नियच्छतु स्वाहा ॥२४॥
वाजस्य नु प्रसव आबभूवेमा च विश्वा भुवनानि सर्वतः।
सनेमि राजा परियाति विद्वान्प्रजां पुष्टिं वर्धयमानोऽअस्मे स्वाहा ॥२५॥
सोमꣳराजानमवसेऽग्निमन्वारभामहे ।
आदित्यान्विष्णुꣳसूर्यं ब्रह्माणं च बृहस्पतिᳬस्वाहा ॥२६॥
अर्यमणं बृहस्पतिमिन्द्रं दानाय चोदय ।
वाचं विष्णुꣳसरस्वतीᳬसवितारं च वाजिनᳬस्वाहा ॥२७॥
अग्नेऽअच्छा वदेह नः प्रति नः सुमना भव ।
प्र नो यच्छ सहस्रजित् त्वꣳहि धनदाऽअसि स्वाहा ॥२८॥
प्र नो यच्छत्वर्यमा प्र पूषा प्र बृहस्पतिः ।
प्र वाग्देवी ददातु नः स्वाहा ॥२९॥
देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्।
सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्पतेष्ट्वा
साम्राज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ ॥३०॥
अग्निरेकाक्षरेण प्राणमुदजयत्तमुज्जेषमश्विनौ द्व्यक्षरेण द्विपदो
मनुष्यानुदजयतां तानुज्जेषं विष्णुस्त्र्यक्षरेण त्रींल्लोकानुदजयत्तानुज्जेषꣳ
सोमश्चतुरक्षरेण चतुष्पदः पशूनुदजयत्तानुज्जेषम् ॥३१॥
पूषा पञ्चाक्षरेण पञ्च दिशऽउदजयत्ताऽउज्जेषꣳसविता षडक्षरेण
षडृतूनुदजयत्तानुज्जेषं मरुतः सप्ताक्षरेण सप्त ग्राम्यान्
पशूनुदजयँस्तानुज्जेषं बृहस्पतिरष्टाक्षरेण गायत्रीमुदजयत्तामुज्जेषम् ॥३२॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मित्रो नवाक्षरेण त्रिवृतꣳस्तोममुदजयत्तमुज्जेषं वरुणो दशाक्षरेण
विराजमुदजयत्तामुज्जेषमिन्द्रऽएकादशाक्षरेण त्रिष्टुभमुदजयत्तामुज्जेषं
विश्वे देवा द्वादशाक्षरेण जगतीमुदजयँस्तामुज्जेषम् ॥३३॥
वसवस्त्रयोदशाक्षरेण त्रयोदशꣳस्तोममुदजयँस्तमुज्जेषꣳ
रुद्राश्चतुर्दशाक्षरेण चतुर्दशꣳस्तोममुदजयँस्तमुज्जेषमादित्याः
पञ्चदशाक्षरेण पञ्चदशꣳस्तोममुदजयँस्तामुज्जेषमदितिः
षोडशाक्षरेण षोडशꣳस्तोममुदजयत्तमुज्जेषं प्रजापतिः
सप्तदशाक्षरेण सप्तदशꣳस्तोममुदजयत्तमुज्जेषम् ॥३४॥
एष ते निर्ऋते भागस्तं जुषस्व स्वाहाऽग्निनेत्रेभ्यो देवेभ्यः
पुरःसद्भ्यः स्वाहा यमनेत्रेभ्यो देवेभ्यो दक्षिणासद्भ्यः स्वाहा
विश्वदेवनेत्रेभ्यो देवेभ्यः पश्चात्सद्भ्यः स्वाहा मित्रावरुणनेत्रेभ्यो
वा मरुन्नेत्रेभ्यो वा देवेभ्यऽउत्तरासद्भ्यः स्वाहा सोमनेत्रेभ्यो
देवेभ्यऽउपरिसद्भ्यो दुवस्वद्भ्यः स्वाहा ॥३५॥
ये देवाऽअग्निनेत्राः पुरःसदस्तेभ्यः स्वाहा ये देवा यमनेत्रा
दक्षिणासदस्तेभ्यः स्वाहा ये देवा विश्वदेवनेत्राः पश्चात्सदस्तेभ्यः
स्वाहा ये देवा मित्रावरुणनेत्रा वा मरुन्नेत्रा वोत्तरासदस्तेभ्यः
स्वाहा ये देवाः सोमनेत्राऽउपरिसदो दुवस्वन्तस्तेभ्यः स्वाहा ॥३६॥
अग्ने सहस्व पृतनाऽअभिमातीरपास्य। दुष्टरस्तरन्नरातीर्वर्चो धा यज्ञवाहसि ॥३७॥
देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्।
उपाꣳशोर्वीर्येण जुहोमि हतꣳरक्षः स्वाहा रक्षसां त्वा वधायावधिष्म
रक्षोऽवधिष्मामुमसौ हतः ॥३८॥
सविता त्वा सवानाꣳसुवतामग्निर्गृहपतीनाꣳसोमो वनस्पतीनाम्।
बृहस्पतिर्वाचऽइन्द्रो ज्यैष्ठ्याय रुद्रः पशुभ्यो मित्रः सत्यो वरुणो
धर्मपतीनाम् ॥३९॥
इमं देवाऽअसपत्नꣳसुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय
महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै
विशऽएष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाꣳराजा ॥४०॥

इति नवमोऽध्यायः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ दशमोऽध्यायः

—:O:—

ऋषिः—वरुणः १-१७। देववातः १८-२३। वामदेवः २४-२६। शुनःशेपः २७-३४॥

देवता—आपः १, ६। वृषा २। अपांपतिः ३। सूर्यादयो मन्त्रोक्ताः ४। अग्न्यादयो मन्त्रोक्ताः ५, २३। वरुणः ७, २७। यजमानः ८, १०-१४, १८, १९, २८। प्रजापतिः ९, २०। परमात्मा १५। मित्रावरुणौ १६। क्षत्रपतिः १७, २१, ३१, ३२। इन्द्रः २२। सूर्यः २४, २५। आसन्दी राजपत्नी २६। अग्निः २९। सवित्रादिमन्त्रोक्ताः ३०। अश्विनौ ३३, ३४॥

छन्दः—निचृदार्षीत्रिष्टुप् १, २२। स्वराड्ब्राह्मीपङ्क्तिः २। अभिकृतिः[क], निचृज्जगती[र] ३। जगती[१], स्वराट्पङ्क्तिः[२], स्वराड्ब्राह्मीबृहती[३,४], आर्चीपङ्क्तिः[५], भुरिक्त्रिष्टुप्[६,७] ४। स्वराड्धृतिः ५। स्वराड्ब्राह्मीबृहती ६। विराडार्षीत्रिष्टुप् ७, २२। कृतिः ८। भुरिगष्टिः ९। विराडार्षीपङ्क्तिः १०। आर्चीपङ्क्तिः ११, १३। निचृदार्ष्यनुष्टुप् १२, ३३। भुरिग्जगती १४, २४। विराडार्चीपङ्क्तिः १५। स्वराडार्षीजगती १६, २९। आर्षीपङ्क्तिः १७। स्वराड्ब्राह्मीत्रिष्टुप् १८। विराड्ब्राह्मीत्रिष्टुप् १९। भुरिगतिधृतिः २०। भुरिग्ब्राह्मीबृहती २१। जगती २३, २५। भुरिगनुष्टुप् २६। पिपीलिकामध्याप्रतिष्ठागायत्री २७। विराड्धृतिः २८। भुरिग्ब्राह्मीत्रिष्टुप् ३०। आर्षीत्रिष्टुप् ३१। निचृद्ब्राह्म्यनुष्टुप् ३२। भुरिक्पङ्क्तिः ३४॥

स्वरः—धैवतः १, ७, १८, १९, २२, ३०, ३१। पञ्चमः २, १०, ११, १३, १५, १७, ३४। ऋषभः[क], निषादः[र] ३। निषादः[१], पञ्चमः[२,५], मध्यमः[३,४], धैवतः[६,७] ४। ऋषभः ५, २८। मध्यमः ६, ९, २१। निषादः ८, १४, १६, २३-२५, २९। गान्धारः १२, २६, ३२, ३३। षड्जः २०, २७॥

अपो देवा मधुमतीरगृभ्णन्नूर्जस्वती राजस्वश्चितानाः ।
याभिर्मित्रावरुणावभ्यषिञ्चन् याभिरिन्द्रमनयन्नत्यरातीः ॥१॥

वृष्णऽऊर्मिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रं मे देहि स्वाहा वृष्णऽऊर्मिरसि
राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै देहि वृषसेनोऽसि राष्ट्रदा राष्ट्रं मे
देहि स्वाहा वृषसेनोऽसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै देहि ॥२॥

[क]अर्थेत स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहार्थेत स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै
दत्तौजस्वती स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहौजस्वती स्थ राष्ट्रदा
राष्ट्रममुष्मै दत्तापः परिवाहिणी स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहापः

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिवाहिणी स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्तापां पतिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रं
मे [२]देहि स्वाहाऽपां पतिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै देह्यपां गर्भोऽसि
राष्ट्रदा राष्ट्रं मे देहि स्वाहाऽपां गर्भोऽसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै देहि ॥३॥
[१]सूर्यत्वचस स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा सूर्यत्वचस स्थ
राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्त सूर्यवर्चस स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त
स्वाहा [२]सूर्यवर्चस स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्त मान्दा स्थ राष्ट्रदा
राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा मान्दा स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्त [३]व्रजक्षित
स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा व्रजक्षित स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै
दत्त वाशा स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा वाशा स्थ राष्ट्रदा
राष्ट्रममुष्मै दत्त [४]शविष्ठा स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा शविष्ठा
स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्त शक्वरी स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त
स्वाहा शक्वरी स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्त [५]जनभृत स्थ राष्ट्रदा
राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा जनभृत स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्त [६]विश्वभृत
स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा विश्वभृत स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै
दत्तापः स्वराज स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्त। [७]मधुमतीर्मधुमतीभिः
पृच्यन्तां महि क्षत्रं क्षत्रियाय वन्वानाऽअनाधृष्टाः सीदत सहौजसो
महि क्षत्रं क्षत्रियाय दधतीः ॥४॥

सोमस्य त्विषिरसि तवेव मे त्विषिर्भूयात्। अग्नये स्वाहा
सोमाय स्वाहा सवित्रे स्वाहा सरस्वत्यै स्वाहा पूष्णे स्वाहा
बृहस्पतये स्वाहेन्द्राय स्वाहा घोषाय स्वाहा श्लोकाय स्वाहाꣳ
शाय स्वाहा भगाय स्वाहार्यम्णे स्वाहा ॥५॥

पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसवऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण
पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। अनिभृष्टमसि वाचो बन्धुस्तपोजाः
सोमस्य दात्रमसि स्वाहा राजस्वः ॥६॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सधमादो द्युम्निनीरापऽएताऽअनाधृष्टाऽअपस्यो वसानाः ।
पस्त्यासु चक्रे वरुणः सधस्थमपांशिशुर्मातृतमास्वन्तः ॥७॥
क्षत्रस्योल्बमसि क्षत्रस्य जराय्वसि क्षत्रस्य योनिरसि क्षत्रस्य
नाभिरसीन्द्रस्य वार्त्रघ्नमसि मित्रस्यासि वरुणस्यासि त्वयायं
वृत्रं वधेत्। दृवासि रुजासि क्षुमासि। पातैनं प्राञ्चं पातैनं
प्रत्यञ्चं पातैनं तिर्यञ्चं दिग्भ्यः पात ॥८॥
आविर्मर्याऽआवित्तोऽअग्निर्गृहपतिरावित्तऽइन्द्रो वृद्धश्रवाऽआवित्तौ
मित्रावरुणौ धृतव्रतावावित्तः पूषा विश्ववेदाऽआवित्ते द्यावापृथिवी
विश्वशम्भुवावावित्तादितिरुरुशर्मा ॥९॥

अवेष्टा दन्दशूकाः प्राचीमारोह गायत्री त्वावतु रथन्तरꣳसाम
त्रिवृत् स्तोमो वसन्तऽऋतुर्ब्रह्म द्रविणम् ॥१०॥
दक्षिणामारोह त्रिष्टुप् त्वावतु बृहत्साम पञ्चदश स्तोमो
ग्रीष्मऽऋतुः क्षत्रं द्रविणम् ॥११॥
प्रतीचीमारोह जगती त्वावतु वैरूपꣳसाम सप्तदश स्तोमो
वर्षाऽऋतुर्विड् द्रविणम् ॥१२॥
उदीचीमारोहानुष्टुप् त्वावतु वैराजꣳसामैकविꣳश स्तोमः
शरदृतुः फलं द्रविणम् ॥१३॥

ऊर्ध्वामारोह पङ्क्तिस्त्वावतु शाक्वररैवते सामनी त्रिणवत्रयस्त्रिꣳशौ
स्तोमौ हेमन्तशिशिरावृतू वर्चो द्रविणं प्रत्यस्तं नमुचेः शिरः॥१४॥

सोमस्य त्विषिरसि तवेव मे त्विषिर्भूयात् ।
मृत्योः पाह्योजोऽसि सहोऽस्यमृतमसि ॥१५॥

हिरण्यरूपाऽउषसो विरोकऽउभाविन्द्राऽउदिथः सूर्यश्च। आरोहतं
वरुण मित्र गर्त्तं ततश्चक्षाथामदितिं दितिं च मित्रोऽसि वरुणोऽसि॥१६॥
सोमस्य त्वा द्युम्नेनाभिषिञ्चाम्यग्नेर्भ्राजसा सूर्यस्य वर्चसेन्द्रस्येन्द्रियेण
क्षत्राणां क्षत्रपतिरेध्यति दिद्यून् पाहि ॥१७॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इमं देवाऽअसपत्नꣳसुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय
महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इममुमुष्य पुत्रमुमुष्यै पुत्रमस्यै
विशऽएष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाꣳराजा ॥१८॥
प्र पर्वतस्य वृषभस्य पृष्ठान्नावश्चरन्ति स्वसिचऽइयानाः ।
ताऽआववृत्रन्नधरागुदक्ताऽअहिं बुध्न्यमनु रीयमाणाः ।
विष्णोर्विक्रमणमसि विष्णोर्विक्रान्तमसि विष्णोः क्रान्तमसि ॥१९॥
प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परि ता बभूव ।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽअस्त्वयममुष्य पिताऽसावस्य पिता
वयꣳस्याम पतयो रयीणाꣳस्वाहा। रुद्र यत्ते क्रिवि परं
नाम तस्मिन् हुतमस्यमेष्टमसि स्वाहा ॥२०॥
इन्द्रस्य वज्रोऽसि, मित्रावरुणयोस्त्वा प्रशास्त्रोः प्रशिषा युनज्मि।
अव्यथायै त्वा स्वधायै त्वाऽरिष्टो अर्जुनो मरुतां प्रसवेन
जयापाम मनसा समिन्द्रियेण ॥२१॥
मा तऽइन्द्र ते वयं तुराषाडयुक्तासोऽअब्रह्मता विदसाम ।
तिष्ठा रथमधि यं वज्रहस्ता रश्मीन्देव यमसे स्वश्वान् ॥२२॥
अग्नये गृहपतये स्वाहा सोमाय वनस्पतये स्वाहा
मरुतामोजसे स्वाहेन्द्रस्येन्द्रियाय स्वाहा ।
पृथिवि मातर्मा मा हिꣳसीर्मोऽअहं त्वाम् ॥२३॥
हꣳसः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत् ।
नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जा गोजाऽऋतजाऽअद्रिजाऽऋतं बृहत् ॥२४॥
इयदस्यायुरस्यायुर्मयि धेहि युङ्ङसि वर्चोऽसि वर्चो मयि
धेह्यूर्गस्यूर्जं मयि धेहि। इन्द्रस्य वां वीर्यकृतो बाहूऽअभ्युपावहरामि ॥२५॥
स्योनासि सुषदासि क्षत्रस्य योनिरसि ।
स्योनामासीद सुषदामासीद क्षत्रस्य योनिमासीद॥२६॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निषसाद धृतव्रतो वरुणः पस्त्यास्वा। साम्राज्याय सुक्रतुः ॥२७॥
अभिभूरस्येतास्ते पञ्च दिशः कल्पन्तां ब्रह्मँस्त्वं ब्रह्मासि सवितासि
सत्यप्रसवो वरुणोऽसि सत्यौजाऽइन्द्रोऽसि विशौजा रुद्रोऽसि सुशेवः।
बहुकार श्रेयस्कर भूयस्करेन्द्रस्य वज्रोऽसि तेन मे रध्य ॥२८॥
अग्निः पृथुर्धर्मणस्पतिर्जुषाणोऽअग्निः पृथुर्धर्मणस्पतिराज्यस्य वेतु स्वाहा।
स्वाहाकृताः सूर्यस्य रश्मिभिर्यतध्वꣳसजातानां मध्यमेष्ठ्याय ॥२९॥
सवित्रा प्रसवित्रा सरस्वत्या वाचा त्वष्ट्रा रूपैः पूष्णा पशुभि-
रिन्द्रेणास्मे बृहस्पतिना ब्रह्मणा वरुणेनौजसाऽग्निना तेजसा
सोमेन राज्ञा विष्णुना दशम्या देवतया प्रसूतः प्रसर्पामि ॥३०॥
अश्विभ्यां पच्यस्व सरस्वत्यै पच्यस्वेन्द्राय सुत्राम्णे पच्यस्व।
वायुः पूतः पवित्रेण प्रत्यङ्क्सोमो अतिस्रुतः। इन्द्रस्य युज्यः सखा ॥३१॥
कुविदङ्ग यवमन्तो यवं चिद्यथा दान्त्यनुपूर्वं वियूय।
इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नमऽउक्तिं यजन्ति।
उपयामगृहीतोऽस्यश्विभ्यां त्वा सरस्वत्यै त्वेन्द्राय त्वा सुत्राम्णे ॥३२॥
युवꣳसुराममश्विना नमुचावासुरे सचा।
विपिपाना शुभस्पतीऽइन्द्रं कर्मस्वावतम् ॥३३॥
पुत्रमिव पितरावश्विनोभेन्द्रावथुः काव्यैर्दꣳसनाभिः।
यत्सुरामं व्यपिबः शचीभिः सरस्वती त्वा मघवन्नभिष्णक् ॥३४॥

इति दशमोऽध्यायः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संꣳशितं मे ब्रह्म संꣳशितं वीर्यं॒ बलम् ।
संꣳशितं क्षत्रं जिष्णु यस्याहमस्मि पुरोहितः ॥८१॥
उदेषां बाहूऽअतिरमुद्वर्चोऽअथो बलम् ।
क्षिणोमि ब्रह्मणामित्रानुन्नयामि स्वाँ२॥ऽअहम् ॥८२॥
अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः ।
प्रप्र दातारं तारिषऽऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे ॥८३॥

इत्येकादशोऽध्यायः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ द्वादशोऽध्यायः

—:०:—

ऋषिः—वत्सप्रीः १, ६-१०, १८-२९, ३३, ४०, ४१। कुत्सः २। श्यावाश्वः ३-५। ध्रुवः ११। शुनःशेपः १२। त्रितः १३-१७। विरूपाक्षः ३०। विरूपः ३६-३९, ११६। तापसः ३१, ३२। वसिष्ठः ३४, ३५। दीर्घतमाः ४२। सोमाहुतिः ४३-४६। विश्वामित्रः ४७-५४। प्रियमेधाः ५५। सुतजेतृमधुच्छन्दाः ५६। मधुच्छन्दाः ५७-६५। विश्वावसुः ६६-६८। कुमारहारितः ६९-७४। भिषक् ७५-९०। वरुणः ९१-१०१। हिरण्यगर्भः १०२-१०५। पावकाग्निः १०६-१११। गोतमः ११२-११४। वत्सारः ११५। प्रजापतिः ११७॥

देवता—अग्निः १, २, ६-११, १३, १५-३४, ३६-४४, ४६-५४, ५७-५९, ६६, १०३, १०४, १०६, १०८, १०९, १११, ११५-११७। सविता ३। गरुत्मान् ४। विष्णुः ५। वरुणः १२। जीवेश्वरौ १४। आपः ३५, ५५। पितरः ४५। इन्द्रः ५६। दम्पती ६०। पत्नी ६१। निर्ऋतिः ६२-६४। यजमानः ६५। कृषीवलाः कवयो वा ६७, ६८। कृषीवलाः ६९-७१। मित्रादयो लिङ्गोक्ताः ७२। अघ्न्याः ७३। अश्विनौ ७४। वैद्यः ७५-७७, ७९, ८१, ८५-८७। चिकित्सुः ७८। ओषधयः ८०, ८२। वैद्याः ८३, ८४, ८८-९३, ९५, ९६, ९८, १००। भिषजः ९४, १०१। भिषग्वराः ९७। ओषधिः ९९। कः १०२। विद्वान् १०५, १०७, ११०। सोमः ११२-११४॥

छन्दः—भुरिक्पङ्क्तिः १, २५। आर्षीत्रिष्टुप् २। विराड्जगती ३। भुरिग्धृतिः ४। भुरिगुत्कृतिः ५। निचृदार्षीत्रिष्टुप् ६, १८-२२, २४, ३३, ४५, ६२, १०२। भुरिगार्ष्यनुष्टुप् ७। आर्षीत्रिष्टुप् ८, ३४, ३५, ४७, ६१, ६४, ७०। निचृदार्षीगायत्री ९, ४०। निचृद्गायत्री १०, ३६, ४१। आर्ष्यनुष्टुप् ११। विराडार्षीत्रिष्टुप् १२, २६-२९, ४२, ६६, ६८। भुरिगार्षीपङ्क्तिः १३, ४८, ४९, ५१, ६३, १०७, ११३। भुरिग्जगती १४। विराट्त्रिष्टुप् १५, १०५। विराडनुष्टुप् १६, १७, ३१, ३२, ४३, ५०, ५४, ५५, ७२, ८२, ८४, ८७-९०, ९४, ९५, ९९। आर्षीत्रिष्टुप् २३। गायत्री ३०, ६७, ११६, ११७। भुरिगार्ष्युष्णिक् ३७। निचृदार्ष्यनुष्टुप् ३८, ५२। निचृदनुष्टुप् ३९, ५६, ७७, ८३, ८६, ९२, ९८, १०१। स्वराडार्षीत्रिष्टुप् ४४। भुरिगार्षीत्रिष्टुप् ४६। स्वराडनुष्टुप् ५३। भुरिगुष्णिक् ५७, ५९। भुरिगुपरिष्टाद्बृहती ५८। आर्षीपङ्क्तिः ६०, ११०। आर्षीजगती ६५, ७४। त्रिष्टुप् ६९। विराट्पङ्क्तिः ७१। भुरिगार्षीगायत्री ७३। अनुष्टुप् ७५, ७६, ७८-८१, ८५, ९१, ९६, ९७। विराडार्ष्यनुष्टुप् ९३। विराड्बृहती १००। निचृदुष्णिक् १०३। भुरिग्गायत्री १०४। निचृत्पङ्क्तिः १०६, १०८। निचृदार्षीपङ्क्तिः १०९। स्वराडार्षीपङ्क्तिः १११। निचृद्गायत्री ११२, ११५। आसुर्युष्णिक् ११४॥

स्वरः—पञ्चमः १, १३, २५, ४८, ४९, ५१, ६०, ६३, ७१, १०६-१११, ११३। धैवतः २, ६, ८, १२, १५, १८-२४, २६-२९, ३३-३५, ४२, ४४-४७, ६१, ६२,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रजापतये त्वा जुष्टं प्रोक्षामीन्द्राग्निभ्यां त्वा जुष्टं प्रोक्षामि
वायवे त्वा जुष्टं प्रोक्षामि विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यो जुष्टं
प्रोक्षामि सर्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यो जुष्टं प्रोक्षामि। योऽअर्वन्तं
जिघांᳬसति तमभ्यमीति वरुणः। परो मर्त्तः परः श्वा ॥५॥
अग्नये स्वाहा सोमाय स्वाहापां मोदाय स्वाहा सवित्रे
स्वाहा वायवे स्वाहा विष्णवे स्वाहेन्द्राय स्वाहा बृहस्पतये
स्वाहा मित्राय स्वाहा वरुणाय स्वाहा ॥६॥
[क]हिङ्काराय स्वाहा हिङ्कृताय स्वाहा क्रन्दते स्वाहाऽवक्रन्दाय
स्वाहा प्रोथते स्वाहा प्रप्रोथाय स्वाहा गन्धाय स्वाहा घ्राताय स्वाहा
निविष्टाय स्वाहोपविष्टाय स्वाहा सन्दिताय स्वाहा वल्गते [र]स्वाहा-
सीनाय स्वाहा शयानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा जाग्रते स्वाहा
कूजते स्वाहा प्रबुद्धाय स्वाहा विजृम्भमाणाय स्वाहा विचृताय स्वाहा
सᳬहानाय स्वाहोपस्थिताय स्वाहाऽयनाय स्वाहा प्रायणाय स्वाहा ॥७॥
[क]यते स्वाहा धावते स्वाहोद्द्रावाय स्वाहोद्द्रुताय स्वाहा शूकाराय
स्वाहा शूकृताय स्वाहा निषण्णाय स्वाहोत्थिताय स्वाहा जवाय
स्वाहा बलाय स्वाहा विवर्त्तमानाय स्वाहा विवृत्ताय स्वाहा
विधून्वानाय स्वाहा [र]विधूताय स्वाहा शुश्रूषमाणाय स्वाहा शृण्वते
स्वाहेक्षमाणाय स्वाहेक्षिताय स्वाहा वीक्षिताय स्वाहा निमेषाय
स्वाहा यदत्ति तस्मै स्वाहा यत्पिबति तस्मै स्वाहा यन्मूत्रं करोति
तस्मै स्वाहा कुर्वते स्वाहा कृताय स्वाहा ॥८॥
तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् ॥९॥
हिरण्यपाणिमूतये सवितारमुप ह्वये। स चेत्ता देवता पदम् ॥१०॥
देवस्य चेततो महीं प्र सवितुर्हवामहे। सुमतिᳬसत्यराधसम् ॥११॥
सुष्टुतिᳬसुमतीवृधो रातिᳬसवितुरीमहे। प्र देवाय मतीविदे ॥१२॥
रातिᳬसत्पतिं महे सवितारमुप ह्वये। आसवं देववीतये ॥१३॥
देवस्य सवितुर्मतिमासवं विश्वदेव्यम्। धिया भगं मनामहे ॥१४॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्निꣳस्तोमेन बोधय समिधानोऽअमर्त्यम्। हव्या देवेषु नो दधत् ॥१५॥
स हव्यवाडमर्त्यऽउशिग्दूतश्चनोहितः। अग्निर्धिया समृण्वति ॥१६॥
अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे। देवाँ२॥ऽआ सादयादिह ॥१७॥
अजीजनो हि पवमान सूर्यं विधारे शक्मना पयः ।
गोजीरया रꣳहमाणः पुरन्ध्या ॥१८॥
विभूर्मात्रा प्रभूः पित्राश्वोऽसि हयोऽस्यत्योऽसि मयोऽस्यर्वासि सप्तिरसि वाज्यसि वृषासि नृमणाऽअसि। ययुर्नामाऽसि शिशुर्नामास्यादित्यानां पत्वान्विहि देवाऽआशापालाऽएतं देवेभ्योऽश्वं मेधाय प्रोक्षितꣳरक्षतेह रन्तिरिह रमतामिह धृतिरिह स्वधृतिः स्वाहा ॥१९॥
ककाय स्वाहा कस्मै स्वाहा कतमस्मै स्वाहा स्वाहाधिमाधीताय स्वाहा मनः प्रजापतये स्वाहा चित्तं विज्ञातायादित्यै स्वाहादित्यै मह्यै स्वाहादित्यै सुमृडीकायै स्वाहा सरस्वत्यै स्वाहा सरस्वत्यै पावकायै स्वाहा रसरस्वत्यै बृहत्यै स्वाहा पूष्णे स्वाहा पूष्णे प्रपथ्याय स्वाहा पूष्णे नरन्धिषाय स्वाहा त्वष्ट्रे स्वाहा त्वष्ट्रे तुरीपाय स्वाहा त्वष्ट्रे पुरुरूपाय स्वाहा विष्णवे स्वाहा विष्णवे निभूयपाय स्वाहा विष्णवे शिपिविष्टाय स्वाहा ॥२०॥
विश्वो देवस्य नेतुर्मर्त्तो वुरीत सख्यम् ।
विश्वो रायऽइषुध्यति द्युम्नं वृणीत पुष्यसे स्वाहा ॥२१॥
आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूरऽइषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामेनिकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् ॥२२॥
प्राणाय स्वाहापानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा चक्षुषे स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा ॥२३॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राच्यै दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहा दक्षिणायै दिशे स्वाहार्वाच्यै
दिशे स्वाहा प्रतीच्यै दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहोदीच्यै दिशे
स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहोर्ध्वायै दिशे स्वहार्वाच्यै दिशे स्वाहावाच्यै
दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहा ॥२४॥
अद्भ्यः स्वाहा वार्भ्यः स्वाहोदकाय स्वाहा तिष्ठन्तीभ्यः स्वाहा स्रवन्तीभ्यः
स्वाहा स्यन्दमानाभ्यः स्वाहा कूप्याभ्यः स्वाहा सूद्याभ्यः स्वाहा धार्याभ्यः
स्वाहार्णवाय स्वाहा समुद्राय स्वाहा सरिराय स्वाहा ॥२५॥
वाताय स्वाहा धूमाय स्वाहाभ्राय स्वाहा मेघाय स्वाहा विद्योतमानाय
स्वाहा स्तनयते स्वाहावस्फूर्जते स्वाहा वर्षते स्वाहाववर्षते
स्वाहोग्रं वर्षते स्वाहा शीघ्रं वर्षते स्वाहोद्गृह्णते स्वाहोद्गृहीताय
स्वाहा प्रुष्णते स्वाहा शीकायते स्वाहा प्रुष्वाभ्यः स्वाहा ह्रादुनीभ्यः
स्वाहा नीहाराय स्वाहा ॥२६॥
अग्नये स्वाहा सोमाय स्वाहेन्द्राय स्वाहा पृथिव्यै स्वाहान्तरिक्षाय
स्वाहा दिवे स्वाहा दिग्भ्यः स्वाहाशाभ्यः स्वाहोर्व्यै दिशे
स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहा ॥२७॥
कनक्षत्रेभ्यः स्वाहा नक्षत्रियेभ्यः स्वाहाहोरात्रेभ्यः स्वाहार्धमासेभ्यः
स्वाहा मासेभ्यः स्वाहऽऋतुभ्यः स्वाहार्त्तवेभ्यः स्वाहा संवत्सराय
स्वाहा द्यावापृथिवीभ्याᳬस्वाहा चन्द्राय स्वाहा सूर्याय स्वाहा
रश्मिभ्यः स्वाहा वसुभ्यः स्वाहा रुद्रेभ्यः स्वाहादित्येभ्यः स्वाहा
मरुद्भ्यः स्वाहा विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा मूलेभ्यः स्वाहा
शाखाभ्यः स्वाहा वनस्पतिभ्यः स्वाहा पुष्पेभ्यः स्वाहा फलेभ्यः
स्वाहौषधीभ्यः स्वाहा ॥२८॥
पृथिव्यै स्वाहान्तरिक्षाय स्वाहा दिवे स्वाहा सूर्याय स्वाहा
चन्द्राय स्वाहा नक्षत्रेभ्यः स्वाहाद्भ्यः स्वाहौषधीभ्यः स्वाहा
वनस्पतिभ्यः स्वाहा परिप्लवेभ्यः स्वाहा चराचरेभ्यः स्वाहा
सरीसृपेभ्यः स्वाहा ॥२९॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असवे स्वाहा वसवे स्वाहा विभुवे स्वाहा विवस्वते स्वाहा
गणश्रिये स्वाहा गणपतये स्वाहाभिभुवे स्वाहाधिपतये स्वाहा
शूषाय स्वाहा सꣳसर्पाय स्वाहा चन्द्राय स्वाहा ज्योतिषे स्वाहा
मलिम्लुचाय स्वाहा दिवा पतयते स्वाहा ॥३०॥

मधवे स्वाहा माधवाय स्वाहा शुक्राय स्वाहा शुचये स्वाहा नभसे
स्वाहा नभस्याय स्वाहेषाय स्वाहोर्जाय स्वाहा सहसे स्वाहा
सहस्याय स्वाहा तपसे स्वाहा तपस्याय स्वाहाꣳहसस्पतये स्वाहा ॥३१॥

वाजाय स्वाहा प्रसवाय स्वाहापिजाय स्वाहा क्रतवे स्वाहा स्वः
स्वाहा मूर्ध्ने स्वाहा व्यश्नुविने स्वाहान्त्याय स्वाहान्त्याय भौवनाय
स्वाहा भुवनस्य पतये स्वाहाधिपतये स्वाहा प्रजापतये स्वाहा ॥३२॥

[क]आयुर्यज्ञेन कल्पताꣳस्वाहा प्राणो यज्ञेन कल्पताꣳस्वाहापानो
यज्ञेन कल्पताꣳस्वाहा व्यानो यज्ञेन कल्पताꣳस्वाहोदानो यज्ञेन
कल्पताꣳस्वाहा समानो यज्ञेन कल्पताꣳस्वाहा चक्षुर्यज्ञेन कल्पताꣳ
स्वाहा श्रोत्रं यज्ञेन कल्पताꣳस्वाहा [र]वाग्यज्ञेन कल्पताꣳस्वाहा
मनो यज्ञेन कल्पताꣳस्वाहात्मा यज्ञेन कल्पताꣳस्वाहा ब्रह्मा यज्ञेन
कल्पताꣳस्वाहा ज्योतिर्यज्ञेन कल्पताꣳस्वाहा स्वर्यज्ञेन कल्पताꣳ
स्वाहा पृष्ठं यज्ञेन कल्पताꣳस्वाहा यज्ञो यज्ञेन कल्पताꣳस्वाहा ॥३३॥

एकस्मै स्वाहा द्वाभ्याꣳस्वाहा शताय स्वाहैकशताय स्वाहा व्युष्ट्यै
स्वाहा स्वर्गाय स्वाहा ॥३४॥

इति द्वाविंशोऽध्यायः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ त्रयोविंशोऽध्यायः

—:०:—

ऋषिः—प्रजापतिः १-६५।

देवता—परमेश्वरः १-५, ५२। सूर्यः ६, १०। इन्द्रः ७। वाय्यवादयः ८। जिज्ञासुः ९, ११, ४५, ४७। विद्युदादयः १२। ब्रह्मादयः १३, ४८। ब्रह्मा १४। विद्वान् १५। सविता १६। अग्न्यादयः १७। प्राणादयः १८। गणपतिः १९। राजप्रजे २०, २२, २३, ३१। न्यायाधीशः २१। भूमिसूर्यौ २४, २५। श्रीः २६, २७। प्रजापतिः २८। विद्वांसः २९, ३३। राजा ३०, ३२, ४३, ४४। प्रजा ३४, ३५, ४०, ४१। स्त्रियः ३६, ३७। सभासदः ३८। अध्यापकः ३९, ४२। सूर्यादयः ४६। प्रष्टृसमाधातारौ ४९। ईश्वरः ५०, ६४, ६५। पुरुषेश्वरः ५१। प्रष्टा ५३, ५५, ५७, ५९, ६१। समाधाता ५४, ५६, ६०, ६२, ६३। समिधा ५८॥

छन्दः—त्रिष्टुप् १, ३, ६०। निचृदाकृतिः २। विकृतिः ४। गायत्री ५। विराड्गायत्री ६। निचृद्बृहती ७। निचृदत्यष्टिः ८। निचृदनुष्टुप् ९, १२, १४, २४, २८, ३०, ३४, ४५, ५४। अनुष्टुप् १०, ११, २५-२७, २९, ३१, ३२, ३७, ४०, ४१, ४३, ४६-४८, ५३, ५५। भुरिगतिजगती १३। विराडनुष्टुप् १५, २२, ६३। विराड्जगती १६, १८। अतिशक्वरी १७। शक्वरी १९। स्वराडनुष्टुप् २०। भुरिग्गायत्री २१, ३९। बृहती २३। उष्णिक् ३३, ४४। भुरिगुष्णिक् ३५, ३६, ४२। निचृत्त्रिष्टुप् ३८, ४९, ५०, ५७-५९, ६१। पङ्क्तिः ५१। विराट्त्रिष्टुप् ५२, ६२, ६५। स्वराडुष्णिक् ५६। विराडुष्णिक् ६४॥

स्वरः—धैवतः १, ३, १९, ३८, ४९, ५०, ५२, ५७-६२, ६५। पञ्चमः २, १७, ५१। मध्यमः ४, ७, २३। षड्जः ५, ६, २१, ३९। गान्धारः ८-१२, १४, १५, २०, २२, २४-३२, ३४, ३७, ४०, ४१, ४३, ४५-४८, ५३-५५, ६३। निषादः १३, १६, १८। ऋषभः ३३, ३५, ३६, ४२, ४४, ५६, ६४॥

हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत् ।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥१॥

उपयामगृहीतोऽसि प्रजापतये त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिः सूर्यस्ते महिमा। यस्तेऽहन्त्संवत्सरे महिमा सम्बभूव यस्ते वायावन्तरिक्षे महिमा सम्बभूव यस्ते दिवि सूर्ये महिमा सम्बभूव तस्मै ते महिम्ने प्रजापतये स्वाहा देवेभ्यः ॥२॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यः प्राणतो निमिषतो महित्वैकऽइद्राजा जगतो बभूव ।
यऽईशेऽअस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥३॥
उपयामगृहीतोऽसि प्रजापतये त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिश्चन्द्रमास्ते
महिमा। यस्ते रात्रौ संवत्सरे महिमा सम्बभूव यस्ते पृथिव्यामग्नौ
महिमा सम्बभूव यस्ते नक्षत्रेषु चन्द्रमसि महिमा सम्बभूव तस्मै
ते महिम्ने प्रजापतये देवेभ्यः स्वाहा ॥४॥
युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं चरन्तं परि तस्थुषः। रोचन्ते रोचना दिवि ॥५॥
युञ्जन्त्यस्य काम्या हरी विपक्षसा रथे। शोणा धृष्णू नृवाहसा ॥६॥
यद्वातोऽअपोऽअगनीगन्प्रियामिन्द्रस्य तन्वम् ।
एतꣳस्तोतरनेन पथा पुनरश्वमावर्त्तयासि नः ॥७॥
वसवस्त्वाञ्जन्तु गायत्रेण छन्दसा रुद्रास्त्वाञ्जन्तु त्रैष्टुभेन
छन्दसादित्यास्त्वाञ्जन्तु जागतेन छन्दसा। भूर्भुवः स्वर्लाजी३॥ञ्छा-
ची३॥न्यव्ये गव्यऽएतदन्नमत्त देवाऽएतदन्नमद्धि प्रजापते ॥८॥

कः स्विदेकाकी चरति कऽउ स्विज्जायते पुनः ।
किꣳस्विद्धिमस्य भेषजं किम्वावपनं महत् ॥९॥
सूर्यऽएकाकी चरति चन्द्रमा जायते पुनः ।
अग्निर्हिमस्य भेषजं भूमिरावपनं महत् ॥१०॥
का स्विदासीत्पूर्वचित्तिः किꣳस्विदासीद् बृहद्वयः।
का स्विदासीत्पिलिप्पिला का स्विदासीत्पिशङ्गिला॥११॥
द्यौरासीत्पूर्वचित्तिरश्वऽआसीद् बृहद्वयः ।
अविरासीत्पिलिप्पिला रात्रिरासीत्पिशङ्गिला ॥१२॥

वायुष्ट्वा पचतैरवत्वसितग्रीवश्छागैर्न्यग्रोधश्चमसैः शल्मलिर्वृद्ध्या। एष
स्य राथ्यो वृषा पड्भिश्चतुर्भिरेदगन्ब्रह्माकृष्णश्च नोऽवतु नमोऽग्नये॥१३॥
सꣳशितो रश्मिना रथः सꣳशितो रश्मिना हयः ।
सꣳशितो अप्स्वप्सुजा ब्रह्मा सोमपुरोगवः ॥१४॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वयं वाजिँस्तन्वं कल्पयस्व स्वयं यजस्व स्वयं जुषस्व ।
महिमा तेऽन्येन न सन्नशे ॥१५॥
न वाऽउऽएतन्म्रियसे न रिष्यसि देवाँ२॥ऽइदेषि पथिभिः सुगेभिः ।
यत्रासते सुकृतो यत्र ते ययुस्तत्र त्वा देवः सविता दधातु ॥१६॥
अग्निः पशुरासीत्तेनायजन्त सऽएतं लोकमजयद्यस्मिन्नग्निः स ते
लोको भविष्यति तं जेष्यसि पिबैताऽअपः । वायुः पशुरासीत्तेनायजन्त
सऽएतं लोकमजयद्यस्मिन्वायुः स ते लोको भविष्यति तं जेष्यसि
पिबैताऽअपः। सूर्यः पशुरासीत्तेनायजन्त सऽएतं लोकमजयद्यस्मिन्त्सूर्यः
स ते लोको भविष्यति तं जेष्यसि पिबैताऽअपः ॥१७॥

प्राणाय स्वाहापानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा ।
अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन ।
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ॥१८॥
गणानां त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिꣳ
हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिꣳ हवामहे वसो मम ।
आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ॥१९॥
ताऽउभौ चतुरः पदः सम्प्रसारयाव स्वर्गे लोके
प्रोर्णुवाथां वृषा वाजी रेतोधा रेतो दधातु ॥२०॥
उत्सक्थ्याऽअव गुदं धेहि समञ्जिं चारया वृषन् ।
य स्त्रीणां जीवभोजनः ॥२१॥
यकासकौ शकुन्तिकाहलगिति वञ्चति ।
आहन्ति गभे पसो निगल्गलीति धारका ॥२२॥
यकोऽसकौ शकुन्तकऽआहलगिति वञ्चति ।
विवक्षतऽइव ते मुखमध्वर्यो मा नस्त्वमभि भाषथाः ॥२३॥
माता च ते पिता च तेऽग्रं वृक्षस्य रोहतः ।
प्रतिलामीति ते पिता गभे मुष्टिमतꣳसयत् ॥२४॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माता च ते पिता च तेऽग्रं वृक्षस्य क्रीडतः ।
विवक्षतऽइव ते मुखं ब्रह्मन्मा त्वं वदो बहु ॥२५॥
ऊर्ध्वामेनामुच्छ्रापय गिरौ भारꣳहरन्निव ।
अथास्यै मध्यमेधताꣳशीते वाते पुनन्निव ॥२६॥
ऊर्ध्वमेनमुच्छ्रयताद् गिरौ भारꣳहरन्निव ।
अथास्य मध्यमेजतु शीते वाते पुनन्निव ॥२७॥
यदस्याऽअꣳहुभेद्याः कृधु स्थूलमुपातसत् ।
मुष्काविदस्याऽएजतो गोशफे शकुलाविव ॥२८॥
यद्देवासो ललामगुं प्र विष्टीमिनमाविषुः ।
सक्थ्ना देदिश्यते नारी सत्यस्याक्षिभुवो यथा ॥२९॥
यद्धरिणो यवमत्ति न पुष्टं पशु मन्यते ।
शूद्रा यदर्यजारा न पोषाय धनायति ॥३०॥
यद्धरिणो यवमत्ति न पुष्टं बहु मन्यते ।
शूद्रो यदर्यायै जारो न पोषमनु मन्यते ॥३१॥
दधिक्राव्णोऽअकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः ।
सुरभि नो मुखा करत्प्र णऽआयूꣳषि तारिषत् ॥३२॥
गायत्री त्रिष्टुब्जगत्यनुष्टुप्पङ्क्त्या सह ।
बृहत्युष्णिहा ककुप्सूचीभिः शम्यन्तु त्वा ॥३३॥
द्विपदा याश्चतुष्पदास्त्रिपदा याश्च षट्पदाः ।
विच्छन्दा याश्च सच्छन्दाः सूचीभिः शम्यन्तु त्वा ॥३४॥
महानाम्न्यो रेवत्यो विश्वा आशाः प्रभूवरीः ।
मैघीर्विद्युतो वाचः सूचीभिः शम्यन्तु त्वा ॥३५॥
नार्यस्ते पत्न्यो लोम विचिन्वन्तु मनीषया ।
देवानां पत्न्यो दिशः सूचीभिः शम्यन्तु त्वा ॥३६॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजता हरिणीः सीसा युजो युज्यन्ते कर्मभिः ।
अश्वस्य वाजिनस्त्वचि सिमाः शम्यन्तु शम्यन्तीः ॥३७॥
कुविदङ्ग यवमन्तो यवञ्चिद्यथा दान्त्यनुपूर्वं वियूय ।
इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नमऽउक्तिं यजन्ति ॥३८॥
कस्त्वा छ्यति कस्त्वा विशास्ति कस्ते गात्राणि शम्यति ।
कऽउ ते शमिता कविः ॥३९॥
ऋतवस्तऽऋतुथा पर्व शमितारो वि शासतु ।
संवत्सरस्य तेजसा शमीभिः शम्यन्तु त्वा ॥४०॥
अर्द्धमासाः परूꣳषि ते मासाऽआ च्छ्यन्तु शम्यन्तः ।
अहोरात्राणि मरुतो विलिष्टꣳसूदयन्तु ते ॥४१॥
दैव्याऽअध्वर्यवस्त्वाच्छ्यन्तु वि च शासतु ।
गात्राणि पर्वशस्ते सिमाः कृण्वन्तु शम्यन्तीः ॥४२॥
द्यौस्ते पृथिव्यन्तरिक्षं वायुश्छिद्रं पृणातु ते ।
सूर्यस्ते नक्षत्रैः सह लोकं कृणोतु साधुया ॥४३॥
शं ते परेभ्यो गात्रेभ्यः शमस्त्ववरेभ्यः ।
शमस्थभ्यो मज्जभ्यः शम्वस्तु तन्वै तव ॥४४॥
कः स्विदेकाकी चरति कऽउ स्विज्जायते पुनः ।
किꣳस्विद्धिमस्य भेषजं किम्वावपनं महत् ॥४५॥
सूर्यऽएकाकी चरति चन्द्रमा जायते पुनः ।
अग्निर्हिमस्य भेषजं भूमिरावपनं महत् ॥४६॥
किꣳस्वित्सूर्यसमं ज्योतिः किꣳसमुद्रसमꣳसरः ।
किꣳस्वित्पृथिव्यै वर्षीयः कस्य मात्रा न विद्यते ॥४७॥
ब्रह्म सूर्यसमं ज्योतिर्द्यौः समुद्रसमꣳसरः ।
इन्द्रः पृथिव्यै वर्षीयान् गोस्तु मात्रा न विद्यते ॥४८॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृच्छामि त्वा चितये देवसख यदि त्वमत्र मनसा जगन्थ ।
येषु विष्णुस्त्रिषु पदेष्वेष्टस्तेषु विश्वं भुवनमा विवेशाँ३॥ऽ ॥४९॥
अपि तेषु त्रिषु पदेष्वस्मि येषु विश्वं भुवनमा विवेश ।
सद्यः पर्येमि पृथिवीमुत द्यामेकेनाङ्गेन दिवोऽअस्य पृष्ठम् ॥५०॥
केष्वन्तः पुरुषऽआ विवेश कान्यन्तः पुरुषेऽअर्पितानि ।
एतद् ब्रह्मन्नुप वल्हामसि त्वा किंस्वित्रः प्रति वोचास्यत्र ॥५१॥
पञ्चस्वन्तः पुरुषऽआ विवेश तान्यन्तः पुरुषेऽअर्पितानि ।
एतत्त्वात्र प्रतिमन्वानोऽअस्मि न मायया भवस्युत्तरो मत् ॥५२॥

का स्विदासीत्पूर्वचित्तिः किंस्विदासीद् बृहद्वयः ।
का स्विदासीत्पिलिप्पिला का स्विदासीत्पिशङ्गिला ॥५३॥
द्यौरासीत्पूर्वचित्तिरश्वऽआसीद् बृहद्वयः ।
अविरासीत्पिलिप्पिला रात्रिरासीत्पिशङ्गिला ॥५४॥
काऽईमरे पिशङ्गिला काऽईं कुरुपिशङ्गिला ।
कऽईमास्कन्दमर्षति कऽईं पन्थां वि सर्पति ॥५५॥
अजारे पिशङ्गिला श्वावित्कुरुपिशङ्गिला ।
शशऽआस्कन्दमर्षत्यहिः पन्थां वि सर्पति ॥५६॥

कत्यस्य विष्ठाः कत्यक्षराणि कति होमासः कतिधा समिद्धः ।
यज्ञस्य त्वा विदथा पृच्छमत्र कति होतारऽऋतुशो यजन्ति ॥५७॥
षडस्य विष्ठाः शतमक्षराण्यशीतिर्होमाः समिधो ह तिस्रः ।
यज्ञस्य ते विदथा प्र ब्रवीमि सप्त होतारऽऋतुशो यजन्ति ॥५८॥
कोऽअस्य वेद भुवनस्य नाभिं को द्यावापृथिवीऽअन्तरिक्षम् ।
कः सूर्यस्य वेद बृहतो जनित्रं को वेद चन्द्रमसं यतोजाः ॥५९॥
वेदाहमस्य भुवनस्य नाभिं वेद द्यावापृथिवीऽअन्तरिक्षम् ।
वेद सूर्यस्य बृहतो जनित्रमथो वेद चन्द्रमसं यतोजाः ॥६०॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृच्छामि त्वा परमन्तं पृथिव्याः पृच्छामि यत्र भुवनस्य नाभिः ।
पृच्छामि त्वा वृष्णोऽअश्वस्य रेतः पृच्छामि वाचः परमं व्योम ॥६१॥
इयं वेदिः परोऽअन्तः पृथिव्याऽअयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः ।
अयꣳसोमो वृष्णोऽअश्वस्य रेतो ब्रह्मायं वाचः परमं व्योम ॥६२॥
सुभूः स्वयम्भूः प्रथमोऽन्तर्महत्यर्णवे ।
दधे ह गर्भमृत्वियं यतो जातः प्रजापतिः ॥६३॥
होता यक्षत्प्रजापतिꣳसोमस्य महिम्नः । जुषतां पिबतु सोमꣳहोतर्यज ॥६४॥
प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परि ता बभूव ।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽअस्तु वयꣳस्याम पतयो रयीणाम् ॥६५॥

इति त्रयोविंशोऽध्यायः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ चतुर्विंशोऽध्यायः

—:०:—

ऋषिः—प्रजापतिः १-४०।

देवता—प्रजापतिः १। सोमादयः २। अश्व्यादयः ३। मारुतादयः ४। विश्वेदेवाः ५। अग्न्यादयः ६, ९, १२, १४, १६, २३, ३४। इन्द्रादयः ७, १५। इन्द्राग्न्यादयः ८, १७। अन्तरिक्षादयः १०। वसन्तादयः ११, २०। विराजादयः १३। पितरः १८। वायुः १९। वरुणः २१। सोमादयः २२, २४, ३२। कालावयवाः २५। भूम्यादयः २६। वस्वादयः २७। ईशानादयः २८। प्रजापत्यादयः २९-३१। मित्रादयः ३३। चन्द्रादयः ३५। अश्विन्यादयः ३६। अर्धमासादयः ३७। वर्षादयः ३८। आदित्यादयः ३९। विश्वेदेवादयः ४०॥

छन्दः—भुरिक्संकृतिः १। निचृत्संकृतिः २। निचृदतिजगती ३। विराडतिधृतिः ४। निचृद्बृहती ५, २७। विराट्पङ्क्तिः ६। अतिजगती ७। विराड्बृहती ८, ११। निचृत्पङ्क्तिः ९। विराड्गायत्री १०। स्वराडनुष्टुप् १२। निचृदनुष्टुप् १३। भुरिगतिजगती १४, १८। विराडुष्णिक् १५। शक्वरी १६, ४०। भुरिग्गायत्री १७। त्रिपाद्गायत्री १९। विराड्जगती २०। बृहती २१, २८। विराड्बृहती २२। पङ्क्तिः २३। भुरिक्पङ्क्तिः २४। स्वराट्पङ्क्तिः २५। भुरिगनुष्टुप् २६। विराडनुष्टुप् २९। निचृदतिधृतिः ३०। स्वराट्त्रिष्टुप् ३१, ३९। भुरिग्जगती ३२, ३७। भुरिगतिजगती ३३। स्वराट्शक्वरी ३४। निचृच्छक्वरी ३५। निचृज्जगती ३६। स्वराड्जगती ३८॥

स्वरः—गान्धारः १, २, १२, १३, २६, २९। निषादः ३, ७, १४, १८, २०, ३२, ३३, ३६-३८। षड्जः ४, १०, १७, १९, ३०। मध्यमः ५, ८, ११, २१, २२, २७, २८। पञ्चमः ६, ९, २३-२५। ऋषभः १५। धैवतः १६, ३१, ३४, ३५, ३९, ४०॥

अश्वस्तूपरो गोमृगस्ते प्राजापत्याः कृष्णग्रीवऽआग्नेयो रराटे पुरस्तात् सारस्वती मेष्यधस्ताद्धन्वोराश्विनावधोरामौ बाह्वोः सौमापौष्णः श्यामो नाभ्याᳬसौर्ययामौ श्वेतश्च कृष्णश्च पार्श्वयोस्त्वाष्ट्रौ लोमशसक्थौ सक्थ्योर्वायव्यः श्वेतः पुच्छऽइन्द्राय स्वपस्याय वेहद्वैष्णवो वामनः ॥१॥

रोहितो धूम्ररोहितः कर्कन्धुरोहितस्ते सौम्या बभ्रुररुणबभ्रुः शुकबभ्रुस्ते वारुणाः शितिरन्ध्रोऽन्यतः शितिरन्ध्रः समन्तशितिरन्ध्रस्ते सावित्राः शितिबाहुरन्यतःशितिबाहुः समन्तशितिबाहुस्ते बार्हस्पत्याः पृषती क्षुद्रपृषती स्थूलपृषती ता मैत्रावरुण्यः ॥२॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽआश्विनाः श्येतः
श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामाऽअवलिप्ता
रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः ॥३॥
पृश्निस्तिरश्चीनपृश्निरूर्ध्वपृश्निस्ते मारुताः फल्गूर्लोहितोर्णी
पलक्षी ताः सारस्वत्यः प्लीहाकर्णः शुण्ठाकर्णोऽध्यालोहकर्णस्ते
त्वाष्ट्राः कृष्णग्रीवः शितिकक्षोऽञ्जिसक्थस्तऽऐन्द्राग्नाः
कृष्णाञ्जिरल्पाञ्जिर्महाञ्जिस्तऽउषस्याः ॥४॥
शिल्पा वैश्वदेव्यो रोहिण्यस्त्र्यवयो वाचेऽविज्ञाताऽअदित्यै
सरूपा धात्रे वत्सतर्यो देवानां पत्नीभ्यः ॥५॥
कृष्णग्रीवाऽआग्नेयाः शितिभ्रवो वसूनाꣳरोहिता रुद्राणाꣳश्वेताऽ
अवरोकिणऽआदित्यानां नभोरूपाः पार्जन्याः ॥६॥
उन्नतऽऋषभो वामनस्तऽऐन्द्रावैष्णवाऽउन्नतः शितिबाहुः
शितिपृष्ठस्तऽ ऐन्द्राबार्हस्पत्याः शुकरूपा वाजिनाः
कल्माषाऽआग्निमारुताः श्यामाः पौष्णाः ॥७॥
एताऽऐन्द्राग्ना द्विरूपाऽअग्नीषोमीया वामनाऽअनड्वाहऽ
आग्नावैष्णवा वशा मैत्रावरुण्योऽन्यतऽएन्यो मैत्र्यः ॥८॥
कृष्णग्रीवाऽआग्नेया बभ्रवः सौम्याः श्वेता वायव्याऽअविज्ञाताऽ
अदित्यै सरूपा धात्रे वत्सतर्यो देवानां पत्नीभ्यः ॥९॥
कृष्णा भौमा धूम्राऽआन्तरिक्षा बृहन्तो दिव्याः शबला
वैद्युताः सिध्मास्तारकाः ॥१०॥
धूम्रान् वसन्तायालभते श्वेतान् ग्रीष्माय कृष्णान्
वर्षाभ्योऽरुणाञ्छरदे पृषतो हेमन्ताय पिशङ्गाञ्छिशिराय ॥११॥
त्र्यवयो गायत्र्यै पञ्चावयस्त्रिष्टुभे दित्यवाहो जगत्यै
त्रिवत्साऽअनुष्टुभे तुर्यवाहऽउष्णिहे ॥१२॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृष्ठवाहौ विराजऽउक्षाणो बृहत्याऽऋषभाः ककुभेऽनड्वाहः
पङ्क्त्यै धेनवोऽतिछन्दसे ॥१३॥
कृष्णग्रीवाऽआग्नेया बभ्रवः सौम्याऽउपध्वस्ताः सावित्रा
वत्सतर्यः सारस्वत्यः श्यामाः पौष्णाः पृश्नयो मारुता
बहुरूपा वैश्वदेवा वशा द्यावापृथिवीयाः ॥१४॥
उक्ताः सञ्चराऽएताऽऐन्द्राग्नाः कृष्णा वारुणाः पृश्नयो
मारुताः कायास्तूपराः ॥१५॥
अग्नयेऽनीकवते प्रथमजानालभते मरुद्भ्यः सान्तपनेभ्यः सवात्यान्
मरुद्भ्यो गृहमेधिभ्यो बष्किहान् मरुद्भ्यः क्रीडिभ्यः सꣳसृष्टान्
मरुद्भ्यः स्वतवद्भ्योऽनुसृष्टान् ॥१६॥
उक्ताः सञ्चराऽएताऽऐन्द्राग्नाः प्राशृङ्गा माहेन्द्रा बहुरूपा वैश्वकर्मणाः ॥१७॥
धूम्रा बभ्रुनीकाशाः पितॄणाꣳसोमवतां बभ्रवो धूम्रनीकाशाः
पितॄणां बर्हिषदां कृष्णा बभ्रुनीकाशाः पितॄणामग्निष्वात्तानां
कृष्णाः पृषन्तस्त्रैयम्बकाः ॥१८॥
उक्ताः सञ्चराऽएताः शुनासीरीयाः श्वेता वायव्याः श्वेताः सौर्याः ॥१९॥
वसन्ताय कपिञ्जलानालभते ग्रीष्माय कलविङ्कान्
वर्षाभ्यस्तित्तिरीञ्छरदे वर्त्तिका हेमन्ताय ककरााञ्छिशिराय विककरान् ॥२०॥
समुद्राय शिशुमारानालभते पर्जन्याय मण्डूकानद्भ्यो मत्स्यान्
मित्राय कुलीपयान् वरुणाय नाक्रान् ॥२१॥
सोमाय हꣳसानालभते वायवे बलाकाऽइन्द्राग्निभ्यां क्रुञ्चान्
मित्राय मद्गून् वरुणाय चक्रवाकान् ॥२२॥
अग्नये कुटरूनालभते वनस्पतिभ्यऽउलूकानग्नीषोमाभ्यां
चाषानश्विभ्यां मयूरान् मित्रावरुणाभ्यां कपोतान् ॥२३॥
सोमाय लबानालभते त्वष्ट्रे कौलीकान् गोषादीर्देवानां पत्नीभ्यः
कुलीका देवजामिभ्योऽग्नये गृहपतये पारुष्णान् ॥२४॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अह्ने पारावतानालभते रात्र्यै सीचापूरहोरात्रयोः सन्धिभ्यो
जतूर्मासेभ्यो दात्यौहान्त्संवत्सराय महतः सुपर्णान् ॥२५॥
भूम्याऽआखूनालभतेऽन्तरिक्षाय पाङ्क्त्रान् दिवे कशान् दिग्भ्यो
नकुलान् बभ्रुकानवान्तरदिशाभ्यः ॥२६॥
वसुभ्यऽऋश्यानालभते रुद्रेभ्यो रुरूनादित्येभ्यो न्यङ्कून्
विश्वेभ्यो देवेभ्यः पृषतान्त्साध्येभ्यः कुलुङ्गान् ॥२७॥
ईशानाय परस्वतऽआलभते मित्राय गौरान् वरुणाय महिषान्
बृहस्पतये गवयाँस्त्वष्ट्रऽउष्ट्रान् ॥२८॥
प्रजापतये पुरुषान् हस्तिनऽआलभते वाचे प्लुषींश्चक्षुषे
मशकाञ्छ्रोत्राय भृङ्गाः ॥२९॥
प्रजापतये च वायवे च गोमृगो वरुणायारण्यो मेषो यमाय कृष्णो
मनुष्यराजाय मर्कटः शार्दूलाय रोहिदृषभाय गवयी क्षिप्रश्येनाय
वर्त्तिका नीलङ्गोः क्रिमिः समुद्राय शिशुमारो हिमवते हस्ती ॥३०॥
मयुः प्राजापत्यऽउलो हलिक्ष्णो वृषदंशस्ते धात्रे दिशां कङ्को
धुङ्क्षाग्नेयी कलविङ्को लोहिताहिः पुष्करसादस्ते त्वाष्ट्रा वाचे क्रुञ्चः ॥३१॥
सोमाय कुलुङ्गऽआरण्योऽजो नकुलः शका ते पौष्णाः
क्रोष्टा मायोरिन्द्रस्य गौरमृगः पिद्वो न्यङ्कुः कक्कटस्तेऽनुमत्यै
प्रतिश्रुत्कायै चक्रवाकः ॥३२॥
सौरी बलाका शार्गः सृजयः शयाण्डकस्ते मैत्राः सरस्वत्यै
शारिः पुरुषवाक् श्वाविद्भौमी शार्दूलो वृकः पृदाकुस्ते मन्यवे
सरस्वते शुकः पुरुषवाक् ॥३३॥
सुपर्णः पार्जन्यऽआतिर्वाहसो दर्विदा ते वायवे बृहस्पतये
वाचस्पतये पैङ्गराजोऽलजऽआन्तरिक्षः प्लवो मद्गुर्मत्स्यस्ते
नदीपतये द्यावापृथिवीयः कूर्मः ॥३४॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरुषमृगश्चन्द्रमसो गोधा कालका दार्वाघाटस्ते
वनस्पतीनां कृकवाकुः सावित्रो हंसो वातस्य
नाक्रो मकरः कुलीपयस्तेऽकूपारस्य ह्रियै शल्यकः॥३५॥
एण्यह्नो मण्डूको मूषिका तित्तिरिस्ते सर्पाणां
लोपाशऽआश्विनः कृष्णो रात्र्याऽऋक्षो जतूः
सुषिलीका तऽइतरजनानां जहका वैष्णवी ॥३६॥
अन्यवापोऽर्द्धमासानामृश्यो मयूरः सुपर्णस्ते
गन्धर्वाणामपामुद्रो मासाङ्कश्यपो रोहित्कुण्डृणाची
गोलत्तिका तेऽप्सरसां मृत्यवेऽसितः ॥३७॥
वर्षाहूर्ऋतूनामाखुः कशो मान्थालस्ते पितॄणां
बलायाजगरो वसूनां कपिञ्जलः कपोतऽउलूकः
शशस्ते निर्ऋत्यै वरुणायारण्यो मेषः ॥३८॥
श्वित्रऽआदित्यानामुष्ट्रो घृणीवान्वार्ध्रीनसस्ते
मत्याऽअरण्याय सृमरो रुरू रौद्रः क्वयिः
कुटरुर्दात्यौहस्ते वाजिनां कामाय पिकः ॥३९॥
खड्गो वैश्वदेवः श्वा कृष्णः कर्णो गर्दभस्तरक्षुस्ते
रक्षसामिन्द्राय सूकरः सिंहो मारुतः कृकलासः पिप्पका
शकुनिस्ते शरव्यायै विश्वेषां देवानां पृषतः ॥४०॥

इति चतुर्विंशोऽध्यायः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ पञ्चविंशोऽध्यायः

—:o:—

ऋषिः—प्रजापतिः १-१६, २३, २७। गोतमः १७-२२, २४-२६, २८-४७॥

देवता—सरस्वत्यादयः १। प्राणादयः २। इन्द्रादयः ३, ५, ८। अग्न्यादयः ४। मरुतादयः ६। पूषादयः ७, ९। हिरण्यगर्भः १०। ईश्वरः ११, १२, १८, १९। परमात्मा १३। यज्ञः १४, २६-२९, ३१-३४, ३६, ३८, ४०, ४१। विद्वांसः १५, २०-२२, २५, ३०, ३७, ३९। विश्वेदेवाः १६, ३५, ४६। वायुः १७। द्यौरित्यादयः २३। मित्रादयः २४। यजमानः ४२। आत्मा ४३, ४४। प्रजा ४५। अग्निः ४७॥

छन्दः—भुरिक्शक्वरी १[क], ४६। निचृदतिशक्वरी १[र]। भुरिगतिशक्वर्यौ २। भुरिक्कृतिः ३। स्वराड्धृतिः ४। स्वराड्विकृतिः ५। निचृदतिधृतिः ६। निचृदष्टिः ७। निचृदभिकृतिः ८। भुरिगत्यष्टिः ९। त्रिष्टुप् १०, ११, २२, २३, २७, ३०, ३१, ४१। स्वराट्पङ्क्तिः १२, ३७, ४२, ४५। निचृत्त्रिष्टुप् १३, २१, २४, २५, ३२, ३३, ४०, ४३। निचृज्जगती १४, १८, २६। जगती १५, १६, २०। भुरिक्त्रिष्टुप् १७, २९, ३४, ४४। स्वराड्बृहती १९। विराट्त्रिष्टुप् २८। स्वराट्त्रिष्टुप् ३५। भुरिक्पङ्क्तिः ३६, ३८। विराट्पङ्क्तिः ३९। शक्वरी ४७॥

स्वरः—धैवतः १[क], १०, ११, १३, १७, २१-२५, २७-३५, ४०, ४१, ४३, ४४, ४६, ४७। पञ्चमः १[र], २, १२, ३६-३९, ४२, ४५। निषादः ३, १४-१६, १८, २०, २६। ऋषभः ४, ८। मध्यमः ५, ७, १९। षड्जः ६। गान्धारः ९॥

[क]शादं द॒द्भिरव॑कां दन्तमू॒लैर्मृद॒ं बस्वै॑स्ते॒गान्दꣳष्ट्रा॑भ्या॒ꣳसर॑स्वत्याऽ
अग्रजि॒ह्वं जि॒ह्वाया॑ऽउत्सा॒दम॑वक्र॒न्देन॒ तालु॒ वाज॒ꣳहनु॑भ्याम॒पऽआ॒स्ये॒न
वृष॑णमा॒ण्डाभ्या॒मा॑दि॒त्याँ श्मश्रु॑भि॒ः पन्था॑नं भ्रू॒भ्यां द्यावा॑पृथि॒वी
वर्त्तो॑भ्यां वि॒द्युतं॑ क॒नीन॑काभ्याꣳशु॒क्लाय॒ स्वाहा॑ कृ॒ष्णाय॒ स्वाहा॒
पार्या॑णि॒ पक्ष्मा॒ण्यवा॒र्या॒ऽइ॒क्षवो॑ऽवा॒र्या॒णि॒ पक्ष्मा॑णि॒ पार्या॑ऽइ॒क्षवः॑ ॥१॥

वातं॑ प्रा॒णेना॑पा॒नेन॒ नासि॑केऽउपया॒मम॑ध॒रे॒णौष्ठे॑न॒ सदु॑त्त॑रेण
प्रका॒शेना॒न्त॑रमनूका॒शेन॒ बाह्यं॑ निवे॒ष्यं मू॒र्ध्ना स्त॑नयि॒त्नुं नि॑र्बा॒धेना॒शनिं॑
म॒स्तिष्के॑ण वि॒द्युतं॑ क॒नीन॑काभ्यां॒ कर्णा॑भ्याꣳश्रोत्र॒ꣳश्रोत्रा॑भ्यां॒ कर्णौ॑
तेद॒नीम॑धरक॒ण्ठेना॒पः शु॒ष्कक॒ण्ठेन॒ चि॒त्तं मन्या॑भि॒रदि॑ति॒ꣳशी॒र्ष्णा
निर्ऋ॑तिं॒ निर्ज॑र्जल्येन शी॒र्ष्णा सं॑क्रो॒शैः प्रा॒णान्॒ रे॒ष्मा॑णꣳस्तु॒पेन॑ ॥२॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मशकान् केशैरिन्द्रꣳ स्वपसा वहेन बृहस्पतिꣳ शकुनिसादेन
कूर्मान्छफैराक्रमणꣳ स्थूराभ्यामृक्षलाभिः कपिञ्जलान् जवं
जङ्घाभ्यामध्वानं बाहुभ्यां जाम्बीलेनारण्यमग्निमतिरुग्भ्यां
पूषणं दोर्भ्यामश्विनावꣳसाभ्याꣳ रुद्रꣳ रोराभ्याम् ॥३॥

अग्नेः पक्षतिर्वायोर्निपक्षतिरिन्द्रस्य तृतीया सोमस्य चतुर्थ्यदित्यै
पञ्चमीन्द्राण्यै षष्ठी मरुताꣳ सप्तमी बृहस्पतेरष्टम्यर्यम्णो नवमी
धातुर्दशमीन्द्रस्यैकादशी वरुणस्य द्वादशी यमस्य त्रयोदशी ॥४॥

इन्द्राग्न्योः पक्षतिः सरस्वत्यै निपक्षतिर्मित्रस्य तृतीयापां चतुर्थी
निर्ऋत्यै पञ्चम्यग्नीषोमयोः षष्ठी सर्पाणाꣳ सप्तमी विष्णोरष्टमी
पूष्णो नवमी त्वष्टुर्दशमीन्द्रस्यैकादशी वरुणस्य द्वादशी यम्यै
त्रयोदशी द्यावापृथिव्योर्दक्षिणं पार्श्वं विश्वेषां देवानामुत्तरम् ॥५॥

मरुताꣳ स्कन्धा विश्वेषां देवानां प्रथमा कीकसा रुद्राणां द्वितीयादित्यानां
तृतीया वायोः पुच्छमग्नीषोमयोर्भासदौ क्रुञ्चौ श्रोणिभ्यामिन्द्राबृहस्पतीऽ
ऊरुभ्यां मित्रावरुणावल्गाभ्यामाक्रमणꣳ स्थूराभ्यां बलं कुष्ठाभ्याम् ॥६॥

पूष्णं वनिष्ठुनान्धाहीन्त्स्थूलगुदया सर्पान् गुदाभिर्विह्रुतऽआन्त्रैरपो
वस्तिना वृषणमाण्डाभ्यां वाजिनꣳ शेपेन प्रजाꣳ रेतसा चाषान् पित्तेन
प्रदरान् पायुना कूश्माञ्छकपिण्डैः ॥७॥

इन्द्रस्य क्रोडोऽदित्यै पाजस्यं दिशां जत्रवोऽदित्यै
भसज्जीमूतान् हृदयौपशेनान्तरिक्षं पुरीतता नभऽउदर्येण
चक्रवाकौ मतस्नाभ्यां दिवं वृक्काभ्यां गिरीन्
प्लाशिभिरुपलान् प्लीह्ना वल्मीकान् क्लोमभिर्ग्लौभिर्गुल्मान्
हिराभिः स्रवन्तीर्ह्रदान् कुक्षिभ्याꣳ समुद्रमुदरेण वैश्वानरं भस्मना ॥८॥

विधृतिं नाभ्या घृतꣳ रसेनापो यूष्णा मरीचीर्विप्रुड्भिर्नीहारमूष्मणा
शीनं वसया प्रुष्वाऽअश्रुभिर्ह्रादुनीर्दूषीकाभिरस्ना रक्षाꣳसि
चित्राण्यङ्गैर्नक्षत्राणि रूपेण पृथिवीं त्वचा जुम्बकाय स्वाहा ॥९॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत् ।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥१०॥
यः प्राणतो निमिषतो महित्वैकऽइद्राजा जगतो बभूव ।
यऽईशेऽअस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥११॥
यस्येमे हिमवन्तो महित्वा यस्य समुद्रꣳरसया सहाहुः ।
यस्येमाः प्रदिशो यस्य बाहू कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥१२॥
यऽआत्मदा बलदा यस्य विश्वऽउपासते प्रशिषं यस्य देवाः ।
यस्य छायामृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥१३॥
आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासोऽअपरीतासऽउद्भिदः ।
देवा नो यथा सदमिद् वृधेऽअसन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे ॥१४॥
देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानाꣳरातिरभि नो निवर्त्तताम् ।
देवानाꣳसख्यमुपसेदिमा वयं देवा नऽआयुः प्रतिरन्तु जीवसे ॥१५॥
तान् पूर्वया निविदा हूमहे वयं भगं मित्रमदितिं दक्षमस्त्रिधम् ।
अर्यमणं वरुणꣳसोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ॥१६॥
तन्नो वातो मयोभु वातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः ।
तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना शृणुतं धिष्ण्या युवम् ॥१७॥
तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम् ।
पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥१८॥
स्वस्ति नऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥१९॥
पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभंयावानो विदथेषु जग्मयः ।
अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवाऽअवसागमन्निह ॥२०॥
भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥२१॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शतमिन्नु शरदोऽअन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम् ।
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः ॥२२॥
अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः ।
विश्वेदेवाऽअदितिः पञ्च जनाऽअदितिर्जातमदितिर्जनित्वम् ॥२३॥
मा नो मित्रो वरुणोऽअर्यमायुरिन्द्रऽऋभुक्षा मरुतः परिख्यन् ।
यद्वाजिनो देवजातस्य सप्तेः प्रवक्ष्यामो विदथे वीर्याणि ॥२४॥
यन्निर्णिजा रेक्णसा प्रावृतस्य रातिं गृभीतां मुखतो नयन्ति ।
सुप्राङ्जो मेम्यद्विश्वरूपऽइन्द्रापूष्णोः प्रियमप्येति पाथः ॥२५॥
एष छागः पुरोऽअश्वेन वाजिना पूष्णो भागो नीयते विश्वदेव्यः ।
अभिप्रियं यत्पुरोडाशमर्वता त्वष्टेदेनꣳसौश्रवसाय जिन्वति ॥२६॥
यद्धविष्यमृतुशो देवयानं त्रिर्मानुषाः पर्यश्वं नयन्ति ।
अत्रा पूष्णः प्रथमो भागऽएति यज्ञं देवेभ्यः प्रतिवेदयन्नजः ॥२७॥
होताध्वर्युरावयाऽअग्निमिन्धो ग्रावग्राभऽउत शꣳस्ता सुविप्रः ।
तेन यज्ञेन स्वरङ्कृतेन स्विष्टेन वक्षणा आ पृणध्वम् ॥२८॥
यूपव्रस्काऽउत ये यूपवाहाश्चषालं येऽअश्वयूपाय तक्षति ।
ये चार्वते पचनꣳसम्भरन्त्युतो तेषामभिगूर्त्तिर्नऽइन्वतु ॥२९॥
उप प्रागात्सुमन्मेऽधायि मन्म देवानामाशाऽउप वीतपृष्ठः ।
अन्वेनं विप्राऽऋषयो मदन्ति देवानां पुष्टे चकृमा सुबन्धुम् ॥३०॥
यद्वाजिनो दाम सन्दानमर्वतो या शीर्षण्या रशना रज्जुरस्य ।
यद्वा घास्य प्रभृतमास्ये तृणꣳसर्वा ता तेऽअपि देवेष्वस्तु ॥३१॥
यदश्वस्य क्रविषो मक्षिकाश यद्वा स्वरौ स्वधितौ रिप्तमस्ति ।
यद्धस्तयोः शमितुर्यन्नखेषु सर्वा ता तेऽअपि देवेष्वस्तु ॥३२॥
यदूवध्यमुदरस्यापवाति यऽआमस्य क्रविषो गन्धोऽअस्ति ।
सुकृता तच्छमितारः कृण्वन्तूत मेधꣳशृतपाकं पचन्तु ॥३३॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यत्ते गात्रादग्निना पच्यमानादभि शूलं निहतस्यावधावति ।
मा तद्भूम्यामाश्रिषन्मा तृणेषु देवेभ्यस्तदुशद्भ्यो रातमस्तु ॥३४॥
ये वाजिनं परिपश्यन्ति पक्वं यऽईमाहुः सुरभिर्निर्हरेति ।
ये चार्वतो माꣳसभिक्षामुपासतऽउतो तेषामभिगूर्त्तिर्नऽइन्वतु ॥३५॥
यन्नीक्षणं माँस्पचन्याऽउखाया या पात्राणि यूष्णऽआसेचनानि ।
ऊष्मण्यापिधाना चरूणामङ्काः सूनाः परि भूषन्त्यश्वम् ॥३६॥
मा त्वाग्निर्ध्वनयीद् धूमगन्धिर्मोखा भ्राजन्त्यभि विक्त जघ्रिः ।
इष्टं वीतमभिगूर्त्तं वषट्कृतं तं देवासः प्रति गृभ्णन्त्यश्वम् ॥३७॥
निक्रमणं निषदनं विवर्त्तनं यच्च पड्वीशमर्वतः ।
यच्च पपौ यच्च घासिं जघास सर्वा ता तेऽअपि देवेष्वस्तु ॥३८॥
यदश्वाय वासऽउपस्तृणन्त्यधीवासं या हिरण्यान्यस्मै ।
सन्दानमर्वन्तं पड्वीशं प्रिया देवेष्वा यामयन्ति ॥३९॥
यत्ते सादे महसा शूकृतस्य पार्ष्ण्या वा कशया वा तुतोद ।
स्रुचेव ता हविषोऽअध्वरेषु सर्वा ता ते ब्रह्मणा सूदयामि ॥४०॥
चतुस्त्रिꣳशद्वाजिनो देवबन्धोर्वङ्क्रीरश्वस्य स्वधितिः समेति ।
अच्छिद्रा गात्रा वयुना कृणोत परुष्परुरनुघुष्या विशस्त ॥४१॥
एकस्त्वष्टुरश्वस्या विशस्ता द्वा यन्तारा भवतस्तथऽऋतुः ।
या ते गात्राणामृतुथा कृणोमि ता ता पिण्डानां प्र जुहोम्यग्नौ ॥४२॥
मा त्वा तपत्प्रियऽआत्मापियन्तं मा स्वधितिस्तन्वऽआ तिष्ठिपत्ते ।
मा ते गृध्नुरविशस्तातिहाय छिद्रा गात्राण्यसिना मिथू कः ॥४३॥
न वाऽउऽएतन्म्रियसे न रिष्यसि देवाँ२॥ऽइदेषि पथिभिः सुगेभिः ।
हरी ते युञ्जा पृषतीऽअभूतामुपास्थाद्वाजी धुरि रासभस्य ॥४४॥
सुगव्यं नो वाजी स्वश्व्यं पुꣳसः पुत्राँ२॥ऽउत विश्वापुषꣳरयिम् ।
अनागास्त्वं नोऽअदितिः कृणोतु क्षत्रं नोऽअश्वो वनताꣳहविष्मान् ॥४५॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इमा नु कं भुवना सीषधामेन्द्रश्च विश्वे च देवाः ।
आदित्यैरिन्द्रः सगणो मरुद्भिरस्मभ्यं भेषजा करत् ।
यज्ञं च नस्तन्वं च प्रजां चादित्यैरिन्द्रः सह सीषधाति ॥४६॥
अग्ने त्वं नोऽअन्तमऽउत त्राता शिवो भवा वरूथ्यः ।
वसुरग्निर्वसुश्रवाऽअच्छा नक्षि द्युमत्तमꣳरयिं दाः ।
तं त्वा शोचिष्ठ दीदिवः सुम्नाय नूनमीमहे सखिभ्यः ॥४७॥

इति पञ्चविंशोऽध्यायः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ षड्विंशोऽध्यायः

—:०:—

ऋषिः—याज्ञवल्क्यः १। लौगाक्षिः २। गृत्समदः ३, २४। रम्याक्षी ४, ५। प्रादुराक्षिः ६। कुत्सः ७-९। वसिष्ठः १०। नोधा गोतमः ११, १२। भारद्वाजः १३, १४। वत्सः १५। महीयवः १६-१८। मुद्गलः १९। मेधातिथिः २०-२३। मधुच्छन्दाः २५, २६॥

देवता—अग्न्यादयः १। ईश्वरः २, ३। इन्द्रः ४, १०, १७। सूर्यः ५। वैश्वानरः ६, ८, ९। वैश्वानरोऽग्निः ७। अग्निः ११-१३, १६, २६। संवत्सरः १४। विद्वान् १५, १८, २०, २१, २३, २४। विद्वांसः १९। सोमः २२, २५॥

छन्दः—अभिकृतिः १। विराडत्यष्टिः २, ७। भुरिगत्यष्टिः ३। स्वराड्जगती ४, ९। भुरिग्जगती ५। जगती ६, ८, २४। निचृज्जगती १०। बृहती ११। विराडनुष्टुप् १२। विराड्गायत्री १३, १५, १८। भुरिग्बृहती १४। निचृद्गायत्री १६, १७। त्रिष्टुप् १९। गायत्री २०-२२, २५, २६। भुरिक्पङ्क्तिः २३॥

स्वरः—ऋषभः १। गान्धारः २, ३, ७, १२। निषादः ४-६, ८-१०, २४। मध्यमः ११, १४। षड्जः १३, १५-१८, २०-२२, २५, २६। धैवतः १९। पञ्चमः २३॥

अग्निश्च पृथिवी च सन्नते ते मे सं नमतामदो वायुश्चान्तरिक्षं च
सन्नते ते मे सं नमतामदऽआदित्यश्च द्यौश्च सन्नते ते मे सं
नमतामदऽआपश्च वरुणश्च सन्नते ते मे सं नमतामदः । सप्त सꣳसदोऽ
अष्टमी भूतसाधनी । सकामाँ२॥ऽअध्वनस्कुरु संज्ञानमस्तु मेऽमुना ॥१॥
यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः । ब्रह्मराजन्याभ्याꣳशूद्राय
चार्य्याय च स्वाय चारणाय च । प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह
भूयासमयं मे कामः समृध्यतामुप मादो नमतु ॥२॥
बृहस्पतेऽअति यदर्योऽअर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु ।
यद्दीदयच्छवसऽ ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् ।
उपयामगृहीतोऽसि बृहस्पतये त्वैष ते योनिर्बृहस्पतये त्वा ॥३॥
इन्द्र गोमन्निहा याहि पिबा सोमꣳशतक्रतो । विद्यद्भिर्ग्रावभिः सुतम् ।
उपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा गोमतऽएष ते योनिरिन्द्राय त्वा गोमते ॥४॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्द्रा याहि वृत्रहन् पिबा सोमꣳशतक्रतो। गोमद्भिर्ग्रावभिः सुतम् ।
उपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा गोमतऽएष ते योनिरिन्द्राय त्वा गोमते ॥५॥
ऋतावानं वैश्वानरमृतस्य ज्योतिषस्पतिम्। अजस्रं घर्ममीमहे ।
उपयामगृहीतोऽसि वैश्वानराय त्वैष ते योनिर्वैश्वानराय त्वा ॥६॥
वैश्वानरस्य सुमतौ स्याम राजा हि कं भुवनानामभिश्रीः ।
इतो जातो विश्वमिदं वि चष्टे वैश्वानरो यतते सूर्येण ।
उपयामगृहीतोऽसि वैश्वानराय त्वैष ते योनिर्वैश्वानराय त्वा ॥७॥
वैश्वानरो नऽऊतयऽआ प्र यातु परावतः। अग्निरुक्थेन वाहसा ।
उपयामगृहीतोऽसि वैश्वानराय त्वैष ते योनिर्वैश्वानराय त्वा ॥८॥
अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः। तमीमहे महागयम् ।
उपयामगृहीतोऽस्यग्नये त्वा वर्चसऽएष ते योनिरग्नये त्वा वर्चसे ॥९॥

महाँ२॥ऽइन्द्रो वज्रहस्तः षोडशी शर्म यच्छतु ।
हन्तु पाप्मानं योऽस्मान्द्वेष्टि ।
उपयामगृहीतोऽसि महेन्द्राय त्वैष ते योनिर्महेन्द्राय त्वा ॥१०॥
तं वो दस्ममृतीषहं वसोर्मन्दानमन्धसः ।
अभि वत्सं न स्वसरेषु धेनवऽइन्द्रं गीर्भिर्नवामहे ॥११॥
यद्वाहिष्ठं तदग्नये बृहदर्च विभावसो ।
महिषीव त्वद्रयिस्त्वद्वाजाऽउदीरते ॥१२॥
एह्यू षु ब्रवाणि तेऽग्नऽइत्थेतरा गिरः ।
एभिर्वर्द्धासऽइन्दुभिः ॥१३॥
ऋतवस्ते यज्ञं वि तन्वन्तु मासा रक्षन्तु ते हविः ।
संवत्सरस्ते यज्ञं दधातु नः प्रजां च परि पातु नः ॥१४॥
उपह्वरे गिरीणाꣳसङ्गमे च नदीनाम् ।
धिया विप्रोऽअजायत ॥१५॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उच्चा ते जातमन्धसो दिवि सद्भूम्या ददे ।
उग्रꣳशर्म महि श्रवः ॥१६॥
स नऽइन्द्राय यज्यवे वरुणाय मरुद्भ्यः ।
वरिवोवित्परि स्रव ॥१७॥
एना विश्वान्यर्यऽआ द्युम्नानि मानुषाणाम् ।
सिषासन्तो वनामहे ॥१८॥
अनु वीरैरनु पुष्यास्म गोभिरन्वश्वैरनु सर्वेण पुष्टैः ।
अनु द्विपदानु चतुष्पदा वयं देवा नो यज्ञमृतुथा नयन्तु ॥१९॥
अग्ने पत्नीरिहा वह देवानामुशतीरुप ।
त्वष्टारꣳसोमपीतये ॥२०॥
अभि यज्ञं गृणीहि नो ग्नावो नेष्टः पिबऽऋतुना ।
त्वꣳहि रत्नधाऽअसि ॥२१॥
द्रविणोदाः पिपीषति जुहोत प्र च तिष्ठत ।
नेष्ट्रादृतुभिरिष्यत ॥२२॥
तवायꣳसोमस्त्वमेह्यर्वाङ् शश्वत्तमꣳसुमनाऽअस्य पाहि ।
अस्मिन्यज्ञे बर्हिष्या निषद्या दधिष्वेमं जठरऽइन्दुमिन्द्र ॥२३॥
अमेव नः सुहवाऽआ हि गन्तन नि बर्हिषि सदतना रणिष्टन ।
अथा मन्दस्व जुजुषाणोऽअन्धसस्त्वष्टर्देवेभिर्जनिभिः सुमद्गणः ॥२४॥
स्वादिष्ठया मदिष्ठया पवस्व सोम धारया ।
इन्द्राय पातवे सुतः ॥२५॥
रक्षोहा विश्वचर्षणिरभि योनिमयोहते ।
द्रोणे सधस्थमासदत् ॥२६॥

इति षड्विंशोऽध्यायः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ सप्तविंशोऽध्यायः

—:0:—

ऋषिः—अग्निः १-७, १०-२०। प्रजापतिः ८, ९, २१, २२। वसिष्ठः २३, २४, २७, २८, ३५। हिरण्यगर्भः २५, २६। गृत्समदः २९, ३२, ३३। पुरुमीढः ३०। अजमीढः ३१। अङ्गिरसः ३४। शँयुर्बार्हस्पत्यः ३६-३८। वामदेवः ३९-४१। शँयुः ४२, ४४, ४५। भार्गवः ४३॥

देवता—अग्निः १, ३-७, ११, १८, ३९, ४३, ४५। सामिधेन्यः २। विश्वेदेवाः ८, १२। अश्व्यादयः ९। सूर्यः १०। यज्ञः १३, १७, ४२। वह्निः १४। वायुः १५, २३, २४, २७-३५, ४४। देव्यः १६। इडादयो लिङ्गोक्ताः १९। त्वष्टा २०। विद्वांसः २१। इन्द्रः २२, ३७, ३८, ४०, ४१। प्रजापतिः २५, २६। परमेश्वरः ३६॥

छन्दः—त्रिष्टुप् १, २, ८, ९, २४, २६, २८। विराट्त्रिष्टुप् ३, ३३। स्वराट्त्रिष्टुप् ४, २५। स्वराट्पङ्क्तिः ५, २७। भुरिग्बृहती ६। निचृज्जगती ७। विराडनुष्टुप् १०। उष्णिक् ११, १२। निचृदुष्णिक् १३, १६, १७, २०, २२। भुरिगुष्णिक् १४। स्वराडुष्णिक् १५। भुरिग्गायत्री १८। गायत्री १९, ३१, ३२, ३९। विराडुष्णिक् २१। निचृत्त्रिष्टुप् २३। निचृद्गायत्री २९, ३४, ४०। अनुष्टुप् ३०। विराडनुष्टुप् ३५, ४३। निचृत्पङ्क्तिः ३६। निचृदनुष्टुप् ३७। स्वराड्बृहती ३८, ४४। पादनिचृद्गायत्री ४१। बृहती ४२। निचृदभिकृतिः ४५॥

स्वरः—धैवतः १-४, ८, ९, २३-२६, २८, ३३। पञ्चमः ५, २७, ३६। मध्यमः ६, ३८, ४२, ४४। निषादः ७। गान्धारः १०, ३०, ३५, ३७, ४३। ऋषभः ११-१७, २०-२२, ४५। षड्जः १८, १९, २९, ३१, ३२, ३४, ३९-४१॥

समास्त्वाग्नऽऋतवो वर्द्धयन्तु संवत्सराऽऋषयो यानि सत्या ।
सं दिव्येन दीदिहि रोचनेन विश्वाऽआ भाहि प्रदिशश्चतस्रः ॥१॥
सं चेध्यस्वाग्ने प्र च बोधयैनमुच्च तिष्ठ महते सौभगाय ।
मा च रिषदुपसत्ता तेऽअग्ने ब्रह्माणस्ते यशसः सन्तु माऽन्ये ॥२॥
त्वामग्ने वृणते ब्राह्मणाऽइमे शिवोऽअग्ने संवरणे भवा नः ।
सपत्नहा नोऽअभिमातिजिच्च स्वे गये जागृह्यप्रयुच्छन् ॥३॥
इहैवाग्नेऽअधि धारया रयिं मा त्वा नि क्रन्पूर्वचितो निकारिणः ।
क्षत्रमग्ने सुयममस्तु तुभ्यमुपसत्ता वर्द्धतां तेऽअनिष्टृतः ॥४॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षत्रेणाग्ने स्वायुः सꣳरभस्व मित्रेणाग्ने मित्रधेये यतस्व ।
सजातानां मध्यमस्थाऽएधि राज्ञामग्ने विहव्यो दीदिहीह ॥५॥
अति निहोऽअति स्त्रिधोऽत्यचित्तिमत्यरातिमग्ने ।
विश्वा ह्यग्ने दुरिता सहस्वाथास्मभ्यꣳसहवीरꣳरयिं दाः ॥६॥
अनाधृष्यो जातवेदाऽअनिष्टृतो विराडग्ने क्षत्रभृद्दीदिहीह ।
विश्वाऽआशाः प्रमुञ्चन्मानुषीर्भियः शिवेभिरद्य परि पाहि नो वृधे ॥७॥
बृहस्पते सवितर्बोधयैनꣳसꣳशितं चित्सन्तराꣳसꣳशिशाधि ।
वर्धयैनं महते सौभगाय विश्वऽएनमनु मदन्तु देवाः ॥८॥
अमुत्रभूयादध यद्यमस्य बृहस्पतेऽअभिशस्तेरमुञ्चः ।
प्रत्यौहतामश्विना मृत्युमस्माद्देवानामग्ने भिषजा शचीभिः ॥९॥
उद्वयन्तमसस्परि स्वः पश्यन्तऽउत्तरम् ।
देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् ॥१०॥
ऊर्ध्वाऽअस्य समिधो भवन्त्यूर्ध्वा शुक्रा शोचीꣳष्यग्नेः ।
द्युमत्तमा सुप्रतीकस्य सूनोः ॥११॥
तनूनपादसुरो विश्ववेदा देवो देवेषु देवः । पथो अनक्तु मध्वा घृतेन ॥१२॥
मध्वा यज्ञं नक्षसे प्रीणानो नराशꣳसो अग्ने ।
सुकृद्देवः सविता विश्ववारः ॥१३॥
अच्छायमेति शवसा घृतेनेडानो वह्निर्नमसा ।
अग्निꣳस्रुचोऽअध्वरेषु प्रयत्सु ॥१४॥
स यक्षदस्य महिमानमग्नेः सऽईं मन्द्रा सुप्रयसः ।
वसुश्चेतिष्ठो वसुधातमश्च ॥१५॥
द्वारो देवीरन्वस्य विश्वे व्रता ददन्तेऽअग्नेः ।
उरुव्यचसो धाम्ना पत्यमानाः ॥१६॥
तेऽअस्य योषणे दिव्ये न योनाऽउषासानक्ता ।
इमं यज्ञमवतामध्वरं नः ॥१७॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दैव्या होतारा ऊर्ध्वमध्वरं नोऽग्नेर्जिह्वामभि गृणीतम् ।
कृणुतं नः स्विष्टिम् ॥१८॥
तिस्रो देवीर्बर्हिरेदꣳसदन्त्विडा सरस्वती भारती । मही गृणाना ॥१९॥
तन्नस्तुरीपमद्भुतं पुरुक्षु त्वष्टा सुवीर्यम् । रायस्पोषं वि ष्यतु नाभिमस्मे ॥२०॥
वनस्पतेऽव सृजा रराणस्त्मना देवेषु । अग्निर्हव्यꣳशमिता सूदयाति ॥२१॥
अग्ने स्वाहा कृणुहि जातवेदऽइन्द्राय हव्यम् ।
विश्वेदेवा हविरिदं जुषन्ताम् ॥२२॥
पीवोऽअन्ना रयिवृधः सुमेधाः श्वेतः सिषक्ति नियुतामभिश्रीः ।
ते वायवे समनसो वि तस्थुर्विश्वेन्नरः स्वपत्यानि चक्रुः ॥२३॥
राये नु यं जज्ञतू रोदसीमे राये देवी धिषणा धाति देवम् ।
अध वायुं नियुतः सश्चत स्वाऽउत श्वेतं वसुधितिं निरेके ॥२४॥
आपो ह यद् बृहतीर्विश्वमायन् गर्भं दधाना जनयन्तीरग्निम् ।
ततो देवानाꣳसमवर्त्ततासुरेकः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥२५॥
यश्चिदापो महिना पर्यपश्यद्दक्षं दधाना जनयन्तीर्यज्ञम् ।
यो देवेष्वधि देवऽएकऽआसीत् कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥२६॥
प्र याभिर्यासि दाश्वाꣳसमच्छा नियुद्भिर्वायविष्टये दुरोणे ।
नि नो रयिꣳसुभोजसं युवस्व नि वीरं गव्यमश्व्यं च राधः ॥२७॥
आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरꣳसहस्त्रिणीभिरुप याहि यज्ञम् ।
वायोऽअस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥२८॥
नियुत्वान्वायवा गह्ययꣳशुक्रोऽअयामि ते । गन्तासि सुन्वतो गृहम् ॥२९॥
वायो शुक्रोऽअयामि ते मध्वोऽअग्रं दिविष्टिषु ।
आ याहि सोमपीतये स्पार्हो देव नियुत्वता ॥३०॥
वायुरग्रेगा यज्ञप्रीः साकं गन्मनसा यज्ञम् । शिवो नियुद्भिः शिवाभिः ॥३१॥
वायो ये ते सहस्त्रिणो रथासस्तेभिरा गहि । नियुत्वान्त्सोमपीतये ॥३२॥
एकया च दशभिश्च स्वभूते द्वाभ्यामिष्टये विꣳशती च ।
तिसृभिश्च वहसे त्रिꣳशता च नियुद्भिर्वायविह ता वि मुञ्च ॥३३॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तव वायवृतस्पते त्वष्टुर्जामातरद्भुत। अवाꣳस्या वृणीमहे ॥३४॥
अभि त्वा शूर नोनुमोऽदुग्धाऽइव धेनवः ।
ईशानमस्य जगतः स्वर्दृशमीशानमिन्द्र तस्थुषः ॥३५॥
न त्वावाँ२॥ऽअन्यो दिव्यो न पार्थिवो न जातो न जनिष्यते ।
अश्वायन्तो मघवन्निन्द्र वाजिनो गव्यन्तस्त्वा हवामहे ॥३६॥
त्वामिद्धि हवामहे सातौ वाजस्य कारवः ।
त्वां वृत्रेष्विन्द्र सत्पतिं नरस्त्वां काष्ठास्वर्वतः ॥३७॥
स त्वं नश्चित्र वज्रहस्त धृष्णुया मह स्तवानोऽअद्रिवः ।
गामश्वꣳरथ्यमिन्द्र सं किर सत्रा वाजं न जिग्युषे ॥३८॥
कया नश्चित्रऽआ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥३९॥
कस्त्वा सत्यो मदानां मꣳहिष्ठो मत्सदन्धसः। दृढा चिदारुजे वसु ॥४०॥
अभी षु णः सखीनामविता जरितॄणाम्। शतं भवास्यूतये ॥४१॥
यज्ञायज्ञा वोऽअग्नये गिरागिरा च दक्षसे ।
प्रप्र वयममृतं जातवेदसं प्रियं मित्रं न शꣳसिषम् ॥४२॥
पाहि नोऽअग्नऽएकया पाह्युत द्वितीयया ।
पाहि गीर्भिस्तिसृभिरूर्जां पते पाहि चतसृभिर्वसो ॥४३॥
ऊर्जो नपातꣳस हिनायमस्मयुर्दाशेम हव्यदातये ।
भुवद्वाजेष्वविता भुवद् वृधऽउत त्राता तनूनाम् ॥४४॥
संवत्सरोऽसि परिवत्सरोऽसीदावत्सरोऽसीद्वत्सरोऽसि वत्सरोऽसि।
उषसस्ते कल्पन्तामहोरात्रास्ते कल्पन्तामर्द्धमासास्ते कल्पन्तां मासास्ते
कल्पन्तामृतवस्ते कल्पन्ताꣳसंवत्सरस्ते कल्पताम्। प्रेत्याऽएत्यै सं चाञ्च
प्र च सारय। सुपर्णचिदसि तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवः सीद ॥४५॥

इति सप्तविंशोऽध्यायः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथाष्टाविंशोऽध्यायः

—:०:—

ऋषिः—बृहदुक्थो वामदेवः १-६। गोतमः ७। बृहदुक्थो वामदेव्यः ८। प्रजापतिः ९-११। अश्विनौ १२-२३। सरस्वती २४-४६॥

देवता—इन्द्रः १-३, ५, ६, ८, ९, ११-१३, १५, १६, १८-२१, २५-२८, ३२, ३३, ३५-४६। रुद्रः ४। अश्विनौ ७, १७, ३०। बृहस्पतिः १०। अहोरात्रे १४, २९। अग्निः २२-२४, ३४। वाण्यः ३१॥

छन्दः—निचृत्त्रिष्टुप् १, ४, २२। निचृदतिजगती २, ५, ९, १२, ४२, ४३। स्वराट्पङ्क्तिः ३, १४। त्रिष्टुप् ६, २१। जगती ७। निचृज्जगती ८। स्वराडतिजगती १०, २७, ४५। निचृच्छक्वरी ११, २६, ३९। भुरिक्शक्वरी १३, ३०-३२। भुरिगतिजगती १५, २५, ३७, ३८, ४४। भुरिगाकृतिः १६। भुरिग्जगती १७, ४१। अतिजगती १८, ४०। कृतिः १९, २३। निचृदतिशक्वरी २०, २९। स्वराड्जगती २४। स्वराट्शक्वरी २८। निचृदत्यष्टिः ३३। अतिशक्वरी ३४। भुरिक्त्रिष्टुप् ३५, ३६। आकृतिः ४६॥

स्वरः—धैवतः १, ४, ६, ११, १३, २१, २२, २६, २८, ३०-३२, ३५, ३६, ३९। निषादः २, ५, ७-१०, १२, १५, १७-१९, २३-२५, २७, ३७, ३८, ४०-४५। पञ्चमः ३, १४, १६, २०, २९, ३४, ४६। गान्धारः ३३॥

होता॑ यक्षत्स॒मिधेन्द्र॑मि॒डस्प॒दे नाभा॑ पृथि॒व्याऽअधि॑ ।
दि॒वो वर्ष्म॒न्त्समिध्यत॒ऽओजि॑ष्ठश्चर्षणी॒सहां॒ वेत्वाज्य॑स्य॒ होत॒र्यज ॥१॥
होता॑ यक्ष॒त्तनूनपा॑तमू॒तिभि॒र्जेता॑र॒मप॑राजितम्। इन्द्रं॑ दे॒वꣳस्व॒र्विदं॑
प॒थिभि॒र्मधु॑मत्तमै॒र्नरा॒शꣳसे॑न॒ तेज॑सा॒ वेत्वाज्य॑स्य॒ होत॒र्यज ॥२॥
होता॑ यक्ष॒दिडा॑भि॒रिन्द्र॑मीडि॒तमा॒जुह्वा॑न॒मम॑र्त्यम् ।
दे॒वो दे॒वैः सवी॑र्यो॒ वज्र॑हस्तः पुरन्द॒रो वेत्वाज्य॑स्य॒ होत॒र्यज ॥३॥
होता॑ यक्षद् ब॒र्हिषीन्द्रं॑ निषद्व॒रं वृ॑ष॒भं नर्या॑पसम् ।
वसु॑भी रु॒द्रैरा॑दि॒त्यैः स॒युग्भि॑र्ब॒र्हिरास॑द॒द्वेत्वाज्य॑स्य॒ होत॒र्यज ॥४॥
होता॑ यक्ष॒दोजो॒ न वी॒र्यꣳ᳖सहो॒ द्वार॒ऽइन्द्र॑मवर्द्धयन्। सु॒प्रा॒य॒णाऽअ॒स्मिन्
य॒ज्ञे वि श्र॑यन्तामृता॒वृधो॒ द्वार॒ऽइन्द्रा॑य मी॒ढुषे॒ व्यन्त्वाज्य॑स्य॒ होत॒र्यज ॥५॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता यक्षद्दुषेऽइन्द्रस्य धेनू सुदुघे मातरा मही ।
सवातरौ न तेजसा वत्समिन्द्रमवर्द्धतां वीतामाज्यस्य होतर्यज ॥६॥
होता यक्षद्दैव्या होतारा भिषजा सखाया हविषेन्द्रं भिषज्यतः ।
कवी देवौ प्रचेतसाविन्द्राय धत्तऽइन्द्रियं वीतामाज्यस्य होतर्यज ॥७॥
होता यक्षत्तिस्रो देवीर्न भेषजं त्रयस्त्रिधातवोऽपसऽइडा सरस्वती
भारती महीः। इन्द्रपत्नीर्हविष्मतीर्व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यज ॥८॥
होता यक्षत्त्वष्टारमिन्द्रं देवं भिषजꣳसुयजं घृतश्रियम्। पुरुरूपꣳ
सुरेतसं मघोनमिन्द्राय त्वष्टा दधदिन्द्रियाणि वेत्वाज्यस्य होतर्यज ॥९॥
होता यक्षद्वनस्पतिꣳशमितारꣳशतक्रतुं धियो जोष्टारमिन्द्रियम् ।
मध्वा समञ्जन् पथिभिः सुगेभिः स्वदाति यज्ञं मधुना
घृतेन वेत्वाज्यस्य होतर्यज ॥१०॥
होता यक्षदिन्द्रꣳस्वाहाज्यस्य स्वाहा मेदसः स्वाहा
स्तोकानाꣳस्वाहा स्वाहाकृतीनाꣳस्वाहा हव्यसूक्तीनाम् ।
स्वाहा देवाऽआज्यपा जुषाणाऽइन्द्रऽआज्यस्य व्यन्तु होतर्यज ॥११॥
देवं बर्हिरिन्द्रꣳसुदेवं देवैर्वीरवत् स्तीर्णं वेद्यामवर्द्धयत्। वस्तोर्वृतं
प्राक्तोर्भृतꣳराया बर्हिष्मतोऽत्यगाद्वसुवने वसुधेयस्य वेतु यज॥१२॥
देवीर्द्वारऽइन्द्रꣳसङ्घाते वीड्वीर्यामन्नवर्द्धयन्। आ वत्सेन तरुणेन कुमारेण
च मीवतापार्वाणꣳरेणुककाटं नुदन्तां वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज ॥१३॥
देवीऽउषासानक्तेन्द्रं यज्ञे प्रयत्यह्वेताम् ।
दैवीर्विशः प्रायासिष्टाꣳसुप्रीते सुधिते वसुवने वसुधेयस्य वीतां यज॥१४॥
देवी जोष्ट्री वसुधिती देवमिन्द्रमवर्द्धताम्। अयाव्यन्याघा द्वेषाꣳस्यान्या
वक्षद्वसु वार्याणि यजमानाय शिक्षिते वसुवने वसुधेयस्य वीतां यज ॥१५॥
देवीऽऊर्जाहुति दुघे सुदुघे पयसेन्द्रमवर्द्धताम्। इषमूर्जमन्या वक्षत्सग्धिꣳ
सपीतिमन्या नवेन पूर्वं दयमाने पुराणेन नवमधातामूर्जमूर्जाहुतीऽऊर्ज-
यमाने वसु वार्याणि यजमानाय शिक्षिते वसुवने वसुधेयस्य वीतां यज ॥१६॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवा दैव्या होतारा देवमिन्द्रमवर्द्धताम्। हताघशꣳसावाभार्ष्टां वसु
वार्य्याणि यजमानाय शिक्षितौ वसुवने वसुधेयस्य वीतां यज ॥१७॥
देवीस्तिस्रस्तिस्रो देवीः पतिमिन्द्रमवर्द्धयन्। अस्पृक्षद्भारती दिवꣳ
रुद्रैर्यज्ञꣳसरस्वतीडा वसुमती गृहान्वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज ॥१८॥
देवऽइन्द्रो नराशꣳसस्त्रिवरूथस्त्रिबन्धुरो देवमिन्द्रमवर्द्धयत्। शतेन
शितिपृष्ठानामाहितः सहस्रेण प्र वर्त्तते मित्रावरुणेदस्य होत्रमर्हतो
बृहस्पति स्तोत्रमश्विनाध्वर्यवं वसुवने वसुधेयस्य वेतु यज ॥१९॥
देवो देवैर्वनस्पतिर्हिरण्यपर्णो मधुशाखः सुपिप्पलो देवमिन्द्रमवर्द्धयत्।
दिवमग्रेणास्पृक्षदान्तरिक्षं पृथिवीमदृꣳहीद्वसुवने वसुधेयस्य वेतु यज ॥२०॥
देवं बर्हिर्वारितीनां देवमिन्द्रमवर्द्धयत्।
स्वासस्थमिन्द्रेणासन्नमन्या बर्हीꣳष्यभ्यभूद्वसुवने वसुधेयस्य वेतु यज ॥२१॥
देवोऽअग्निः स्विष्टकृद्देवमिन्द्रमवर्द्धयत्। स्विष्टं कुर्वन्त्स्विष्टकृत्
स्विष्टमद्य करोतु नो वसुवने वसुधेयस्य वेतु यज ॥२२॥
अग्निमद्य होतारमवृणीतायं यजमानः पचन् पक्तीः पचन् पुरोडाशं
बध्नन्निन्द्राय छागम्। सूपस्थाऽअद्य देवो वनस्पतिरभवदिन्द्राय छागेन।
अघत्तं मेदस्तः प्रति पचताग्रभीदवीवृधत्पुरोडाशेन ॥२३॥
होता यक्षत्समिधानं महद्यशः सुसमिद्धं वरेण्यमग्निमिन्द्रं वयोधसम्।
गायत्रीं छन्दऽइन्द्रियं त्र्यविं गां वयो दधद्वेत्वाज्यस्य होतर्यज ॥२४॥
होता यक्षत्तनूनपातमुद्भिदं यं गर्भमदितिर्दधे शुचिमिन्द्रं वयोधसम्।
उष्णिहं छन्दऽइन्द्रियं दित्यवाहं गां वयो दधद्वेत्वाज्यस्य होतर्यज ॥२५॥
होता यक्षदीडेन्यमीडितं वृत्रहन्तममिडाभिरीड्यꣳसहः सोममिन्द्रं वयोधसम्।
अनुष्टुभं छन्दऽइन्द्रियं पञ्चाविं गां वयोदधद्वेत्वाज्यस्य होतर्यज ॥२६॥
होता यक्षत्सुबर्हिषं पूषण्वन्तममर्त्यꣳसीदन्तं बर्हिषि प्रियेऽमृतेन्द्रं वयोधसम्
बृहतीं छन्दऽइन्द्रियं त्रिवत्सं गां वयो दधद्वेत्वाज्यस्य होतर्यज ॥२७॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता यक्षद्व्यचस्वतीः सुप्रायणाऽऋतावृधो द्वारो देवीर्हिरण्ययीर्ब्रह्माणमिन्द्रं वयोधसम्। पङ्क्तिं छन्दऽइहेन्द्रियं तुर्यवाहं गां वयो दधद्व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यज ॥२८॥

होता यक्षत्सुपेशसा सुशिल्पे बृहतीऽउभे नक्तोषासा न दर्शते विश्वमिन्द्रं वयोधसम्। त्रिष्टुभं छन्दऽइहेन्द्रियं पष्ठवाहं गां वयो दधद्वीतामाज्यस्य होतर्यज ॥२९॥

होता यक्षत्प्रचेतसा देवानामुत्तमं यशो होतारा दैव्या कवी सयुजेन्द्रं वयोधसम्। जगतीं छन्दऽइन्द्रियमनड्वाहं गां वयो दधद्वीतामाज्यस्य होतर्यज ॥३०॥

होता यक्षत्पेशस्वतीस्तिस्रो देवीर्हिरण्ययीर्भारतीर्बृहतीर्महीः पतिमिन्द्रं वयोधसम्। विराजं छन्दऽइहेन्द्रियं धेनुं गां न वयो दधद्व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यज ॥३१॥

होता यक्षत्सुरेतसं त्वष्टारं पुष्टिवर्द्धनꣳरूपाणि बिभ्रतं पृथक् पुष्टिमिन्द्रं वयोधसम्। द्विपदं छन्दऽइन्द्रियमुक्षाणं गां न वयो दधद्वेत्वाज्यस्य होतर्यज ॥३२॥

होता यक्षद्वनस्पतिꣳशमितारꣳशतक्रतुꣳहिरण्यपर्णमुक्थिनꣳरशनां बिभ्रतं वशिं भगमिन्द्रं वयोधसम्। ककुभं छन्दऽइहेन्द्रियं वशां वेहतं गां वयो दधद्वेत्वाज्यस्य होतर्यज ॥३३॥

होता यक्षत् स्वाहाकृतीरग्निं गृहपतिं पृथग्वरुणं भेषजं कविं क्षत्रमिन्द्रं वयोधसम्। अतिच्छन्दसं छन्दऽइन्द्रियं बृहदृषभं गां वयो दधद्व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यज ॥३४॥

देवं बर्हिर्वयोधसं देवमिन्द्रमवर्द्धयत्। गायत्र्या छन्दसेन्द्रियं चक्षुरिन्द्रे वयो दधद्वसुवने वसुधेयस्य वेतु यज ॥३५॥

देवीर्द्वारो वयोधसꣳशुचिमिन्द्रमवर्द्धयन्। उष्णिहा छन्दसेन्द्रियं प्राणमिन्द्रे वयो दधद्वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज ॥३६॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवीऽउषासानक्ता देवमिन्द्रं वयोधसं देवी देवमवर्द्धताम्। अनुष्टुभा
छन्दसेन्द्रियं बलमिन्द्रे वयो दधद्वसुवने वसुधेयस्य वीतां यज ॥३७॥
देवी जोष्ट्री वसुधिती देवमिन्द्रं वयोधसं देवी देवमवर्द्धताम्। बृहत्या
छन्दसेन्द्रियꣳश्रोत्रमिन्द्रे वयो दधद्वसुवने वसुधेयस्य वीतां यज ॥३८॥
देवीऽऊर्जाहुती दुघे सुदुघे पयसेन्द्रं वयोधसं देवी देवमवर्द्धताम् ।
पङ्क्त्या छन्दसेन्द्रियꣳशुक्रमिन्द्रे वयो दधद्वसुवने वसुधेयस्य वीतां यज ॥३९॥
देवा दैव्या होतारा देवमिन्द्रं वयोधसं देवौ देवमवर्द्धताम् ।
त्रिष्टुभा छन्दसेन्द्रियं त्विषिमिन्द्रे वयो दधद्वसुवने वसुधेयस्य वीतां यज ॥४०॥
देवीस्तिस्रस्तिस्रो देवीर्वयोधसं पतिमिन्द्रमवर्द्धयन् ।
जगत्या छन्दसेन्द्रियꣳशूषमिन्द्रे वयो दधद्वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज ॥४१॥
देवो नराशꣳसो देवमिन्द्रं वयोधसं देवो देवमवर्द्धयत् ।
विराजा छन्दसेन्द्रियꣳरूपमिन्द्रे वयो दधद्वसुवने वसुधेयस्य वेतु यज ॥४२॥
देवो वनस्पतिर्देवमिन्द्रं वयोधसं देवो देवमवर्द्धयत् ।
द्विपदा छन्दसेन्द्रियं भगमिन्द्रे वयो दधद्वसुवने वसुधेयस्य वेतु यज ॥४३॥
देवं बर्हिर्वारितीनां देवमिन्द्रं वयोधसं देवं देवमवर्द्धयत् ।
ककुभा छन्दसेन्द्रियं यशऽइन्द्रे वयो दधद्वसुवने वसुधेयस्य वेतु यज ॥४४॥
देवोऽअग्निः स्विष्टकृद्देवमिन्द्रं वयोधसं देवो देवमवर्द्धयत् ।
अतिच्छन्दसा छन्दसेन्द्रियं क्षत्रमिन्द्रे वयो दधद्वसुवने
वसुधेयस्य वेतु यज ॥४५॥
अग्निमद्य होतारमवृणीतायं यजमानः पचन् पक्तीः पचन् पुरोडाशं
बध्नन्निन्द्राय वयोधसे छागम्। सूपस्थाऽअद्य देवो वनस्पतिरभवदिन्द्राय
वयोधसे छागेन। अघत्तं मेदस्तः प्रतिपचताग्रभीदवीवृधत्पुरोडाशेन ॥४६॥

इत्यष्टाविंशोऽध्यायः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथैकोनत्रिंशोऽध्यायः

—:०:—

ऋषिः—बृहदुक्थो वामदेव्यः १-११। भार्गवो जमदग्निः १२-२४। जमदग्निः २५-३६। मधुच्छन्दाः ३७। भारद्वाजः ३८-६०॥

देवता—अग्निः १-५, ११, १३-१८, २०, २८, ३५। मनुष्याः ६, २१, २३। अश्विनौ ७। सरस्वती ८। त्वष्टा ९। सूर्यः १०। यजमानः १२। मनुष्यः १९, २४। वायवः २२। विद्वान् २५-२७, ३४, ३८। अन्तरिक्षम् २९। स्त्रियः ३०, ३१। विद्वांसः ३२, ३६, ३७, ५८। वाक् ३३। वीराः ३९-४६, ४८-५०, ५५। धनुर्वेदाध्यापकाः ४७। महावीरः सेनापतिः ५१। सुवीरः ५२। वीरः ५३, ५४। वादयितारो वीराः ५६, ५७। अग्न्यादयः ५९, ६०॥

छन्दः—त्रिष्टुप् १, ५-९, ११, १२, १७, १८, २७, ३१, ३४, ३९, ४१, ४२, ४४-४६, ४८, ५१। विराट्त्रिष्टुप् २, १४, १९, २२। पङ्क्तिः ३। निचृत्त्रिष्टुप् ४, १०, १६, २०, २४-२६, ३०, ३५, ३६, ३८, ४०, ५४। भुरिक्त्रिष्टुप् १३, ५५, ५६। भुरिक्पङ्क्तिः १५, २१, २३, २९, ३३, ५२, ५७। स्वराड्बृहती २८। आर्षीत्रिष्टुप् ३२। गायत्री ३७। जगती ४३। विराड्जगती ४७, ५३। विराडनुष्टुप् ४९, ५०। भुरिगत्यष्टिः ५८। भुरिगतिशक्वरी ५९। विराट्प्रकृतिः[क], प्रकृतिः[ख] ६०॥

स्वरः—धैवतः १, २, ४-१४, १६-२०, २२, २४-२७, ३०-३२, ३४-३६, ३८-४२, ४४-४६, ४८, ५१, ५४-५६, ६०। पञ्चमः ३, १५, २१, २३, २९, ३३, ५२, ५७, ५९। मध्यमः २८। षड्जः ३७। निषादः ४३, ४७, ५३। गान्धारः ४९, ५०, ५८॥

समिद्धोऽअञ्जन् कृदरं मतीनां घृतमग्ने मधुमत् पिन्वमानः ।
वाजी वहन्वाजिनं जातवेदो देवानां वक्षि प्रियमा सधस्थम् ॥१॥
घृतेनाञ्जन्त्सं पथो देवयानान् प्रजानन्वाज्यप्येतु देवान् ।
अनु त्वा सप्ते प्रदिशः सचन्ताᳪस्वधामस्मै यजमानाय धेहि ॥२॥
ईड्यश्चासि वन्द्यश्च वाजिन्नाशुश्चासि मेध्यश्च सप्ते ।
अग्निष्ट्वा देवैर्वसुभिः सजोषाः प्रीतं वह्निं वहतु जातवेदाः ॥३॥
स्तीर्णं बर्हिः सुष्टरीमा जुषाणोरु पृथु प्रथमानं पृथिव्याम् ।
देवेभिर्युक्तमदितिः सजोषाः स्योनं कृण्वाना सुविते दधातु ॥४॥
एताऽउ वः सुभगा विश्वरूपा वि पक्षोभिः श्रयमाणाऽउदातैः ।
ऋष्वाः सतीः कवषः शुम्भमाना द्वारो देवीः सुप्रायणा भवन्तु ॥५॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्तरा मित्रावरुणा चरन्ती मुखं यज्ञानामभि संविदाने ।
उषासा वाᳲसुहिरण्ये सुशिल्पेऽऋतस्य योनाविह सादयामि ॥६॥
प्रथमा वाᳲसरथिना सुवर्णा देवौ पश्यन्तौ भुवनानि विश्वा ।
अपिप्रयं चोदना वां मिमाना होतारा ज्योतिः प्रदिशा दिशन्ता ॥७॥
आदित्यैर्नो भारती वष्टु यज्ञᳲसरस्वती सह रुद्रैर्नऽआवीत् ।
इडोपहूता वसुभिः सजोषा यज्ञं नो देवीरमृतेषु धत्त ॥८॥
त्वष्टा वीरं देवकामं जजान त्वष्टुरर्वा जायतऽआशुरश्वः ।
त्वष्टेदं विश्वं भुवनं जजान बहोः कर्त्तारमिह यक्षि होतः ॥९॥
अश्वो घृतेन त्मन्या समक्तऽउप देवाँ२॥ऽऋतुशः पाथऽएतु ।
वनस्पतिर्देवलोकं प्रजानन्नग्निना हव्या स्वदितानि वक्षत् ॥१०॥
प्रजापतेस्तपसा वावृधानः सद्यो जातो दधिषे यज्ञमग्ने ।
स्वाहाकृतेन हविषा पुरोगा याहि साध्या हविरदन्तु देवाः ॥११॥
यदक्रन्दः प्रथमं जायमानऽउद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात् ।
श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहूऽउपस्तुत्यं महि जातं तेऽअर्वन् ॥१२॥
यमेन दत्तं त्रितऽएनमायुनगिन्द्रऽएणं प्रथमोऽअध्यतिष्ठत् ।
गन्धर्वोऽअस्य रशनामगृभ्णात्सूरादश्वं वसवो निरतष्ट ॥१३॥
असि यमोऽअस्यादित्योऽअर्वन्नसि त्रितो गुह्येन व्रतेन ।
असि सोमेन समया विपृक्तऽआहुस्ते त्रीणि दिवि बन्धनानि ॥१४॥
त्रीणि तऽआहुर्दिवि बन्धनानि त्रीण्यप्सु त्रीण्यन्तः समुद्रे ।
उतेव मे वरुणश्छन्त्स्यर्वन्यत्रा तऽआहुः परमं जनित्रम् ॥१५॥
इमा ते वाजिन्नवमार्जनानीमा शफानाᳲसनितुर्निधाना ।
अत्रा ते भद्रा रशनाऽअपश्यमृतस्य याऽअभिरक्षन्ति गोपाः ॥१६॥
आत्मानं ते मनसारादजानामवो दिवा पतयन्तं पतङ्गम् ।
शिरोऽअपश्यं पथिभिः सुगेभिररेणुभिर्जेहमानं पतत्रि ॥१७॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अत्रा ते रूपमुत्तममपश्यं जिगीषमाणमिषऽआ पदे गोः ।
यदा ते मर्त्तोऽअनु भोगमानडादिद् ग्रसिष्ठऽओषधीरजीगः ॥१८॥
अनु त्वा रथोऽअनु मर्योऽअर्वन्ननु गावोऽनु भगः कनीनाम् ।
अनु व्रातासस्तव सख्यमीयुरनु देवा ममिरे वीर्यं ते ॥१९॥
हिरण्यशृङ्गोऽयोऽअस्य पादा मनोजवाऽअवरऽइन्द्रऽआसीत् ।
देवाऽइदस्य हविरद्यमायन्योऽअर्वन्तं प्रथमोऽअध्यतिष्ठत् ॥२०॥
ईर्मान्तासः सिलिकमध्यमासः सꣳशूरणासो दिव्यासोऽअत्याः ।
हꣳसाऽइव श्रेणिशो यतन्ते यदाक्षिषुर्दिव्यमज्ममश्वाः ॥२१॥
तव शरीरं पतयिष्ण्वर्वन्तव चित्तं वातऽइव ध्रजीमान् ।
तव शृङ्गाणि विष्ठिता पुरुत्रारण्येषु जर्भुराणा चरन्ति ॥२२॥
उप प्रागाच्छसनं वाज्यर्वा देवद्रीचा मनसा दीध्यानः ।
अजः पुरो नीयते नाभिरस्यानु पश्चात्कवयो यन्ति रेभाः ॥२३॥
उप प्रागात्परमं यत्सधस्थमर्वाँ२॥ऽअच्छा पितरं मातरं च ।
अद्या देवाञ्जुष्टतमो हि गम्याऽअथा शास्ते दाशुषे वार्याणि ॥२४॥
समिद्धोऽअद्य मनुषो दुरोणे देवो देवान्यजसि जातवेदः ।
आ च वह मित्रमहश्चिकित्वान्त्वं दूतः कविरसि प्रचेताः ॥२५॥
तनूनपात्पथऽऋतस्य यानान्मध्वा समञ्जन्त्स्वदया सुजिह्व ।
मन्मानि धीभिरुत यज्ञमृन्धन्देवत्रा च कृणुह्यध्वरं नः ॥२६॥
नराशꣳसस्य महिमानमेषामुप स्तोषाम यजतस्य यज्ञैः ।
ये सुक्रतवः शुचयो धियन्धाः स्वदन्ति देवाऽउभयानि हव्या ॥२७॥
आजुह्वानऽईड्यो वन्द्यश्चा याह्यग्ने वसुभिः सजोषाः ।
त्वं देवानामसि यह्व होता सऽएनान्यक्षीषितो यजीयान् ॥२८॥
प्राचीनं बर्हिः प्रदिशा पृथिव्या वस्तोरस्या वृज्यतेऽअग्रेऽअह्नाम् ।
व्यु प्रथते वितरं वरीयो देवेभ्योऽअदितये स्योनम् ॥२९॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यचस्वतीरुर्विया वि श्रयन्तां पतिभ्यो न जनयः शुम्भमानाः ।
देवीर्द्वारो बृहतीर्विश्वमिन्वा देवेभ्यो भवत सुप्रायणाः ॥३०॥
आ सुष्वयन्ती यजतेऽउपाकेऽउषासानक्ता सदतां नि योनौ ।
दिव्ये योषणे बृहती सुरुक्मेऽअधि श्रियꣳशुक्रपिशं दधाने ॥३१॥
दैव्या होतारा प्रथमा सुवाचा मिमाना यज्ञं मनुषो यजध्यै ।
प्रचोदयन्ता विदथेषु कारू प्राचीनं ज्योतिः प्रदिशा दिशन्ता ॥३२॥
आ नो यज्ञं भारती तूयमेत्विडा मनुष्वदिह चेतयन्ती ।
तिस्रो देवीर्बर्हिरेदꣳस्योनꣳसरस्वती स्वपसः सदन्तु ॥३३॥
यऽइमे द्यावापृथिवी जनित्री रूपैरपिꣳशद्भुवनानि विश्वा ।
तमद्य होतरिषितो यजीयान्देवं त्वष्टारमिह यक्षि विद्वान् ॥३४॥
उपावसृज त्मन्या समञ्जन्देवानां पाथऽऋतुथा हवीꣳषि ।
वनस्पतिः शमिता देवोऽअग्निः स्वदन्तु हव्यं मधुना घृतेन ॥३५॥
सद्यो जातो व्यमिमीत यज्ञमग्निर्देवानामभवत्पुरोगाः ।
अस्य होतुः प्रदिश्यृतस्य वाचि स्वाहाकृतꣳहविरदन्तु देवाः ॥३६॥
केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्याऽअपेशसे । समुषद्भिरजायथाः ॥३७॥
जीमूतस्येव भवति प्रतीकं यद्वर्मी याति समदामुपस्थे ।
अनाविद्धया तन्वा जय त्वꣳस त्वा वर्मणो महिमा पिपर्त्तु ॥३८॥
धन्वना गा धन्वनाजिं जयेम धन्वना तीव्राः समदो जयेम ।
धनुः शत्रोरपकामं कृणोति धन्वना सर्वाः प्रदिशो जयेम ॥३९॥
वक्ष्यन्तीवेदा गनीगन्ति कर्णं प्रियꣳसखायं परिषस्वजाना ।
योषेव शिङ्क्ते वितताधि धन्वञ्ज्या इयꣳसमने पारयन्ती ॥४०॥
तेऽआचरन्ती समनेव योषा मातेव पुत्रं बिभृतामुपस्थे ।
अप शत्रून्विध्यताꣳसंविदानेऽआर्त्नीऽइमे विष्फुरन्तीऽअमित्रान् ॥४१॥
बह्वीनां पिता बहुरस्य पुत्रश्चिश्चा कृणोति समनावगत्य ।
इषुधिः सङ्काः पृतनाश्च सर्वाः पृष्ठे निनद्धो जयति प्रसूतः ॥४२॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रथे तिष्ठन्नयति वाजिनः पुरो यत्रयत्र कामयते सुषारथिः ।
अभीशूनां महिमानं पनायत मनः पश्चादनु यच्छन्ति रश्मयः ॥४३॥
तीव्रान् घोषान् कृण्वते वृषपाणयोऽश्वा रथेभिः सह वाजयन्तः ।
अवक्रामन्तः प्रपदैरमित्रान् क्षिणन्ति शत्रूँ१॥ऽरनपव्ययन्तः ॥४४॥
रथवाहनꣳहविरस्य नाम यत्रायुधं निहितमस्य वर्म ।
तत्रा रथमुप शग्मꣳसदेम विश्वाहा वयꣳसुमनस्यमानाः ॥४५॥
स्वादुषꣳसदः पितरो वयोधाः कृच्छ्रेश्रितः शक्तीवन्तो गभीराः ।
चित्रसेनाऽइषुबलाऽअमृध्राः सतोवीराऽउरवो व्रातसाहाः ॥४६॥
ब्राह्मणासः पितरः सोम्यासः शिवे नो द्यावापृथिवीऽअनेहसा ।
पूषा नः पातु दुरितादृतावृधो रक्षा माकिर्नोऽअघशꣳसऽईशत ॥४७॥
सुपर्णं वस्ते मृगोऽअस्या दन्तो गोभिः सन्नद्धा पतति प्रसूता ।
यत्रा नरः सं च वि च द्रवन्ति तत्रास्मभ्यमिषवः शर्म यꣳसन् ॥४८॥
ऋजीते परि वृङ्धि नोऽश्मा भवतु नस्तनूः ।
सोमोऽअधि ब्रवीतु नोऽदितिः शर्म यच्छतु ॥४९॥
आ जङ्घन्ति सान्वेषां जघनाँ२॥ऽउप जिघ्नते ।
अश्वाजनि प्रचेतसोऽश्वान्त्समत्सु चोदय ॥५०॥
अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः ।
हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान्पुमान्पुमाꣳसं परि पातु विश्वतः ॥५१॥
वनस्पते वीड्वङ्गो हि भूयाऽअस्मत्सखा प्रतरणः सुवीरः ।
गोभिः सन्नद्धोऽअसि वीडयस्वास्थाता ते जयतु जेत्वानि ॥५२॥
दिवः पृथिव्याः पर्योजऽउद्भृतं वनस्पतिभ्यः पर्य्याभृतꣳसहः ।
अपामोज्मानं परि गोभिरावृतमिन्द्रस्य वज्रꣳहविषा रथं यज ॥५३॥
इन्द्रस्य वज्रो मरुतामनीकं मित्रस्य गर्भो वरुणस्य नाभिः ।
सेमां नो हव्यदातिं जुषाणो देव रथ प्रति हव्या गृभाय ॥५४॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उप॑ श्वासय पृथि॒वीमु॒त द्यां पु॑रु॒त्रा ते॑ मनुतां॒ विष्ठि॑तं॒ जग॑त् ।
स दु॑न्दुभे स॒जूरिन्द्रे॑ण दे॒वैर्दू॒राद्दवी॑यो॒ऽअप॑ सेध॒ शत्रू॑न् ॥५५॥
आ क्र॑न्दय॒ बल॒मोजो॑ न॒ऽआधा॒ निष्ट॑निहि दुरि॒ता बाध॑मानः ।
अप॑ प्रोथ दुन्दुभे दु॒च्छुना॑ऽइ॒तऽइन्द्र॑स्य मु॒ष्टिर॑सि वी॒डय॑स्व ॥५६॥
आमूर॑ज प्र॒त्यावर्त्त॑ये॒माः के॑तु॒मद्दु॑न्दु॒भिर्वा॑वदीति ।
सम॑श्वप॑र्णा॒श्चर॑न्ति नो॒ नरो॒ऽस्माक॑मिन्द्र र॒थिनो॑ जयन्तु ॥५७॥
आ॒ग्ने॒यः कृ॒ष्णग्री॑वः सारस्व॒ती मे॒षी ब॒भ्रुः सौ॒म्यः पौ॒ष्णः
श्या॒मः शि॑तिपृ॒ष्ठो बा॑र्हस्प॒त्यः शि॒ल्पो वै॑श्वदे॒वऽऐ॒न्द्रोऽरु॒णो
मा॒रु॒तः क॒ल्माष॑ऽऐन्द्रा॒ग्नः सꣳहि॒तोऽधोरा॑मः सावि॒त्रो वा॑रु॒णः
कृ॒ष्णऽएक॑शितिपा॒त्पेत्व॑ः ॥५८॥
अ॒ग्नयेऽनी॑कवते॒ रोहि॑ताञ्जिरन॒ड्वान॒धोरा॑मौ सावि॒त्रौ पौ॒ष्णौ
र॑ज॒तना॑भी वैश्वदे॒वौ पि॒शङ्गौ॑ तूप॒रौ मा॑रु॒तः क॒ल्माष॑ऽआग्ने॒यः
कृ॒ष्णोऽजः सार॑स्व॒ती मे॒षी वा॑रु॒णः पेत्व॑ः ॥५९॥
[क]अ॒ग्नये॑ गाय॒त्राय॑ त्रि॒वृ॒ते राथ॑न्तराया॒ष्टाक॑पाल॒ऽइन्द्रा॑य॒ त्रैष्टु॑भाय
पञ्चद॒शाय॒ बार्ह॑ता॒यैका॑दशकपालो॒ विश्वे॑भ्यो दे॒वेभ्यो॒ जाग॑तेभ्यः
सप्तद॒शेभ्यो॑ वैरू॒पेभ्यो॒ द्वाद॑शकपालो मि॒त्रावरु॑णाभ्या॒मानु॑ष्टुभाभ्या-
मेकवि॒ꣳशाभ्यां॑ वैरा॒जाभ्यां॑ पय॒स्या॒ बृह॒स्पत॑ये॒ पाङ्क्ता॑य त्रि॒णवा॑य
शाक्व॒राय॑ च॒रुः स॑वि॒त्रऽऔष्णि॑हाय त्रयस्त्रि॒ꣳशाय॑ रैव॒ताय॒
द्वाद॑शकपालः प्राजाप॒त्यश्च॒रुरदि॑त्यै॒ विष्णु॑पत्न्यै च॒रुर॒ग्नये॑
वैश्वान॒राय॒ द्वाद॑शकपा॒लोऽनु॑मत्याऽअ॒ष्टाक॑पालः ॥६०॥

इत्येकोनत्रिंशोऽध्यायः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ त्रिंशोऽध्यायः

—:O:—

ऋषिः—नारायणः १-३, ५-२२। मेधातिथिः ४॥

देवता—सविता १-४। परमेश्वरः ५, ६। विद्वांसः ७, ८। विद्वान् ९-१२। ईश्वरः १३। राजेश्वरौ १४-२२॥

छन्दः—त्रिष्टुप् १। निचृद्गायत्री २। गायत्री ३, ४। स्वराडतिशक्वरी ५, ११। निचृदष्टिः ६,७। कृतिः ८, १३। भुरिगत्यष्टिः ९, १०, २१। विराट्संकृतिः १२। निचृदत्यष्टिः १४। विराट्कृतिः १५,१६। विराड्धृतिः १७। निचृत्प्रकृतिः १८। भुरिग्धृतिः १९। भुरिगतिजगती २०। निचृत्कृतिः २२॥

स्वरः—धैवतः १, १८। षड्जः २-४। पञ्चमः ५, ११। मध्यमः ६, ७। निषादः ८, १३, १५, १६, २०, २२। गान्धारः ९, १०, १२, १४, २१। ऋषभः १७, १९॥

देव॑ सवितः॒ प्र सु॑व य॒ज्ञं प्र सु॑व य॒ज्ञप॑तिं॒ भगा॑य ।
दि॒व्यो ग॑न्ध॒र्वः के॑त॒पूः केतं॑ नः पुनातु वा॒चस्पति॒र्वाचं॑ नः स्वदतु ॥ १॥
तत्स॑वि॒तुर्वरे॑ण्यं॒ भर्गो॑ दे॒वस्य॑ धीमहि। धियो॒ यो नः॑ प्रचो॒दया॑त् ॥ २॥
विश्वा॑नि देव सवितर्दुरि॒तानि॒ परा॑ सुव। यद्भ॒द्रन्तन्न॒ऽआ सु॑व ॥ ३॥
वि॒भ॒क्तार॑ꣳ हवामहे॒ वसो॑श्चि॒त्रस्य॒ राध॑सः। स॒वि॒तारं॑ नृ॒चक्ष॑सम् ॥ ४॥
ब्रह्म॑णे ब्राह्म॒णं क्ष॒त्राय॑ राज॒न्यं॒ म॒रुद्भ्यो॒ वैश्यं॒ तप॑से शू॒द्रं
तम॑से॒ तस्क॑रं ना॒रका॑य वीर॒हणं॑ पा॒प्मने॑ क्ली॒बमा॑क्र॒याया॑ऽ
अयो॒गूं कामा॑य पुँश्च॒लूमति॑क्रुष्टाय माग॒धम् ॥ ५॥
नृ॒त्ताय॑ सूतं॑ गी॒ताय॑ शैलू॒षं धर्मा॑य सभाच॒रं न॒रिष्ठा॑यै
भीम॒लं न॒र्माय॑ रे॒भꣳ हसा॑य॒ कारि॑मा॒नन्दा॑य स्त्रीष॒खं प्र॒मदे॑
कुमारीपु॒त्रं मे॒धायै॑ रथका॒रं धैर्या॑य॒ तक्षा॑णम् ॥ ६॥
तप॑से कौला॒लं मा॒यायै॑ क॒र्मार॑ꣳ रू॒पाय॑ मणिका॒रꣳ शु॒भे
व॒पꣳ श॒र॒व्याया॑ऽइषुका॒रꣳ हे॒त्यै धनु॑ष्का॒रं कर्म॑णे ज्याका॒रं
दि॒ष्टाय॑ रज्जुस॒र्जं मृ॒त्यवे॑ मृग॒युमन्त॑काय श्व॒निन॑म् ॥ ७॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नदीभ्यः पौञ्जिष्ठमृक्षीकाभ्यो नैषादं पुरुषव्याघ्राय दुर्मदं
गन्धर्वाप्सरोभ्यो व्रात्यं प्रयुग्भ्यऽ उन्मत्तꣳ सर्पदेवजनेभ्योऽ
प्रतिपदमयेभ्यः कितवमीर्यतायाऽ अकितवं पिशाचेभ्यो
विदलकारीं यातुधानेभ्यः कण्टकीकारीम् ॥८॥
सन्धये जारं गेहायोपपतिमार्त्यै परिवित्तं निर्ऋत्यै परिविविदान-
मराद्ध्याऽ एदिधिषुःपतिं निष्कृत्यै पेशस्कारीꣳ संज्ञानाय
स्मरकारीं प्रकामोद्यायोपसदं वर्णायानुरुधं बलायोपदाम् ॥९॥
उत्सादेभ्यः कुब्जं प्रमुदे वामनं द्वार्भ्यः स्रामꣳ स्वप्नायान्धम-
धर्माय बधिरं पवित्राय भिषजं प्रज्ञानाय नक्षत्रदर्शमाशिक्षायै
प्रश्निनमुपशिक्षायाऽ अभिप्रश्निनं मर्यादायै प्रश्नविवाकम् ॥१०॥
अर्मेभ्यो हस्तिपं जवायाश्वपं पुष्ट्यै गोपालं वीर्यायाविपालं
तेजसेऽजपालमिरायै कीनाशं कीलालाय सुराकारं भद्राय
गृहपꣳ श्रेयसे वित्तधमाध्यक्ष्यायानुक्षत्तारम् ॥११॥
भायै दार्वाहारं प्रभायाऽअग्न्येधं ब्रध्नस्य विष्टपायाभिषेक्तारं
वर्षिष्ठाय नाकाय परिवेष्टारं देवलोकाय पेशितारं मनुष्यलोकाय
प्रकरितारꣳ सर्वेभ्यो लोकेभ्यऽउपसेक्तारमवऽ ऋत्यै वधायोपमन्थितारं
मेधाय वासः पल्पूलीं प्रकामाय रजयित्रीम् ॥१२॥
ऋतये स्तेनहृदयं वैरहत्याय पिशुनं विविक्त्यै क्षत्तारमौपद्रष्ट्र्यायानुक्षत्तारं
बलायानुचरं भूम्ने परिष्कन्दं प्रियाय प्रियवादिनमरिष्ट्याऽअश्वसादꣳ
स्वर्गाय लोकाय भागदुघं वर्षिष्ठाय नाकाय परिवेष्टारम् ॥१३॥
मन्यवेऽयस्तापं क्रोधाय निसरं योगाय योक्तारꣳ शोकायाभिसर्त्तारं
क्षेमाय विमोक्तारमुत्कूलनिकूलेभ्यस्त्रिष्ठिनं वपुषे मानस्कृतꣳ
शीलायाञ्जनीकारीं निर्ऋत्यै कोशकारीं यमायासूम् ॥१४॥
यमाय यमसूमथर्वभ्योऽवतोकाꣳ संवत्सराय पर्यायिणीं परिवत्सरा-
याविजातामिदावत्सरायातीत्वरीमिद्वत्सरायातिष्कद्वरीं वत्सराय विजर्जराꣳ
संवत्सराय पलिक्नीमृभुभ्योऽजिनसन्धꣳ साध्येभ्यश्चर्मम्नम् ॥१५॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरोभ्यो धैवरमुपस्थावराभ्यो दाशं वैशन्ताभ्यो बैन्दं नड्वलाभ्यः
शौष्कलं पाराय मार्गारमवाराय कैवर्त्तं तीर्थेभ्यऽआन्दं विषमेभ्यो
मैनालꣳ स्वनेभ्यः पर्णकं गुहाभ्यः किरातꣳ सानुभ्यो जम्भकं
पर्वतेभ्यः किम्पूरुषम् ॥ १६॥
बीभत्सायै पौल्कसं वर्णाय हिरण्यकारं तुलायै वाणिजं
पश्चादोषाय ग्लाविनं विश्वेभ्यो भूतेभ्यः सिध्मलं भूत्यै
जागरणमभूत्यै स्वपनमार्त्यै जनवादिनं व्यृद्ध्याऽअपगल्भꣳ
सꣳशराय प्रच्छिदम् ॥ १७॥
अक्षराजाय कितवं कृतायादिनवदर्शं त्रेतायै कल्पिनं
द्वापरायाधिकल्पिनमास्कन्दाय सभास्थाणुं मृत्यवे गोव्यच्छमन्तकाय
गोघातं क्षुधे यो गां विकृन्तन्तं भिक्षमाणऽउप तिष्ठति
दुष्कृताय चरकाचार्यं पाप्मने सैलगम् ॥ १८॥
प्रतिश्रुत्कायाऽअर्तनं घोषाय भषमन्ताय बहुवादिनमनन्ताय
मूकꣳ शब्दायाडम्बराघातं महसे वीणावादं क्रोशाय तूणवध्ममं-
वरस्पराय शङ्खध्मं वनाय वनपमन्यतोरण्याय दावपम् ॥ १९॥
नर्माय पुꣳश्चलूꣳ हसाय कारिं यादसे शाबल्यां ग्रामण्यं
गणकमभिक्रोशकं तान्महसे वीणावादं पाणिघ्नं तूणवध्मं
तान्नृत्तायानन्दाय तलवम् ॥ २०॥
अग्नये पीवानं पृथिव्यै पीठसर्पिणं वायवे चाण्डालमन्तरिक्षाय
वꣳशनर्तिनं दिवे खलतिꣳ सूर्याय हर्यक्षं नक्षत्रेभ्यः किर्मिरं
चन्द्रमसे किलासमह्ने शुक्लं पिङ्गाक्षꣳ रात्र्यै कृष्णं पिङ्गाक्षम् ॥ २१॥
अथैतानष्टौ विरूपाना लभतेऽतिदीर्घं चातिह्रस्वं चातिस्थूलं
चातिकृशं चातिशुक्लं चातिकृष्णं चातिकुल्वं चातिलोमशं च।
अशूद्राऽअब्राह्मणास्ते प्राजापत्याः। मागधः पुꣳश्चली
कितवः क्लीबोऽशूद्राऽअब्राह्मणास्ते प्राजापत्याः ॥ २२॥

इति त्रिंशोऽध्यायः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथैकत्रिंशोऽध्यायः

—:O:—

ऋषिः—नारायणः १-१६। उत्तरनारायणः १७-२२॥

देवता—पुरुषः १, ३, ४, ६, ८-१६। ईशानः २। स्रष्टा ५। स्रष्टेश्वरः ७। आदित्यः १७-१९, २२। सूर्यः २०। विश्वेदेवाः २१॥

छन्दः—निचृदनुष्टुप् १-३, ८-११, १४। अनुष्टुप् ४, ५, ७, १२, १३, १५, २०, २१। विराडनुष्टुप् ६। विराट्त्रिष्टुप् १६। भुरिक्त्रिष्टुप् १७, १९। निचृत्त्रिष्टुप् १८। निचृदार्षीत्रिष्टुप् २२॥

स्वरः—गान्धारः १-१५, २०, २१। धैवतः १६-१९, २२॥

सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।
स भूमिꣳ सर्वत स्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥१॥
पुरुषऽएवेदꣳसर्वं यद् भूतं यच्च भाव्यम् ।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥२॥
एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः ।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥३॥
त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः ।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशनेऽअभि ॥४॥
ततो विराडजायत विराजोऽअधि पूरुषः ।
स जातोऽअत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथो पुरः ॥५॥
तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम् ।
पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये ॥६॥
तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऽऋचः सामानि जज्ञिरे ।
छन्दाꣳसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥७॥
तस्मादश्वाऽअजायन्त ये के चोभयादतः ।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाताऽअजावयः ॥८॥
तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः ।
तेन देवाऽअयजन्त साध्याऽऋषयश्च ये ॥९॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन् ।
मुखं किमस्यासीत्किं बाहू किमूरू पादाऽउच्येते ॥१०॥
ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः ।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याᳬ शूद्रोऽअजायत ॥११॥
चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्योऽअजायत ।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ॥१२॥
नाभ्याऽआसीदन्तरिक्षᳬशीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत ।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२॥ऽअकल्पयन् ॥१३॥
यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत ।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्मऽइध्मः शरद्धविः ॥१४॥
सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः ।
देवा यद्यज्ञं तन्वानाऽअबध्नन् पुरुषं पशुम् ॥१५॥
यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥१६॥
अद्भ्यः सम्भृतः पृथिव्यै रसाच्च विश्वकर्मणः समवर्त्तताग्रे ।
तस्य त्वष्टा विदधद्रूपमेति तन्मर्त्यस्य देवत्वमाजानमग्रे ॥१७॥
वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात् ।
तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय ॥१८॥
प्रजापतिश्चरति गर्भेऽअन्तरजायमानो बहुधा वि जायते ।
तस्य योनिं परि पश्यन्ति धीरास्तस्मिन्ह तस्थुर्भुवनानि विश्वा ॥१९॥
यो देवेभ्यऽआतपति यो देवानां पुरोहितः ।
पूर्वो यो देवेभ्यो जातो नमो रुचाय ब्राह्मये ॥२०॥
रुचं ब्राह्मं जनयन्तो देवाऽअग्रे तदब्रुवन् ।
यस्त्वैवं ब्राह्मणो विद्यात्तस्य देवाऽअसन्वशे ॥२१॥
श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ
व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं मऽइषाण सर्वलोकं मऽइषाण ॥२२॥

इत्येकत्रिंशोऽध्यायः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ द्वात्रिंशोऽध्यायः

—:o:—

ऋषिः—स्वयम्भु ब्रह्म १-१२। मेधाकामः १३-१५। श्रीकामः १६॥

देवता—परमात्मा १, २, ६-८, १०-१२, १४। हिरण्यगर्भः परमात्मा ३। आत्मा ४। परमेश्वरः ५। विद्वान् ९। इन्द्रः १३। परमेश्वरविद्वांसौ १५। विद्वद्राजानौ १६॥

छन्दः—अनुष्टुप् १, २, १६। द्विपदागायत्री ३। भुरिक्त्रिष्टुप् ४, ५। निचृत्त्रिष्टुप् ६, ८-११। निचृच्छक्वरी ७। त्रिष्टुप् १२। भुरिग्गायत्री १३। निचृदनुष्टुप् १४। निचृद्बृहती १५॥

स्वरः—गान्धारः १, २, १४, १६। षड्जः ३, १३। धैवतः ४-६, ८-१२। निषादः ७। मध्यमः १५॥

तदेवाग्निस्तदादित्यस्तद्वायुस्तदु चन्द्रमाः ।
तदेव शुक्रं तद् ब्रह्म ताऽआपः स प्रजापतिः ॥१॥

सर्वे निमेषा जज्ञिरे विद्युतः पुरुषादधि ।
नैनमूर्ध्वं न तिर्यञ्चं न मध्ये परि जग्रभत् ॥२॥

न तस्य प्रतिमाऽअस्ति यस्य नाम महद्यशः ॥३॥

एषो ह देवः प्रदिशोऽनु सर्वाः पूर्वो ह जातः सऽउ गर्भेऽअन्तः ।
सऽएव जातः स जनिष्यमाणः प्रत्यङ् जनास्तिष्ठति सर्वतोमुखः ॥४॥

यस्माज्जातं न पुरा किं चनैव य आबभूव भुवनानि विश्वा ।
प्रजापतिः प्रजया सꣳरराणस्त्रीणि ज्योतीꣳषि सचते स षोडशी ॥५॥

येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा येन स्वः स्तभितं येन नाकः ।
योऽअन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥६॥

यं क्रन्दसीऽअवसा तस्तभानेऽअभ्यैक्षेतां मनसा रेजमाने ।
यत्राधि सूरऽउदितो विभाति कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥७॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेनस्तत्पश्यन्निहितं गुहा सद्यत्र विश्वं भवत्येकनीडम् ।
तस्मिन्निदꣳ सं च वि चैति सर्वꣳ सऽओतः प्रोतश्च विभूः प्रजासु ॥८॥
प्र तद्वोचेदमृतं नु विद्वान् गन्धर्वो धाम विभृतं गुहा सत् ।
त्रीणि पदानि निहिता गुहास्य यस्तानि वेद स पितुः पितासत् ॥९॥
स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा ।
यत्र देवाऽअमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त ॥१०॥
परीत्य भूतानि परीत्य लोकान् परीत्य सर्वाः प्रदिशो दिशश्च ।
उपस्थाय प्रथमजामृतस्यात्मनात्मानमभि सं विवेश ॥११॥
परि द्यावापृथिवी सद्यऽइत्वा परि लोकान्परि दिशः परि स्वः ।
ऋतस्य तन्तुं विततं विचृत्य तदपश्यत्तदभवत्तदासीत् ॥१२॥
सदसस्पतिमद्भुतं प्रियमिन्द्रस्य काम्यम् ।
सनिं मेधामयासिषꣳ स्वाहा ॥१३॥
यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते ।
तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा ॥१४॥
मेधां मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः ।
मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधां धाता ददातु मे स्वाहा ॥१५॥
इदं मे ब्रह्म च क्षत्रं चोभे श्रियमश्नुताम् ।
मयि देवा दधतु श्रियमुत्तमां तस्यै ते स्वाहा ॥१६॥

इति द्वात्रिंशोऽध्यायः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ त्रयस्त्रिंशोऽध्यायः

—:०:—

ऋषिः—वत्सप्रीः १। विश्वरूपः २, ४। गोतमः ३, १६। कुत्सः ५, ६, २९, ३७, ३८, ४२, ६८। विश्वामित्रः ७, ८, २२, २६, ६०, ६३, ७५। भरद्वाजः ९, १३, ६१, ६९, ८४। मेधातिथिः १०, ४५, ४६, ८१-८३, ९७। पराशरः ११। विश्ववारा १२। वसिष्ठः १४, १८, २०, ४४, ७०, ७१, ७६, ८८। प्रस्कण्वः १५, ३१-३३, ३६। लुशोधानाकः १७। पुरुमीढाजमीढौ १९। सुनीतिः २१। सुचीकः २३। त्रिशोकः २४। मधुच्छन्दाः २५, ५६-५८। अगस्त्यः २७, ३४, ७८, ७९। गौरीवितिः २८, ६४। विभ्राट् ३०। श्रुतकक्षसुकक्षौ ३५। जमदग्निः ३९, ४०, ८५, ८७। नृमेधः ४१, ६६, ६७, ९५, ९६। हिरण्यस्तूपः ४३। कुत्सीदिः ४७। प्रतिक्षत्रः ४८। वत्सारः ४९। प्रगाथः ५०। कूर्मः ५१। लुशः ५२। सुहोत्रः ५३, ७७, ९३। वामदेवः ५४, ६५। ऋजिश्वः ५५। कुशिकः ५९। देवलः ६२। दक्षः ७२, ७३। प्रजापतिः ७४। बृहद्दिवः ८०। तापसः ८६। कण्वः ८९। त्रितः ९०। मनुः ९१, ९४। मेधः ९२॥

देवता—अग्नयः १, २। अग्निः ३-६, ९-१२, १५, १६। विद्वांसः ७, ८, १४। विश्वेदेवाः १३, ३९, ४७-४९, ५१-५४, ७७, ८१-८३, ८९, ९१, ९४। सविता १७, २०, ३४, ६९, ८४। इन्द्रः १८, २२-२९, ५९, ६३-६७, ७९, ९०, ९५, ९६। इन्द्रवायू १९, ४५, ५६, ८६। वेनः २१। सूर्यः ३०-३२, ३५-३८, ४०-४३, ७४। विद्वान् ३३, ७२, ७५। वायुः ४४, ५५, ७०, ८५। वरुणः ४६। महेन्द्रः ५०, ८०, ९७। मित्रावरुणौ ५७, ७१, ८७। अश्विनौ ५८, ८८। वैश्वानरः ६०, ९२। इन्द्राग्नी ६१, ७६, ९३। सोमः ६२। आदित्याः ६८। अध्वर्यू ७३। इन्द्रामरुतौ ७८॥

छन्दः—स्वराट्पङ्क्तिः १, ५, ७, १६, १८, ६८। गायत्री २, ९, १९, ४५, ४६, ५६-५८, ६५, ७१, ७६। निचृद्गायत्री ३, ४, २०, २१, २४, २५, ३१-३३, ३५, ३६, ६१, ६२, ७२, ७३, ७७। भुरिक्पङ्क्तिः ६, १३, २६, २८, ५९। त्रिष्टुप् ८। विराड्गायत्री १०। विराट्त्रिष्टुप् ११, २७, ४३, ७०, ७८। निचृत्त्रिष्टुप् १२, २२, ४२, ४४, ४८, ५२, ५४। अनुष्टुप् १४। बृहती १५। भुरिक्त्रिष्टुप् १७, २३, ६०। जगती २९। विराड्जगती ३०। त्रिष्टुप् ३४, ३७, ३८, ५०, ५१, ५३, ५५, ६३, ६४, ७४, ७९। विराड्बृहती ३९, ८५, ९१। भुरिग्बृहती ४०, ९५। निचृद्बृहती ४१, ८१, ८२, ८६-८८, ९०, ९२, ९६। स्वराडार्चीगायत्री ४७। निचृज्जगती ४९, ६९, ७५, ८४। भुरिगनुष्टुप् ६६, ८९, ९३। पङ्क्तिः ६७, ८०, ९४। सतोबृहती ८३, ९७॥

स्वरः—पञ्चमः १, ५-७, १३, १६, १८, २६, २८, ५९, ६७, ६८, ८०, ९४। षड्जः २-४, ९, १०, १९-२१, २४, २५, ३१-३३, ३५, ३६, ४५-४७, ५६-५८, ६१, ६२, ६५, ७१-७३, ७६, ७७। धैवतः ८, ११, १२, १७, २२, २३, २७, ३४,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३७, ३८, ४२-४४, ४८, ५०-५५, ६०, ६३, ६४, ७०, ७४, ७८, ७९। गान्धारः १४, ६६, ८९, ९३। मध्यमः १५, ३९-४१, ८१-८३, ८५-८८, ९०-९२, ९५-९७। निषादः २९, ३०, ४९, ६९, ७५, ८४॥

अस्याजरासो दमामरित्राऽअर्चद्धूमासोऽअग्नयः पावकाः ।
श्वितीचयः श्वात्रासो भुरण्यवो वनर्षदो वायवो न सोमाः ॥१॥
हरयो धूमकेतवो वातजूताऽउप द्यवि। यतन्ते वृथगग्नयः ॥२॥
यजा नो मित्रावरुणा यजा देवाँ२॥ऽऋतं बृहत् ।
अग्ने यक्षि स्वं दमम् ॥३॥
युक्ष्वा हि देवहूतमाँ२॥ऽअश्वाँ२॥ऽअग्ने रथीरिव ।
नि होता पूर्व्यः सदः ॥४॥
द्वे विरूपे चरतः स्वर्थेऽअन्यान्या वत्समुप धापयेते ।
हरिरन्यस्यां भवति स्वधावाञ्छुक्रोऽअन्यस्यां ददृशे सुवर्चाः ॥५॥
अयमिह प्रथमो धायि धातृभिर्होता यजिष्ठोऽअध्वरेष्वीड्यः ।
यमप्नवानो भृगवो विरुरुचुर्वनेषु चित्रं विभ्वं विशेविशे ॥६॥
त्रीणि शता त्री सहस्राण्यग्निं त्रिꣳशच्च देवा नव चासपर्यन् ।
औक्षन् घृतैरस्तृणन् बर्हिरस्माऽआदिद्धोतारं न्यसादयन्त ॥७॥
मूर्द्धानं दिवोऽअरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृतऽआ जातमग्निम् ।
कविꣳ सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः ॥८॥
अग्निर्वृत्राणि जङ्घनद् द्रविणस्युर्विपन्यया। समिद्धः शुक्रऽआहुतः ॥९॥
विश्वेभिः सोम्यं मध्वग्नऽइन्द्रेण वायुना। पिबा मित्रस्य धामभिः ॥१०॥
आ यदिषे नृपतिं तेजऽआनट् शुचि रेतो निषिक्तं द्यौरभीके ।
अग्निः शर्द्धमनवद्यं युवानꣳ स्वाध्यं जनयत्सूदयच्च ॥११॥
अग्ने शर्द्ध महते सौभगाय तव द्युम्नान्युत्तमानि सन्तु ।
सं जास्पत्यꣳ सुयममा कृणुष्व शत्रूयतामभि तिष्ठा महाꣳसि ॥१२॥
त्वाꣳहि मन्द्रतममर्कशोकैर्ववृमहे महि नः श्रोष्यग्ने ।
इन्द्रं न त्वा शवसा देवता वायुं पृणन्ति राधसा नृतमाः ॥१३॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्वेऽअग्ने स्वाहुत प्रियासः सन्तु सूरयः ।
यन्तारो ये मघवानो जनानामूर्वान्दयन्त गोनाम् ॥१४॥
श्रुधि श्रुत्कर्ण वह्निभिर्देवैरग्ने सयावभिः ।
आ सीदन्तु बर्हिषि मित्रोऽअर्यमा प्रातर्यावाणोऽअध्वरम् ॥१५॥
विश्वेषामदितिर्यज्ञियानां विश्वेषामतिथिर्मानुषाणाम् ।
अग्निर्देवानामवऽआवृणानः सुमृडीको भवतु जातवेदाः ॥१६॥
महोऽअग्नेः समिधानस्य शर्मण्यनागा मित्रे वरुणे स्वस्तये ।
श्रेष्ठे स्याम सवितुः सवीमनि तद्देवानामवोऽअद्या वृणीमहे ॥१७॥
आपश्चित्पिप्यु स्तर्यो न गावो नक्षन्नृतं जरितारस्तऽइन्द्र ।
याहि वायुर्न नियुतो नोऽअच्छा त्वꣳ हि धीभिर्दयसे वि वाजान् ॥१८॥
गावऽउपावतावतं मही यज्ञस्य रप्सुदा । उभा कर्णा हिरण्यया ॥१९॥
यदद्य सूरऽउदितेऽनागा मित्रोऽअर्यमा । सुवाति सविता भगः ॥२०॥
आ सुते सिञ्चत श्रियꣳ रोदस्योरभिश्रियम् । रसा दधीत वृषभम् ॥२१॥
आतिष्ठन्तं परि विश्वेऽअभूषञ्छ्रियो वसानश्चरति स्वरोचिः ।
महत्तद् वृष्णोऽअसुरस्य नामा विश्वरूपोऽअमृतानि तस्थौ ॥२२॥
प्र वो महे मन्दमानायान्धसोऽर्चा विश्वानराय विश्वाभुवे ।
इन्द्रस्य यस्य सुमखꣳ सहो महि श्रवो नृम्णं च रोदसी सपर्यतः ॥२३॥
बृहन्निदिध्मऽएषां भूरि शस्तं पृथुः स्वरुः । येषामिन्द्रो युवा सखा ॥२४॥
इन्द्रेहि मत्स्यन्धसो विश्वेभिः सोमपर्वभिः । महाँ२॥ऽअभिष्टिरोजसा ॥२५॥
इन्द्रो वृत्रमवृणोच्छर्द्धनीतिः प्र मायिनाममिनाद्वर्पणीतिः ।
अहन् व्यꣳसमुशधग्वनेष्वाविर्धेनाऽअकृणोद्राम्याणाम् ॥२६॥
कुतस्त्वमिन्द्र माहिनः सन्नेको यासि सत्पते किं तऽइत्था ।
सं पृच्छसे समराणः शुभानैर्वोचेस्तन्नो हरिवो यत्तेऽअस्मे ॥२७॥
आ तत्तऽइन्द्रायवः पनन्ताभि यऽऊर्वं गोमन्तं तितृत्सान् ।
सकृत्स्वं ये पुरुपुत्रां महीꣳ सहस्रधारां बृहतीं दुदुक्षन् ॥२८॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इमां ते धियं प्र भरे महो महीमस्य स्तोत्रे धिषणा यत्तऽआनजे ।
तमुत्सवे च प्रसवे च सासहिमिन्द्रं देवासः शवसामदन्ननु ॥२९॥
विभ्राड् बृहत्पिबतु सोम्यं मध्वायुर्दधद्यज्ञपतावविहुतम् ।
वातजूतो योऽअभिरक्षति त्मना प्रजाः पुपोष पुरुधा वि राजति ॥३०॥
उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः । दृशे विश्वाय सूर्यम् ॥३१॥
येना पावक चक्षसा भुरण्यन्तं जनाँ२॥ऽअनु । त्वं वरुण पश्यसि ॥३२॥
दैव्यावध्वर्यूऽआ गतꣳ रथेन सूर्यत्वचा । मध्वा यज्ञꣳ समञ्जाथे ॥३३॥
आ नऽइडाभिर्विदथे सुशस्ति विश्वानरः सविता देवऽएतु ।
अपि यथा युवानो मत्सथा नो विश्वं जगदभिपित्वे मनीषा ॥३४॥
यदद्य कच्च वृत्रहन्नुदगाऽअभि सूर्य । सर्वं तदिन्द्र ते वशे ॥३५॥
तरणिर्विश्वदर्शतो ज्योतिष्कृदसि सूर्य । विश्वमा भासि रोचनम् ॥३६॥
तत्सूर्यस्य देवत्वं तन्महित्वं मध्या कर्त्तोर्विततꣳ सं जभार ।
यदेदयुक्त हरितः सधस्थादाद्रात्री वासस्तनुते सिमस्मै ॥३७॥
तन्मित्रस्य वरुणस्याभिचक्षे सूर्यो रूपं कृणुते द्योरुपस्थे ।
अनन्तमन्यद्रुशदस्य पाजः कृष्णमन्यद्धरितः सं भरन्ति ॥३८॥
बण्महाँ२॥ऽअसि सूर्य बडादित्य महाँ२॥ऽअसि ।
महस्ते सतो महिमा पनस्यतेऽद्धा देव महाँ२॥ऽअसि ॥३९॥
बट् सूर्य श्रवसा महाँ२॥ऽअसि सत्रा देव महाँ२॥ऽअसि ।
मह्ना देवानामसुर्यः पुरोहितो विभु ज्योतिरदाभ्यम् ॥४०॥
श्रायन्तऽइव सूर्यं विश्वेदिन्द्रस्य भक्षत ।
वसूनि जाते जनमानऽओजसा प्रति भागं न दीधिम ॥४१॥
अद्या देवाऽउदिता सूर्यस्य निरꣳहसः पिपृता निरवद्यात् ।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवीऽउत द्यौः ॥४२॥
आ कृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च ।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥४३॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्र वांवृजे सुप्रया बुर्हिरेषामा विश्पतीव बीरिटऽइयाते ।
विशामक्तोरुषसः पूर्वहूतौ वायुः पूषा स्वस्तये नियुत्वान् ॥४४॥
इन्द्रवायू बृहस्पतिं मित्राग्निं पूषणं भगम्। आदित्यान्मारुतं गणम् ॥४५॥
वरुणः प्राविता भुवन्मित्रो विश्वाभिरूतिभिः। करतां नः सुराधसः ॥४६॥
अधि न इन्द्रैषां विष्णो सजात्यानाम्। इता मरुतोऽअश्विना ॥४७॥
अग्नऽइन्द्र वरुण मित्र देवाः शर्द्धः प्र यन्त मारुतोत विष्णो ।
उभा नासत्या रुद्रोऽअध ग्नाः पूषा भगः सरस्वती जुषन्त ॥४८॥
इन्द्राग्नी मित्रावरुणादितिꣳ स्वः पृथिवीं द्यां मरुतः पर्वताँ२॥ऽअपः ।
हुवे विष्णुं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं भगं नु शꣳसꣳसवितारमूतये ॥४९॥
अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः ।
यः शꣳसते स्तुवते धायि पज्रऽइन्द्रज्येष्ठाऽअस्माँ२॥ऽअवन्तु देवाः ॥५०॥
अर्वाञ्चोऽअद्या भवता यजत्राऽआ वो हार्दि भयमानो व्ययेयम् ।
त्राध्वं नो देवा निजुरो वृकस्य त्राध्वं कर्त्तादवपदो यजत्राः ॥५१॥
विश्वेऽअद्य मरुतो विश्वऽऊती विश्वे भवन्त्वग्नयः समिद्धाः ।
विश्वे नो देवाऽअवसा गमन्तु विश्वमस्तु द्रविणं वाजोऽअस्मे ॥५२॥
विश्वेदेवाः शृणुतेमꣳ हवं मे येऽअन्तरिक्षे यऽउप द्यवि ष्ठ ।
येऽअग्निजिह्वाऽउत वा यजत्राऽआसद्यास्मिन् बर्हिषि मादयध्वम् ॥५३॥
देवेभ्यो हि प्रथमं यज्ञियेभ्योऽमृतत्वꣳ सुवसि भागमुत्तमम् ।
आदिद्दामानꣳ सवितर्व्यूर्णुषेऽनूचीना जीविता मानुषेभ्यः ॥५४॥
प्र वायुमच्छा बृहती मनीषा बृहद्रयिं विश्ववारꣳ रथप्राम् ।
द्युतद्यामा नियुतः पत्यमानः कविः कविमियक्षसि प्रयज्यो ॥५५॥
इन्द्रवायूऽइमे सुताऽउप प्रयोभिरा गतम्। इन्दवो वामुशन्ति हि ॥५६॥
मित्रꣳ हुवे पूतदक्षं वरुणं च रिशादसम्। धियं घृताचीꣳ साधन्ता ॥५७॥
दस्रा युवाकवः सुता नासत्या वृक्तबर्हिषः। आ यातꣳ रुद्रवर्त्तनी ॥५८॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विदद्यदी सरमा रुग्णमद्रेर्महि पाथः पूर्व्यं सध्र्यक्कः ।
अग्रं नयत्सुपद्यक्षराणामच्छा रवं प्रथमा जानती गात् ॥५९॥
नहि स्पशमविदन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात्पुरऽएतारमग्नेः ।
एमेनमवृधन्नमृताऽअमर्त्यं वैश्वानरं क्षैत्रजित्याय देवाः ॥६०॥
उग्रा विघनिना मृधऽइन्द्राग्नी हवामहे । ता नो मृडातऽईदृशे ॥६१॥
उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे । अभि देवाँ२॥ऽइयक्षते ॥६२॥

ये त्वाहिहत्ये मघवन्नवर्द्धन्ये शाम्बरे हरिवो ये गविष्टौ ।
ये त्वा नूनमनुमदन्ति विप्राः पिबेन्द्र सोमं सगणो मरुद्भिः ॥६३॥
जनिष्ठाऽउग्रः सहसे तुराय मन्द्रऽओजिष्ठो बहुलाभिमानः ।
अवर्द्धन्निन्द्रं मरुतश्चिदत्र माता यद्वीरं दधनद्धनिष्ठा ॥६४॥
आ तू नऽइन्द्र वृत्रहन्नस्माकमर्द्धमा गहि । महान्महीभिरूतिभिः ॥६५॥
त्वमिन्द्र प्रतूर्त्तिष्वभि विश्वाऽअसि स्पृधः ।
अशस्तिहा जनिता विश्वतूरसि त्वं तूर्य्य तरुष्यतः ॥६६॥
अनु ते शुष्मं तुरयन्तमीयतुः क्षोणी शिशुं न मातरा ।
विश्वास्ते स्पृधः श्नथयन्त मन्यवे वृत्रं यदिन्द्र तूर्वसि ॥६७॥

यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नमादित्यासो भवता मृडयन्तः ।
आ वोऽर्वाची सुमतिर्ववृत्यादंहोश्चिद्या वरिवोवित्तरासत् ॥६८॥
अदब्धेभिः सवितः पायुभिष्ट्वं शिवेभिरद्य परि पाहि नो गयम् ।
हिरण्यजिह्वः सुविताय नव्यसे रक्षा माकिर्नोऽअघशंसऽईशत ॥६९॥
प्र वीरया शुचयो दद्रिरे वामध्वर्युभिर्मधुमन्तः सुतासः ।
वह वायो नियुतो याह्यच्छा पिबा सुतस्यान्धसो मदाय ॥७०॥
गावऽउपावतावतं मही यज्ञस्य रप्सुदा । उभा कर्णा हिरण्यया ॥७१॥
काव्ययोराजानेषु क्रत्वा दक्षस्य दुरोणे । रिशादसा सधस्थऽआ ॥७२॥
दैव्यावध्वर्यूऽआ गतं रथेन सूर्यत्वचा । मध्वा यज्ञं समञ्जाथे ॥७३॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तिरश्चीनो विततो रश्मिरेषामधः स्विदासी३दुपरि स्विदासी३त् ।
रेतोधाऽआसन्महिमानऽआसन्त्स्वधाऽअवस्तात्प्रयतिः परस्तात् ॥७४॥
आ रोदसीऽअपृणदा स्वर्महज्जातं यदेनमपसोऽअधारयन् ।
सोऽअध्वराय परि णीयते कविरत्यो न वाजसातये चनोहितः ॥७५॥
उक्थेभिर्वृत्रहन्तमा या मन्दाना चिदा गिरा । आङ्गूषैराविवासतः ॥७६॥
उप नः सूनवो गिरः शृण्वन्त्वमृतस्य ये । सुमृडीका भवन्तु नः ॥७७॥

ब्रह्माणि मे मतयः शꣳसुतासः शुष्मऽइयर्ति प्रभृतो मेऽअद्रिः ।
आ शासते प्रति हर्यन्त्युक्थेमा हरी वहतस्ता नोऽअच्छ ॥७८॥
अनुत्तमा ते मघवन्नकिर्नु न त्वावाँ२॥ऽअस्ति देवता विदानः ।
न जायमानो नशते न जातो यानि करिष्या कृणुहि प्रवृद्ध ॥७९॥
तदिदास भुवनेषु ज्येष्ठं यतो जज्ञऽउग्रस्त्वेषनृम्णः ।
सद्यो जज्ञानो नि रिणाति शत्रूननु यं विश्वे मदन्त्यूमाः ॥८०॥
इमाऽउ त्वा पुरूवसो गिरो वर्द्धन्तु या मम ।
पावकवर्णाः शुचयो विपश्चितोऽभि स्तोमैरनूषत ॥८१॥
यस्यायं विश्वऽआर्यो दासः शेवधिपाऽअरिः ।
तिरश्चिदर्ये रुशमे पवीरवि तुभ्येत्सोऽअज्यते रयिः ॥८२॥
अयꣳ सहस्रमृषिभिः सहस्कृतः समुद्रऽइव पप्रथे ।
सत्यः सोऽअस्य महिमा गृणे शवो यज्ञेषु विप्रराज्ये ॥८३॥

अदब्धेभिः सवितः पायुभिष्ट्वꣳ शिवेभिरद्य परि पाहि नो गयम् ।
हिरण्यजिह्वः सुविताय नव्यसे रक्षा माकिर्नोऽअघशꣳसऽईशत ॥८४॥

आ नो यज्ञं दिविस्पृशं वायो याहि सुमन्मभिः ।
अन्तः पवित्रऽउपरि श्रीणानोऽयꣳ शुक्रोऽअयामि ते ॥८५॥
इन्द्रवायू सुसन्दृशा सुहवेह हवामहे ।
यथा नः सर्वऽइज्जनोऽनमीवः सङ्गमे सुमनाऽअसत् ॥८६॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋधगित्था स मर्त्यः शशमे देवतातये ।
यो नूनं मित्रावरुणावभिष्टयऽआचक्रे हव्यदातये ॥८७॥
आ यातमुप भूषतं मध्वः पिबतमश्विना ।
दुग्धं पयो वृषणा जेन्यावसू मा नो मर्धिष्टमा गतम् ॥८८॥
प्रैतु ब्रह्मणस्पतिः प्र देव्येतु सूनृता ।
अच्छा वीरं नर्यं पङ्क्तिराधसं देवा यज्ञं नयन्तु नः ॥८९॥
चन्द्रमाऽअप्स्वन्तरा सुपर्णो धावते दिवि ।
रयिं पिशङ्गं बहुलं पुरुस्पृहꣳ हरिरेति कनिक्रदत् ॥९०॥
देवंदेवं वोऽवसे देवं देवमभिष्टये ।
देवंदेवꣳ हुवेम वाजसातये गृणन्तो देव्या धिया ॥९१॥
दिवि पृष्टोऽअरोचताग्निर्वैश्वानरो बृहन् ।
क्ष्मया वृधानऽओजसा चनोहितो ज्योतिषा बाधते तमः ॥९२॥
इन्द्राग्नीऽअपादियं पूर्वागात्पद्वतीभ्यः ।
हित्वी शिरो जिह्वया वावदच्चरत्त्रिꣳशत्पदा न्यक्रमीत् ॥९३॥
देवासो हि ष्मा मनवे समन्यवो विश्वे साकꣳ सरातयः ।
ते नोऽअद्य तेऽअपरं तुचे तु नो भवन्तु वरिवोविदः ॥९४॥
अपाधमदभिशस्तीरशस्तिहाथेन्द्रो द्युम्न्याभवत् ।
देवास्तऽइन्द्र सख्याय येमिरे बृहद्भानो मरुद्गण ॥९५॥
प्र वऽइन्द्राय बृहते मरुतो ब्रह्मार्चत ।
वृत्रꣳ हनति वृत्रहा शतक्रतुर्वज्रेण शतपर्वणा ॥९६॥
अस्येदिन्द्रो वावृधे वृष्ण्यꣳ शवो मदे सुतस्य विष्णवि ।
अद्या तमस्य महिमानमायवोऽनु ष्टुवन्ति पूर्वथा ॥९७॥

इति त्रयस्त्रिंशोऽध्यायः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ चतुस्त्रिंशोऽध्यायः

—:०:—

ऋषिः—शिवसङ्कल्पः १-६। अगस्त्यः ७-९, ४८। गृत्समदः १०, ११, ५८। हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः १२, १३, २४-२७। देवश्रवदेववातौ भारतौ १४, १५, १८, १९। नोधाः १६, १७। गोतमः २०-२३, ३३। प्रस्कण्वः २८। कुत्सः २९, ३०, ३२। हिरण्यस्तूपः ३१, ४७। वसिष्ठः ३४-४०। सुहोत्रः ४१। ऋजिष्वः ४२, ५३। मेधातिथिः ४३, ४४। भरद्वाजः ४५। विहव्यः ४६। प्राजापत्यो यज्ञः ४९। दक्षः ५०-५२। कूर्मः गार्त्समदः ५४। कण्वः ५५-५७॥

देवता—मनः १-६। अन्नम् ७। अनुमतिः ८, ९। सिनीवाली १०। सरस्वती ११। अग्निः १२-१५। इन्द्रः १६-१९। सोमः २०-२३। सविता २४-२७। अश्विनौ २८-३०, ४७। सूर्यः ३१। रात्रिः ३२। उषाः ३३, ४०। अग्न्यादयो लिङ्गोक्ताः ३४। भगः ३५, ३७, ३९। भगवान् ३६, ३८। पूषा ४१, ४२। विष्णुः ४३, ४४। द्यावापृथिव्यौ ४५। लिङ्गोक्ताः ४६, ५३। मरुतः ४८। ऋषयः ४९। हिरण्यन्तेजः ५०-५२। आदित्याः ५४। अध्यात्मं प्राणाः ५५। ब्रह्मणस्पतिः ५६-५८॥

छन्दः—विराट्त्रिष्टुप् १, १६, २६, २७; २९, ३१, ४२। त्रिष्टुप् २, ४, ५, १३, १४, ३०, ३९, ४९। स्वराट्त्रिष्टुप् ३, ६। उष्णिक् ७। निचृदनुष्टुप् ८, ९, ११। अनुष्टुप् १०। विराड्जगती १२। विराडनुष्टुप् १५। निचृत्त्रिष्टुप् १७-२०, २३, ३५, ३६, ३८, ४०, ५२, ५४, ५८। भुरिक्पङ्क्तिः २१, २४, ५३। विराट्पङ्क्तिः २२। निचृज्जगती २५, ३४, ४५। निचृद्गायत्री २८, ४३। पथ्याबृहती ३२। निचृत्परोष्णिक् ३३। पङ्क्तिः ३७, ४८। गायत्री ४१, ४४। भुरिक्त्रिष्टुप् ४६। जगती ४७। भुरिगुष्णिक् ५०। भुरिक्छक्वरी ५१। भुरिग्जगती ५५। निचृद्बृहती ५६। विराड्बृहती ५७॥

स्वरः—धैवतः १-६, १३, १४, १६-२०, २३, २६, २७, २९-३१, ३५, ३६, ३८-४०, ४२, ४६, ४९, ५१, ५२, ५४, ५८। ऋषभः ७, ३३, ५०। गान्धारः ८-११, १५। निषादः १२, २५, ३४, ४५, ४७, ५५। पञ्चमः २१, २२, २४, ३७, ४८, ५३। षड्जः २८, ४१, ४३, ४४। मध्यमः ३२, ५६, ५७॥

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति ।
दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥१॥
येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः ।
यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥२॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु ।
यस्मान्नऽऋते किं चन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥३॥
येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्परिगृहीतममृतेन सर्वम् ।
येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥४॥
यस्मिन्नृचः साम यजूꣳषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः ।
यस्मिँश्चित्तꣳ सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥५॥
सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिनऽइव ।
हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥६॥
पितुं नु स्तोषं महो धर्माणं तविषीम् ।
यस्य त्रितो व्योजसा वृत्रं विपर्वमर्दयत् ॥७॥
अन्विदनुमते त्वं मन्यासै शं च नस्कृधि ।
क्रत्वे दक्षाय नो हिनु प्र णऽआयूꣳषि तारिषः ॥८॥
अनु नोऽद्यानुमतिर्यज्ञं देवेषु मन्यताम् ।
अग्निश्च हव्यवाहनो भवतं दाशुषे मयः ॥९॥
सिनीवालि पृथुष्टुके या देवानामसि स्वसा ।
जुषस्व हव्यमाहुतं प्रजां देवि दिदिड्ढि नः ॥१०॥
पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः ।
सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित् ॥११॥
त्वमग्ने प्रथमोऽअङ्गिराऽऋषिर्देवो देवानामभवः शिवः सखा ।
तव व्रते कवयो विद्मनापसोऽजायन्त मरुतो भ्राजदृष्टयः ॥१२॥
त्वं नोऽअग्ने तव देव पायुभिर्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य ।
त्राता तोकस्य तनये गवामस्यनिमेषꣳ रक्षमाणस्तव व्रते ॥१३॥
उत्तानायामव भरा चिकित्वान्त्सद्यः प्रवीता वृषणं जजान ।
अरुषस्तूपो रुशदस्य पाजऽइडायास्पुत्रो वयुनेऽजनिष्ट ॥१४॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इडायास्त्वा पदे वयं नाभा पृथिव्याऽअधि ।
जातवेदो निधीमह्यग्ने हव्याय वोढवे ॥१५॥
प्र मन्महे शवसानाय शूषमाङ्गूषं गिर्वणसेऽअङ्गिरस्वत् ।
सुवृक्तिभिः स्तुवतऽ ऋग्मियायार्चामार्कं नरे विश्रुताय ॥१६॥
प्र वो महे महि नमो भरध्वमाङ्गूष्यꣳ शवसानाय साम ।
येना नः पूर्वे पितरः पदज्ञाऽअर्चन्तोऽअङ्गिरसो गाऽअविन्दन् ॥१७॥
इच्छन्ति त्वा सोम्यासः सखायः सुन्वन्ति सोमं दधति प्रयाꣳसि ।
तितिक्षन्तेऽअभिशस्तिं जनानामिन्द्र त्वदा कश्चन हि प्रकेतः ॥१८॥
न ते दूरे परमा चिद्रजाꣳस्या तु प्र याहि हरिवो हरिभ्याम् ।
स्थिराय वृष्णे सवना कृतेमा युक्ता ग्रावाणः समिधानेऽअग्नौ ॥१९॥
अषाढं युत्सु पृतनासु पप्रिꣳ स्वर्षामप्सां वृजनस्य गोपाम् ।
भरेषुजाꣳसुक्षितिꣳसुश्रवसं जयन्तं त्वामनु मदेम सोम ॥२०॥
सोमो धेनुꣳसोमोऽअर्वन्तमाशुꣳसोमो वीरं कर्मण्यं ददाति ।
सादन्यं विदथ्यꣳसभेयं पितृश्रवणं यो ददाशदस्मै ॥२१॥
त्वमिमाऽओषधीः सोम विश्वास्त्वमपोऽअजनयस्त्वं गाः ।
त्वमा ततन्थोर्वन्तरिक्षं त्वं ज्योतिषा वि तमो ववर्थ ॥२२॥
देवेन नो मनसा देव सोम रायो भागꣳसहसावन्नभि युध्य ।
मा त्वा तनदीशिषे वीर्यस्योभयेभ्यः प्र चिकित्सा गविष्टौ ॥२३॥
अष्टौ व्यख्यत्ककुभः पृथिव्यास्त्री धन्व योजना सप्त सिन्धून् ।
हिरण्याक्षः सविता देवऽआगाद्दधद्रत्ना दाशुषे वार्याणि ॥२४॥
हिरण्यपाणिः सविता विचर्षणिरुभे द्यावापृथिवीऽअन्तरीयते ।
अपामीवां बाधते वेति सूर्यमभि कृष्णेन रजसा द्यामृणोति ॥२५॥
हिरण्यहस्तोऽअसुरः सुनीथः सुमृडीकः स्ववाँ यात्वर्वाङ् ।
अपसेधन्रक्षसो यातुधानानस्थाद्देवः प्रतिदोषं गृणानः ॥२६॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये ते पन्थाः सवितः पूर्व्यासोऽरेणवः सुकृताऽअन्तरिक्षे ।
तेभिर्नोऽअद्य पथिभिः सुगेभी रक्षा च नोऽअधि च ब्रूहि देव ॥२७॥
उभा पिबतमश्विनोभा नः शर्म यच्छतम्। अविद्रियाभिरूतिभिः ॥२८॥
अप्नस्वतीमश्विना वाचमस्मे कृतं नो दस्रा वृषणा मनीषाम् ।
अद्यूत्येऽवसे निह्वये वां वृधे च नो भवतं वाजसातौ ॥२९॥
द्युभिरक्तुभिः परि पातमस्मानरिष्टेभिरश्विना सौभगेभिः ।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवीऽउत द्यौः ॥३०॥
आ कृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च ।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥३१॥
आ रात्रि पार्थिवꣳ रजः पितुरप्रायि धामभिः ।
दिवः सदाꣳसि बृहती वि तिष्ठसऽआ त्वेषं वर्त्तते तमः ॥३२॥
उषस्तच्चित्रमा भरास्मभ्यं वाजिनीवति ।
येन तोकं च तनयं च धामहे ॥३३॥
प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रꣳ हवामहे प्रातर्मित्रावरुणा प्रातरश्विना ।
प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातः सोममुत रुद्रꣳ हुवेम ॥३४॥
प्रातर्जितं भगमुग्रꣳ हुवेम वयं पुत्रमदितेर्यो विधर्त्ता ।
आध्रश्चिद्यं मन्यमानस्तुरश्चिद्राजा चिद्यं भगं भक्षीत्याह ॥३५॥
भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः ।
भग प्र नो जनय गोभिरश्वैर्भग प्र नृभिर्नृवन्तः स्याम ॥३६॥
उतेदानीं भगवन्तः स्यामोत प्रपित्वऽउत मध्येऽअह्नाम् ।
उतोदिता मघवन्त्सूर्यस्य वयं देवानाꣳ सुमतौ स्याम ॥३७॥
भगऽएव भगवाँ२॥ऽअस्तु देवास्तेन वयं भगवन्तः स्याम ।
तं त्वा भग सर्वऽइज्जोहवीति स नो भग पुरऽएता भवेह ॥३८॥
समध्वरायोषसो नमन्त दधिक्रावेव शुचये पदाय ।
अर्वाचीनं वसुविदं भगं नो रथमिवाश्वा वाजिनऽआ वहन्तु ॥३९॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अश्वावतीर्गोमतीर्नऽउषासो वीरवतीः सदमुच्छन्तु भद्राः ।
घृतं दुहाना विश्वतः प्रपीता यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥४०॥
पूषन्तव व्रते वयं न रिष्येम कदा चन। स्तोतारस्तऽइह स्मसि ॥४१॥
पथस्पथः परिपतिं वचस्या कामेन कृतोऽअभ्यानडर्कम् ।
स नो रासच्छुरुधश्चन्द्राग्रा धियंधियꣳ सीषधाति प्र पूषा ॥४२॥
त्रीणि पदा विचक्रमे विष्णुर्गोपाऽअदाभ्यः। अतो धर्माणि धारयन् ॥४३॥
तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवाꣳसः समिन्धते। विष्णोर्यत्परमं पदम् ॥४४॥
घृतवती भुवनानामभिश्रियोर्वी पृथ्वी मधुदुघे सुपेशसा ।
द्यावापृथिवी वरुणस्य धर्मणा विष्कभितेऽअजरे भूरिरेतसा ॥४५॥
ये नः सपत्नाऽअप ते भवन्त्विन्द्राग्निभ्यामव बाधामहे तान्।
वसवो रुद्राऽआदित्याऽउपरिस्पृशं मोग्रं चेत्तारमधिराजमक्रन् ॥४६॥
आ नासत्या त्रिभिरेकादशैरिह देवेभिर्यातं मधुपेयमश्विना ।
प्रायुस्तारिष्टं नी रपाꣳसि मृक्षतꣳ सेधतं द्वेषो भवतꣳ सचाभुवा ॥४७॥
एष व स्तोमो मरुतऽइयं गीर्मान्दार्यस्य मान्यस्य कारोः ।
एषा यासीष्ट तन्वे वयां विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ॥४८॥
सहस्तोमाः सहच्छन्दसऽआवृतः सहप्रमाऽऋषयः सप्त दैव्याः।
पूर्वेषां पन्थामनुदृश्य धीराऽअन्वालेभिरे रथ्यो न रश्मीन् ॥४९॥
आयुष्यं वर्चस्यꣳ रायस्पोषमौद्भिदम् ।
इदꣳहिरण्यं वर्चस्वज्जैत्रायाविशतादु माम् ॥५०॥
न तद्रक्षाꣳसि न पिशाचास्तरन्ति देवानामोजः प्रथमजꣳ ह्येतत् ।
यो बिभर्ति दाक्षायणꣳ हिरण्यꣳ स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः
स मनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः ॥५१॥
यदाबध्नन्दाक्षायणा हिरण्यꣳ शतानीकाय सुमनस्यमानाः ।
तन्मऽआ बध्नामि शतशारदायायुष्माञ्जरदष्टिर्यथासम् ॥५२॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत नोऽहिर्बुध्न्यः शृणोत्वजऽएकपात्पृथिवी समुद्रः ।
विश्वेदेवाऽऋतावृधो हुवाना स्तुता मन्त्राः कविशस्ताऽअवन्तु ॥५३॥
इमा गिरऽआदित्येभ्यो घृतस्नूः सनाद्राजभ्यो जुह्वा जुहोमि ।
शृणोतु मित्रोऽअर्यमा भगो नस्तुविजातो वरुणो दक्षोऽअꣳशः ॥५४॥
सप्तऽऋषयः प्रतिहिताः शरीरे सप्त रक्षन्ति सदमप्रमादम् ।
सप्तापः स्वपतो लोकमीयुस्तत्र जागृतोऽअस्वप्नजौ सत्रसदौ च देवौ ॥५५॥
उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे ।
उप प्र यन्तु मरुतः सुदानवऽइन्द्र प्राशूर्भवा सचा ॥५६॥
प्र नूनं ब्रह्मणस्पतिर्मन्त्रं वदत्युक्थ्यम् ।
यस्मिन्निन्द्रो वरुणो मित्रोऽअर्यमा देवाऽओकाꣳसि चक्रिरे ॥५७॥
ब्रह्मणस्पते त्वमस्य यन्ता सूक्तस्य बोधि तनयं च जिन्व ।
विश्वं तद्भद्रं यदवन्ति देवा बृहद्वदेम विदथे सुवीराः ॥५८॥

इति चतुस्त्रिंशोऽध्यायः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ पञ्चत्रिंशोऽध्यायः

—:०:—

ऋषिः—आदित्या देवा वा १, ३, ५, ८। आदित्या देवाः २, ४, ६, ९, १२-१४, १६, २०, २२। सङ्कसुकः ७, १५। सुचीकः १०। शुनःशेपः ११। वैखानसः १७। भरद्वाजः शिरिम्बिठः १८। दमनः १९। मेधातिथिः २१॥

देवता—पितरः १। सविता २, ३। वायुसवितारौ ४, ५। प्रजापतिः ६। यमः ७। विश्वेदेवाः ८-१०। आपः ११, १२। कृषीबलाः १३। सूर्यः १४। ईश्वरः १५। अग्निः १६, १७, १९, २२। इन्द्रः १८। जातवेदाः २०। पृथिवी २१॥

छन्दः—पिपीलिकामध्यागायत्री [क], प्राजापत्याबृहती [र] १। गायत्री २, १६। उष्णिक् ३, ६। अनुष्टुप् ४, ८। भुरिग्गायत्री ५। त्रिष्टुप् ७, १५, १९। स्वराड्बृहती ९। निचृत्त्रिष्टुप् १०। विराडनुष्टुप् ११, १४, १८। निचृदनुष्टुप् १२। स्वराडनुष्टुप् १३। स्वराट्त्रिष्टुप् १७, २०। निचृद्गायत्री [क], प्राजापत्यागायत्री [र] २१। स्वराड्गायत्री २२॥

स्वरः—षड्जः १[क], २, ५, १६, २१, २२। मध्यमः १[र], ९। ऋषभः ३, ६। गान्धारः ४, ८, ११-१४, १८। धैवतः ७, १०, १५, १७, १९, २०॥

[क]अपेतो यन्तु पणयोऽसुम्ना देवपीयवः ।
अस्य लोकः सुतावतः ।
[र]द्युभिरहोभिरक्तुभिर्व्यक्तं यमो ददात्ववसानमस्मै ॥१॥
सविता ते शरीरेभ्यः पृथिव्यां लोकमिच्छतु ।
तस्मै युज्यन्तामुस्त्रियाः ॥२॥
वायुः पुनातु सविता पुनात्वग्नेर्भ्राजसा सूर्यस्य वर्चसा ।
वि मुच्यन्तामुस्त्रियाः ॥३॥
अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता ।
गोभाजऽइत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम् ॥४॥
सविता ते शरीराणि मातुरुपस्थऽआ वपतु। तस्मै पृथिवि शं भव ॥५॥
प्रजापतौ त्वा देवतायामुपोदके लोके निदधाम्यसौ। अप नः शोशुचदघम् ॥६॥
परं मृत्योऽअनु परेहि पन्थां यस्तेऽअन्यऽइतरो देवयानात् ।
चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मा नः प्रजाꣳरीरिषो मोत वीरान् ॥७॥
शं वातः शꣳहि ते घृणिः शं ते भवन्त्विष्टकाः ।
शं ते भवन्त्वग्नयः पार्थिवासो मा त्वाभि शूशुचन् ॥८॥
कल्पन्तां ते दिशस्तुभ्यमापः शिवतमास्तुभ्यं भवन्तु सिन्धवः ।
अन्तरिक्षꣳशिवं तुभ्यं कल्पन्तां ते दिशः सर्वाः ॥९॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अश्मन्वती रीयते सꣳरभध्वमुत्तिष्ठत प्र तरता सखायः ।
अत्रा जहीमोऽशिवा येऽअसञ्छिवान्वयमुत्तरेमाभि वाजान् ॥१०॥
अपाघमप किल्बिषमप कृत्यामपो रपः ।
अपामार्ग त्वमस्मदप दुःष्वप्न्यꣳ सुव ॥११॥
सुमित्रिया नऽआपऽओषधयः सन्तु दुर्मित्रियास्तस्मै
सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः ॥१२॥
अनड्वाहमन्वारभामहे सौरभेयꣳस्वस्तये ।
स नऽइन्द्रऽइव देवेभ्यो वह्निः सन्तारणो भव ॥१३॥
उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्तऽउत्तरम् ।
देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् ॥१४॥
इमं जीवेभ्यः परिधिं दधामि मैषां नु गादपरोऽअर्थमेतम् ।
शतं जीवन्तु शरदः पुरूचीरन्तर्मृत्युं दधतां पर्वतेन ॥१५॥
अग्नऽआयूꣳषि पवसऽआ सुवोर्जमिषं च नः ।
आरे बाधस्व दुच्छुनाम् ॥१६॥
आयुष्मानग्ने हविषा वृधानो घृतप्रतीको घृतयोनिरेधि ।
घृतं पीत्वा मधु चारु गव्यं पितेव पुत्रमभि रक्षतादिमान्त्स्वाहा ॥१७॥
परीमे गामनेषत पर्यग्निमहृषत ।
देवेष्वक्रत श्रवः कऽइमाँ२॥ऽआ दधर्षति ॥१८॥
क्रव्यादमग्निं प्र हिणोमि दूरं यमराज्यं गच्छतु रिप्रवाहः ।
इहैवायमितरो जातवेदा देवेभ्यो हव्यं वहतु प्रजानन् ॥१९॥
वह वपां जातवेदः पितृभ्यो यत्रैनान्वेत्थ निहितान् पराके ।
मेदसः कुल्याऽउप तान्त्स्रवन्तु सत्याऽएषामाशिषः सं नमन्ताꣳ स्वाहा ॥२०॥
स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी । यच्छा नः शर्म सप्रथाः ।
अप नः शोशुचदघम् ॥२१॥
अस्मात्त्वमधि जातोऽसि त्वदयं जायतां पुनः ।
असौ स्वर्गाय लोकाय स्वाहा ॥२२॥

इति पञ्चत्रिंशोऽध्यायः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ षट्त्रिंशोऽध्यायः

—:o:—

ऋषिः—दध्यङ्ङाथर्वणः १, २, ७-१२, १७-१९, २१-२४। विश्वामित्रः ३। वामदेवः ४-६। मेधातिथिः १३। सिन्धुद्वीपः १४-१६। लोपामुद्रा २०॥

देवता—अग्निः १, २०। बृहस्पतिः २। सविता ३। इन्द्रः ४-८। मित्रादयो लिङ्गोक्ताः ९। वातादयः १०। लिङ्गोक्ताः ११। आपः १२, १४-१६। पृथिवी १३। ईश्वरः १७-१९, २१, २२। सोमः २३। सूर्यः २४॥

छन्दः—पङ्क्तिः १। निचृत्पङ्क्तिः २। दैवीबृहती[क], निचृद्गायत्री[र] ३। गायत्री ४, १२, १४-१६। निचृद्गायत्री ५। पादनिचृद्गायत्री ६, १९। वर्द्धमानागायत्री ७। द्विपाद्विराड्गायत्री ८। निचृदनुष्टुप् ९, २१, २३। विराडनुष्टुप् १०। अतिशक्वरी ११। पिपीलिकामध्यानिचृद् गायत्री १३। भुरिक्शक्वरी १७। भुरिग्जगती १८। भुरिग्बृहती २०। भुरिगुष्णिक् २२। भुरिग्ब्राह्मीत्रिष्टुप् २४॥

स्वरः—पञ्चमः १, २, ११। मध्यमः ३[क], २०। षड्जः ३[र], ४-८, १२-१६, १९। गान्धारः ९, १०, २१, २३। धैवतः १७, २४। निषादः १८। ऋषभः २२॥

ऋचं वाचं प्र प॑द्ये मनो॒ यजुः॒ प्र प॑द्ये साम॑ प्रा॒णं प्र प॑द्ये
चक्षुः॒ श्रोत्रं॒ प्र प॑द्ये। वागोजः॑ स॒हौजो॒ मयि॑ प्राणापा॒नौ ॥१॥
यन्मे॑ छि॒द्रं चक्षु॑षो॒ हृद॑यस्य॒ मन॑सो॒ वाति॑तृण्णं॒ बृह॒स्पति॑र्मे॒ तद्द॑धातु ।
शं नो॑ भवतु॒ भुव॑नस्य॒ यस्पतिः॑ ॥२॥
[क]भूर्भुवः॒ स्वः। [र]तत्स॑वि॒तुर्वरे॑ण्यं॒ भर्गो॑ दे॒वस्य॑ धीमहि ।
धियो॒ यो नः॑ प्रचो॒दया॑त् ॥३॥
कया॑ नश्चि॒त्रऽआ भु॑वदूती स॒दावृ॑धः॒ सखा॑। कया॒ शचि॑ष्ठया वृ॒ता ॥४॥
कस्त्वा॑ स॒त्यो मदा॑नां॒ मꣳहि॑ष्ठो मत्स॒दन्ध॑सः। दृ॒ढा चि॑दा॒रुजे॒ वसु॑ ॥५॥
अ॒भी षु णः॒ सखी॑नामवि॒ता ज॑रितॄ॒णाम्। श॒तं भ॑वास्यू॒तिभिः॑ ॥६॥
कया॒ त्वं न॑ऽऊ॒त्याभि प्र म॑न्दसे वृषन्। कया॑ स्तो॒तृभ्य॒ऽआ भ॑र ॥७॥
इन्द्रो॒ विश्व॑स्य राजति। शन्नो॑ऽअस्तु द्वि॒पदे॒ शं चतु॑ष्पदे ॥८॥
शन्नो॑ मि॒त्रः शं वरु॑णः॒ शन्नो॑ भवत्वर्य॒मा ।
शन्न॒ऽइन्द्रो॒ बृह॒स्पति॒ः शन्नो॒ विष्णु॑रुरुक्र॒मः ॥९॥
शन्नो॒ वातः॑ पवता॒ꣳ शन्न॑स्तपतु सूर्यः॑ ।
शन्नः॒ कनि॑क्रदद्दे॒वः प॒र्जन्यो॑ऽअ॒भि व॑र्षतु ॥१०॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अहानि शं भवन्तु नः शꣳरात्रीः प्रति धीयताम् ।
शन्नऽइन्द्राग्नी भवतामवोभिः शन्नऽइन्द्रावरुणा रातहव्या ।
शन्नऽइन्द्रापूषणा वाजसातौ शमिन्द्रासोमा सुविताय शंयोः ॥११॥
शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये। शंयोरभि स्रवन्तु नः ॥१२॥
स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथाः ॥१३॥
आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता नऽऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे ॥१४॥
यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः ॥१५॥
तस्माऽअरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः ॥१६॥
द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः
शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳ
शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥१७॥
दृते दृꣳह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।
मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ॥१८॥
दृते दृꣳह मा। ज्योक्ते संदृशि जीव्यासं ज्योक्ते संदृशि जीव्यासम् ॥१९॥
नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्तेऽअस्त्वर्चिषे ।
अन्याँस्तेऽअस्मत्तपन्तु हेतयः पावकोऽअस्मभ्यꣳशिवो भव ॥२०॥
नमस्तेऽअस्तु विद्युते नमस्ते स्तनयित्नवे ।
नमस्ते भगवन्नस्तु यतः स्वः समीहसे ॥२१॥
यतो यतः समीहसे ततो नोऽअभयं कुरु ।
शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः ॥२२॥
सुमित्रिया नऽआपऽओषधयः सन्तु दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु
योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः ॥२३॥
तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं
जीवेम शरदः शतꣳ शृणुयाम शरदः शतं प्र ब्रवाम शरदः
शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ॥२४॥

इति षट्त्रिंशोऽध्यायः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ सप्तत्रिंशोऽध्यायः

—:०:—

ऋषिः—दध्यङ्ङाथर्वणः १, ३-६, ८-१६, १८। श्यावाश्वः २। कण्वः ७। दीर्घतमाः १७। अथर्वणः १९-२१।

देवता—सविता १, २, ११। द्यावापृथिव्यौ ३। यज्ञः ४-६, ८। ईश्वरः ७, १४, १६-२१। विद्वान् ९, १३। विद्वांसः १०। पृथिवी १२। अग्निः १५॥

छन्दः—निचृदुष्णिक् १। जगती २। ब्राह्मीगायत्री ३। निचृत्पङ्क्तिः ४। स्वराड्ब्राह्मी-गायत्री ५। भुरिगतिजगती ६। निचृदष्टिः ७। स्वराडतिधृतिः ८। अतिशक्वरी ९। स्वराट्-पङ्क्तिः १०। त्रिष्टुप् ११। स्वराडुत्कृतिः १२। निचृद्गायत्री १३। भुरिगनुष्टुप् १४। निचृद्ब्राह्म्यनुष्टुप् १५। भुरिग्बृहती १६। निचृत्त्रिष्टुप् १७। निचृदत्यष्टिः १८। विराडुष्णिक् १९। निचृदतिजगती २०। अनुष्टुप् २१॥

स्वरः—ऋषभः १, ८, १९। निषादः २, ६, २०। षड्जः ३, ५, १२, १३। पञ्चमः ४, ९, १०। मध्यमः ७, १६। धैवतः ११, १७। गान्धारः १४, १५, १८, २१॥

देवस्य॑ त्वा सवि॒तुः प्र॑स॒वे॒ऽश्विनो॑र्बा॒हुभ्यां॑ पू॒ष्णो हस्ता॑भ्याम् ।
आ द॑दे॒ नारि॑रसि ॥१॥

यु॒ञ्जते॒ मन॑ऽउ॒त यु॑ञ्जते॒ धियो॒ विप्रा॒ विप्र॑स्य बृह॒तो वि॑प॒श्चितः॑ ।
वि होत्रा॑ दधे वयुना॒विदेक॒ऽइन्म॒ही दे॒वस्य॑ सवि॒तुः परि॑ष्टुतिः ॥२॥

देवी॑ द्यावापृथिवी म॒खस्य॑ वाम॒द्य शिरो॑ राध्यासं देव॒यज॑ने पृथि॒व्याः ।
म॒खाय॑ त्वा म॒खस्य॑ त्वा शी॒र्ष्णे ॥३॥

देव्यो॑ वम्र्यो भूतस्य॑ प्रथम॒जा म॒खस्य॑ वो॒ऽद्य शिरो॑ राध्यासं
देव॒यज॑ने पृथि॒व्याः। म॒खाय॑ त्वा म॒खस्य॑ त्वा शी॒र्ष्णे ॥४॥

इय॒त्यग्र॑ऽआसीन्म॒खस्य॑ ते॒ऽद्य शिरो॑ राध्यासं देव॒यज॑ने पृथि॒व्याः ।
म॒खाय॑ त्वा म॒खस्य॑ त्वा शी॒र्ष्णे ॥५॥

इन्द्र॒स्यौजः॑ स्थ म॒खस्य॑ वो॒ऽद्य शिरो॑ राध्यासं देव॒यज॑ने पृथि॒व्याः ।
म॒खाय॑ त्वा म॒खस्य॑ त्वा शी॒र्ष्णे। म॒खाय॑ त्वा म॒खस्य॑ त्वा शी॒र्ष्णे ।
म॒खाय॑ त्वा म॒खस्य॑ त्वा शी॒र्ष्णे ॥६॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रैतु ब्रह्मणस्पतिः प्र देव्येतु सूनृता ।
अच्छा वीरं नर्यं पङ्क्तिराधसं देवा यज्ञं नयन्तु नः ।
मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे ।
मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे ।
मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे ॥७॥
मखस्य शिरोऽसि । मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे ।
मखस्य शिरोऽसि । मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे ।
मखस्य शिरोऽसि । मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे ।
मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे ।
मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे ।
मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे ॥८॥
अश्वस्य त्वा वृष्णः शक्ना धूपयामि देवयजने पृथिव्याः ।
मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे ।
अश्वस्य त्वा वृष्णः शक्ना धूपयामि देवयजने पृथिव्याः ।
मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे ।
अश्वस्य त्वा वृष्णः शक्ना धूपयामि देवयजने पृथिव्याः ।
मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे । मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे ।
मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे । मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे ॥९॥
ऋजवे त्वा साधवे त्वा सुक्षित्यै त्वा । मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे ।
मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे । मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे ॥१०॥
यमाय त्वा मखाय त्वा सूर्यस्य त्वा तपसे ।
देवस्त्वा सविता मध्वानक्तु पृथिव्याः सꣳस्पृशस्पाहि ।
अर्चिरसि शोचिरसि तपोऽसि ॥११॥
अनाधृष्टा पुरस्तादग्नेराधिपत्यऽआयुर्मे दाः
पुत्रवती दक्षिणतऽइन्द्रस्याधिपत्ये प्रजां मे दाः ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुषदा पुश्चाद्देवस्य सवितुराधिपत्ये चक्षुर्मे दाऽ
आश्रुतिरुत्तरतो धातुराधिपत्ये रायस्पोषं मे दाः ।
विधृतिरुपरिष्टाद् बृहस्पतेराधिपत्यऽओजो मे दा
विश्वाभ्यो मा नाष्ट्राभ्यस्पाहि मनोरश्वासि ॥१२॥
स्वाहा मरुद्भिः परि श्रीयस्व दिवः सꣳस्पृशस्पाहि ।
मधु मधु मधु ॥१३॥
गर्भो देवानां पिता मतीनां पतिः प्रजानाम् ।
सं देवो देवेन सवित्रा गत सꣳ सूर्येण रोचते ॥१४॥
सम्ग्निरग्निना गत सं दैवेन सवित्रा सꣳसूर्येणारोचिष्ट ।
स्वाहा सम्ग्निस्तपसा गत सं दैव्येन सवित्रा सꣳसूर्येणारूरुचत ॥१५॥
धर्त्ता दिवो वि भाति तपसस्पृथिव्यां धर्त्ता देवो देवानाममर्त्यस्तपोजाः ।
वाचमस्मे नि यच्छ देवायुवम् ॥१६॥
अपश्यं गोपामनिपद्यमानमा च परा च पथिभिश्चरन्तम् ।
स सध्रीचीः स विषूचीर्वसानऽआ वरीवर्त्ति भुवनेष्वन्तः ॥१७॥
विश्वासां भुवां पते विश्वस्य मनसस्पते विश्वस्य वचसस्पते
सर्वस्य वचसस्पते। देवश्रुत्त्वं देव घर्म देवो देवान् पाह्यत्र
प्रावीरनु वां देववीतये। मधु माध्वीभ्यां मधु माधूचीभ्याम् ॥१८॥
हृदे त्वा मनसे त्वा दिवे त्वा सूर्याय त्वा ।
ऊर्ध्वोऽअध्वरं दिवि देवेषु धेहि ॥१९॥
पिता नोऽसि पिता नो बोधि नमस्तेऽअस्तु मा मा हिꣳसीः।
त्वष्टृमन्तस्त्वा सपेम पुत्रान्पशून् मयि धेहि प्रजामस्मासु
धेह्यरिष्टाहꣳसह पत्या भूयासम् ॥२०॥
अहः केतुना जुषताꣳ सुज्योतिर्ज्योतिषा स्वाहा ।
रात्रिः केतुना जुषताꣳ सुज्योतिर्ज्योतिषा स्वाहा ॥२१॥

इति सप्तत्रिंशोऽध्यायः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथाष्टात्रिंशोऽध्यायः

—:०:—

ऋषिः—अथर्वणः १-४। दीर्घतमाः ५-२८॥

देवता—सविता १, २४। सरस्वती २, ४। पूषा ३। वाक् ५। अश्विनौ ६, १०, १२, १३। वातः ७। इन्द्रः ८, २६। वायुः ९। यज्ञः ११, १८-२२, २७, २८। द्यावापृथिवी १४। पूषादयो लिङ्गोक्ताः १५। रुद्रादयः १६। अग्निः १७। आपः २३। ईश्वरः २५॥

छन्दः—उष्णिक् १। निचृद्गायत्री २। भुरिक्साम्नीबृहती ३। आर्चीपङ्क्तिः ४, १२। निचृदतिजगती ५। निचृदत्यष्टिः ६। स्वराडष्टिः ७। अष्टिः ८। भुरिग्गायत्री ९। अनुष्टुप् १०, २१। विराडुष्णिक् ११। निचृदुष्णिक् १३। अतिशक्वरी १४। स्वराड्जगती १५। भुरिगतिधृतिः १६। निचृदतिशक्वरी १७। भुरिगाकृतिः १८। निचृदुपरिष्टाद्बृहती १९। निचृत्त्रिष्टुप् २०। परोष्णिक् २२। निचृदनुष्टुप् २३। विराडनुष्टुप् २४। साम्नीपङ्क्तिः २५। स्वराट्पङ्क्तिः २६। पङ्क्तिः २७। स्वराड्धृतिः २८॥

स्वरः—ऋषभः १, ११, १३, २२, २८। षड्जः २, ९, १६। मध्यमः ३, ७, ८, १९। पञ्चमः ४, १२, १४, १७, १८, २५-२७। निषादः ५, १५। गान्धारः ६, १०, २१, २३, २४। धैवतः २०॥

देवस्य॑ त्वा सवि॒तुः प्र॑स॒वे॒ऽश्विनो॑र्बा॒हुभ्या॑ं पू॒ष्णो हस्ता॑भ्याम् ।
आ द॒देऽदि॑त्यै रास्ना॑सि ॥१॥

इड॒ऽएह्यदि॑त॒ऽएहि॒ सर॑स्व॒त्येहि॑ । अस॒ावेह्यस॒ावेह्यस॒ावेहि॑ ॥२॥

अदि॑त्यै रास्ना॑सीन्द्रा॒ण्याऽउ॒ष्णीषः॑ । पू॒षासि॑ घ॒र्माय॑ दीष्व ॥३॥

अ॒श्विभ्या॑ं पिन्वस्व॒ सर॑स्वत्यै पिन्व॒स्वेन्द्रा॑य पिन्वस्व ।
स्वाहेन्द्र॑व॒त् स्वाहेन्द्र॑व॒त् स्वाहेन्द्र॑वत् ॥४॥

यस्ते॒ स्तनः॑ शश॒यो यो म॑यो॒भूर्यो र॑त्न॒धा व॑सु॒विद्यः सु॒दत्रः॑ ।
येन॒ विश्वा॒ पुष्य॑सि॒ वार्या॑णि॒ सर॑स्वति॒ तमि॒ह धात॑वेऽकः ।
उ॒र्व॒न्तरि॑क्ष॒मन्वे॑मि ॥५॥

गा॒य॒त्रं छन्दो॑ऽसि॒ त्रैष्टु॑भ॒ं छन्दो॑ऽसि॒ द्यावा॑पृथि॒वीभ्या॑ं त्वा॒ परि॑
गृह्णा॒म्य॒न्तरि॑क्षे॒णोप॑ यच्छामि । इन्द्रा॑श्विना॒ मधु॑नः सार॒घस्य॑ घ॒र्मं
पा॑त॒ वस॑वो॒ यज॑त॒ वाट् । स्वाहा॒ सूर्य॑स्य र॒श्मये॑ वृ॒ष्टिव॑नये ॥६॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समुद्राय त्वा वाताय स्वाहा सरिराय त्वा वाताय स्वाहा ।
अनाधृष्याय त्वा वाताय स्वाहाप्रतिधृष्याय त्वा वाताय स्वाहा ।
अवस्यवे त्वा वाताय स्वाहाशिमिदाय त्वा वाताय स्वाहा ॥७॥
इन्द्राय त्वा वसुमते रुद्रवते स्वाहेन्द्राय त्वादित्यवते स्वाहेन्द्राय
त्वाभिमातिघ्ने स्वाहा । सवित्रे त्वऽऋभुमते विभुमते वाजवते
स्वाहा बृहस्पतये त्वा विश्वदेव्यावते स्वाहा ॥८॥
यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा । स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे ॥९॥

विश्वाऽआशा दक्षिणसद्विश्वान्देवानयाडिह ।
स्वाहाकृतस्य घर्मस्य मधोः पिबतमश्विना ॥१०॥
दिवि धाऽइमं यज्ञमिमं यज्ञं दिवि धाः ।
स्वाहाग्नये यज्ञियाय शं यजुर्भ्यः ॥११॥
अश्विना घर्मं पातꣳहार्द्वानमहर्दिवाभिरूतिभिः ।
तन्त्रायिणे नमो द्यावापृथिवीभ्याम् ॥१२॥
अपातामश्विना घर्ममनु द्यावापृथिवीऽअमꣳसाताम् ।
इहैव रातयः सन्तु ॥१३॥
इषे पिन्वस्वोर्जे पिन्वस्व ब्रह्मणे पिन्वस्व क्षत्राय पिन्वस्व
द्यावापृथिवीभ्यां पिन्वस्व । धर्मासि सुधर्मामेन्यस्मे नृम्णानि
धारय ब्रह्म धारय क्षत्रं धारय विशं धारय ॥१४॥
स्वाहा पूष्णे शरसे स्वाहा ग्रावभ्यः स्वाहा प्रतिरवेभ्यः ।
स्वाहा पितृभ्यऽऊर्ध्वबर्हिभ्यो घर्मपावभ्यः स्वाहा
द्यावापृथिवीभ्याꣳ स्वाहा विश्वेभ्यो देवेभ्यः ॥१५॥
स्वाहा रुद्राय रुद्रहूतये स्वाहा सं ज्योतिषा ज्योतिः ।
अहः केतुना जुषताꣳ सुज्योतिर्ज्योतिषा स्वाहा ।
रात्रिः केतुना जुषताꣳ सुज्योतिर्ज्योतिषा स्वाहा ।
मधु हुतमिन्द्रतमेऽअग्नावश्याम ते देव घर्म
नमस्तेऽअस्तु मा मा हिꣳसीः ॥१६॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभीमं महिमा दिवं विप्रो बभूव सप्रथाः ।
उत श्रवसा पृथिवीᳬसᳬसीदस्व महाँ२॥ऽअसि रोचस्व देववीतमः ।
वि धूममग्नेऽअरुषं मियेद्ध्य सृज प्रशस्त दर्शतम् ॥१७॥

या ते घर्म दिव्या शुग्या गायत्र्याᳬ हविर्धाने ।
सा तऽआ प्यायतान्निष्ट्यायतां तस्यै ते स्वाहा ।
या ते घर्मान्तरिक्षे शुग्या त्रिष्टुभ्याग्नीध्रे ।
सा तऽआ प्यायतान्निष्ट्यायतां तस्यै ते स्वाहा ।
या ते घर्म पृथिव्याᳬ शुग्या जगत्याᳬसदस्या ।
सा तऽआ प्यायतान्निष्ट्यायतां तस्यै ते स्वाहा ॥१८॥

क्षत्रस्य त्वा परस्पाय ब्रह्मणस्तन्वं पाहि ।
विशस्त्वा धर्मणा वयमनु क्रामाम सुविताय नव्यसे ॥१९॥

चतुःस्रक्तिर्नाभिर्ऋतस्य सप्रथाः स नो विश्वायुः सप्रथाः स नः
सर्वायुः सप्रथाः । अप द्वेषोऽअप ह्वरोऽन्यव्रतस्य सश्चिम ॥२०॥

घर्मैतत्ते पुरीषं तेन वर्द्धस्व चा च प्यायस्व ।
वर्द्धिषीमहि च वयमा च प्यासिषीमहि ॥२१॥

अचिक्रदद् वृषा हरिर्महान्मित्रो न दर्शतः ।
सᳬसूर्येण दिद्युतदुदधिर्निधिः ॥२२॥

सुमित्रिया नऽआपऽओषधयः सन्तु दुर्मित्रियास्तस्मै
सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः ॥२३॥

उद्वयन्तमसस्परि स्वः पश्यन्तऽउत्तरम् ।
देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् ॥२४॥

एधोऽस्येधिषीमहि समिदसि तेजोऽसि तेजो मयि धेहि ॥२५॥

यावती द्यावापृथिवी यावच्च सप्त सिन्धवो वितस्थिरे ।
तावन्तमिन्द्र ते ग्रहमूर्जा गृह्णाम्यक्षितं मयि गृह्णाम्यक्षितम् ॥२६॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मयि त्यदिन्द्रियं बृहन्मयि दक्षो मयि क्रतुः ।
घर्मस्त्रिशुग्वि राजति विराजा ज्योतिषा सह ब्रह्मणा तेजसा सह ॥२७॥
पयसो रेतऽआभृतं तस्य दोहमशीमह्युत्तरामुत्तराꣳ समाम् ।
त्विषः संवृक्क्रत्वे दक्षस्य ते सुषुम्णस्य ते सुषुम्णाग्निहुतः ।
इन्द्रपीतस्य प्रजापतिभक्षितस्य मधुमतऽउपहूतऽउपहूतस्य भक्षयामि ॥२८॥

इत्यष्टात्रिंशोऽध्यायः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथैकोनचत्वारिंशोऽध्यायः

—:o:—

ऋषिः—दीर्घतमाः १-१३॥

देवता—प्राणादयो लिङ्गोक्ताः १। दिगादयो लिङ्गोक्ताः २। वागादयो लिङ्गोक्ताः ३। श्रीः ४। प्रजापतिः ५। सवितादयः ६। मरुतः ७। अग्न्यादयो लिङ्गोक्ताः ८। उग्रादयो लिङ्गोक्ताः ९। अग्निः १०-१३॥

छन्दः—पङ्क्तिः १। भुरिगनुष्टुप् २। स्वराडनुष्टुप् ३। निचृद्बृहती ४। कृतिः ५। विराड्धृतिः ६। भुरिग्गायत्री ७। निचृदत्यष्टिः ८। भुरिगष्टिः ९। आकृतिः १०। स्वराड् जगती ११। त्रिष्टुप् १२। निचृत्त्रिष्टुप् १३॥

स्वरः—पञ्चमः १, १०। गान्धारः २, ३, ८। मध्यमः ४, ९। निषादः ५, ११। ऋषभः ६। षड्जः ७। धैवतः १२, १३॥

स्वाहा प्राणेभ्यः साधिपतिकेभ्यः। पृथिव्यै स्वाहाग्नये स्वाहान्तरिक्षाय
स्वाहा वायवे स्वाहा। दिवे स्वाहा सूर्याय स्वाहा ॥१॥

दिग्भ्यः स्वाहा चन्द्राय स्वाहा नक्षत्रेभ्यः स्वाहाद्भ्यः स्वाहा
वरुणाय स्वाहा। नाभ्यै स्वाहा पूताय स्वाहा ॥२॥

वाचे स्वाहा प्राणाय स्वाहा प्राणाय स्वाहा।
चक्षुषे स्वाहा चक्षुषे स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा ॥३॥

मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीय।
पशूनाꣳरूपमन्नस्य रसो यशः श्रीः श्रयतां मयि स्वाहा ॥४॥

प्रजापतिः सम्भ्रियमाणः सम्राट् सम्भृतो वैश्वदेवः सꣳसन्नो
घर्मः प्रवृक्तस्तेजऽउद्यतऽआश्विनः पयस्यानीयमाने पौष्णो
विष्यन्दमाने मारुतः क्लथन्। मैत्रः शरसि सन्ताय्यमाने
वायव्यो ह्रियमाणऽआग्नेयो हूयमानो वाग्घुतः ॥५॥

सविता प्रथमेऽहन्नग्निर्द्वितीये वायुस्तृतीयऽआदित्यश्चतुर्थे
चन्द्रमाः पञ्चमऽऋतुः षष्ठे मरुतः सप्तमे बृहस्पतिरष्टमे।
मित्रो नवमे वरुणो दशमऽइन्द्रऽएकादशे विश्वेदेवा द्वादशे॥६॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उग्रश्च भीमश्च ध्वान्तश्च धुनिश्च ।
सासह्वाँश्चाभियुग्वा च विक्षिपः स्वाहा ॥७॥

अग्निꣳहृदयेनाशनिꣳहृदयाग्रेण पशुपतिं कृत्स्नहृदयेन भवं यक्ना ।
शर्वं मतस्नाभ्यामीशानं मन्युना महादेवमन्तःपर्शव्येनोग्रं देवं
वनिष्ठुना वसिष्ठहनुः शिङ्गीनि कोश्याभ्याम् ॥८॥

उग्रं लोहितेन मित्रꣳसौव्रत्येन रुद्रं दौर्व्रत्येनेन्द्रं प्रक्रीडेन मरुतो
बलेन साध्यान् प्रमुदा । भवस्य कण्ठ्यꣳरुद्रस्यान्तःपार्श्व्यं
महादेवस्य यकृच्छर्वस्य वनिष्ठुः पशुपतेः पुरीतत् ॥९॥

लोमभ्यः स्वाहा लोमभ्यः स्वाहा त्वचे स्वाहा त्वचे स्वाहा
लोहिताय स्वाहा लोहिताय स्वाहा मेदोभ्यः स्वाहा
मेदोभ्यः स्वाहा । माꣳसेभ्यः स्वाहा माꣳसेभ्यः स्वाहा
स्नावभ्यः स्वाहा स्नावभ्यः स्वाहास्थभ्यः स्वाहास्थभ्यः स्वाहा
मज्जभ्यः स्वाहा मज्जभ्यः स्वाहा । रेतसे स्वाहा पायवे स्वाहा ॥१०॥

आयासाय स्वाहा प्रायासाय स्वाहा संयासाय स्वाहा
वियासाय स्वाहोद्यासाय स्वाहा । शुचे स्वाहा शोचते स्वाहा
शोचमानाय स्वाहा शोकाय स्वाहा ॥११॥

तपसे स्वाहा तप्यते स्वाहा तप्यमानाय स्वाहा
तप्ताय स्वाहा घर्माय स्वाहा । निष्कृत्यै स्वाहा
प्रायश्चित्त्यै स्वाहा भेषजाय स्वाहा ॥१२॥

यमाय स्वाहान्तकाय स्वाहा मृत्यवे स्वाहा ।
ब्रह्मणे स्वाहा ब्रह्महत्यायै स्वाहा विश्वेभ्यो
देवेभ्यः स्वाहा द्यावापृथिवीभ्याꣳस्वाहा ॥१३॥

इत्येकोनचत्वारिंशोऽध्यायः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ चत्वारिंशोऽध्यायः॥

—:o:—

ऋषिः—दीर्घतमाः १-१७॥

देवता—आत्मा १-३, ५-१७। ब्रह्म ४॥

छन्दः—अनुष्टुप् १, ३, ९-११, १३, १७। भुरिगनुष्टुप् २। निचृत्त्रिष्टुप् ४, १६। निचृदनुष्टुप् ५-७, १२। स्वराड्जगती ८। स्वराडुष्णिक् १४, १५॥

स्वरः—गान्धारः १-३, ५-७, ९-१३, १७। धैवतः ४, १६। निषादः ८। ऋषभः १४, १५॥

ई॒शा वा॒स्य॑मि॒दꣳसर्वं॒ यत्किञ्च॒ जग॑त्यां॒ जग॑त् ।
तेन॑ त्य॒क्तेन॑ भुञ्जीथा॒ मा गृ॑धः॒ कस्य॑ स्वि॒द्धन॑म् ॥१॥

कु॒र्वन्ने॒वेह कर्मा॑णि जिजीवि॒षेच्छ॒तꣳसमाः॑ ।
ए॒वं त्वयि॒ नान्यथे॒तो॑ऽस्ति॒ न कर्म॑ लिप्यते॒ नरे॑ ॥२॥

अ॒सु॒र्या॒ नाम॒ ते लो॒काऽअ॒न्धेन॒ तम॒सावृ॑ताः ।
ताँस्ते प्रेत्यापि॑ गच्छ॒न्ति॒ ये के चा॑त्म॒हनो॒ जना॑ः ॥३॥

अने॑ज॒देकं॒ मन॑सो॒ जवी॑यो॒ नैन॑द्दे॒वाऽआ॑प्नुव॒न् पूर्व॒मर्श॑त् ।
तद्धाव॑तो॒ऽन्यानत्ये॑ति॒ तिष्ठ॒त्तस्मि॑न्न॒पो मा॑त॒रिश्वा॑ दधाति ॥४॥

तदे॑जति॒ तन्नैज॑ति॒ तद् दू॒रे तद्व॑न्ति॒के ।
तद॒न्तर॑स्य॒ सर्व॑स्य॒ तदु॒ सर्व॑स्यास्य बाह्य॒तः ॥५॥

यस्तु सर्वा॑णि भू॒तान्या॒त्मन्ने॒वानु॒पश्य॑ति ।
स॒र्व॒भू॒तेषु॒ चा॒त्मान॒ं तत॒ो न वि चि॑कित्सति ॥६॥

य॒स्मि॒न्त्सर्वा॑णि भू॒तान्या॒त्मैवाभू॑द्विजान॒तः ।
तत्र॒ को मोह॒ः कः शोक॑ऽएक॒त्वम॑नु॒पश्य॑तः ॥७॥

स पर्य॑गाच्छु॒क्रम॑का॒यम॑व्र॒णम॑स्नावि॒रꣳशु॒द्धम॑पापवि॒द्धम् ।
क॒विर्म॑नी॒षी परि॒भूः स्व॑य॒म्भूर्या॑थातथ्य॒तोऽर्था॒न्
व्य॑दधाच्छाश्व॒तीभ्य॒ः समा॑भ्यः ॥८॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्धन्तमः प्र विशन्ति येऽसम्भूतिमुपासते ।
ततो भूयऽइव ते तमो यऽउ सम्भूत्याᳬं रताः ॥९॥
अन्यदेवाहुः सम्भवादन्यदाहुरसम्भवात् ।
इति शुश्रुम धीराणां ये नस्तद्विचचक्षिरे ॥१०॥
सम्भूतिं च विनाशं च यस्तद्वेदोभयᳬं सह ।
विनाशेन मृत्युं तीर्त्वा सम्भूत्यामृतमश्नुते ॥११॥
अन्धन्तमः प्र विशन्ति येऽविद्यामुपासते ।
ततो भूयऽइव ते तमो यऽउ विद्यायाᳬं रताः ॥१२॥
अन्यदेवाहुर्विद्यायाऽअन्यदाहुरविद्यायाः ।
इति शुश्रुम धीराणां ये नस्तद्विचचक्षिरे ॥१३॥
विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयᳬं सह ।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते ॥१४॥
वायुरनिलममृतमथेदं भस्मान्तᳬं शरीरम् ।
ओ३म् क्रतो स्मर। क्लिबे स्मर। कृतᳬं स्मर ॥१५॥
अग्ने नय सुपथा रायेऽअस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नमऽउक्तिं विधेम ॥१६॥
हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम् ।
योऽसावादित्ये पुरुषः सोऽसावहम्। ओ३म् खं ब्रह्म ॥१७॥

इति चत्वारिंशोऽध्यायः॥
इत्युत्तरविंशतिः समाप्ता॥
समाप्ता यजुर्वेद-संहिता॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यजुर्वेद-मन्त्रानुक्रमणिका

अ

अक्रन्कर्म कर्मकृत: ३.४७
अक्रन्ददग्नि स्तनयन् १२.६,१२.२१
१२.३३
अक्षन्नमीमदन्त ह्यव ३. ५१
अक्षराजाय कितवं ३०.१८
अग्न आयूंषि १९.३८,३५.१६
अग्नऽ इन्द्र वरुण ३३.४८
अग्नये कव्यवाहनाय २.२९
अग्नये कुटरून् २४.२३
अग्नये गायत्राय २९.६०
अग्नये गृहपतये १०.२३
अग्नये त्वा मह्यं ७.४७
अग्नयेऽ नीकवते प्रथमजा २४.१६
अग्नयेऽनीकवते रोहिता २९.५९
अग्नये पीवानं ३०.२१
अग्नये स्वाहा० स्वाहापां २२.६
अग्नये स्वाहा० स्वहेन्द्राय २२.२७
अग्ना३ इ पत्नीवन्त्सजूः ८.१०
अग्नावग्निश्चरति ५.४
अग्निमद्य० पुरोडाशं० छागम् २८.२३
अग्निमद्य० पुरोडाशं० वयोधसे २८.४६
अग्निमद्य० पुरोडाशान् २१.५९
अग्निरस्मि जन्मना १८.६६
अग्निरेकाक्षरेण प्राणम् ९.३१
अग्निर्ऋषि: पवमान: २६.९
अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्नि: ३.९
अग्निर्ज्योतिषा ज्योतिष्मान् १३.४०
अग्निर्देवता वातो १४.२०
अग्निमूर्धा० जिन्वति ३.१२, १५.२०
अग्निमूर्धा० जिन्वति० इन्द्रस्य १३.१४
अग्निर्वृत्राणि जङ्घनत् ३३.९
अग्निश्च पृथिवी च २६.१
अग्निश्च म आपश्च १८.१४
अग्निश्च म इन्द्रश्च १८.१६
अग्निश्च मे घर्मश्च १८.२२
अग्निष्वात्तानृतुमत: १९.६१
अग्निष्वात्ता: पितर: १९.५९
अग्निस्तिग्मेन शोचिषा १७.१६
अग्निं तं मन्ये १५.४१
अग्निं दूतं पुरो २२.१७
अग्निं युनज्मि १८.५१
अग्निंष्ठ स्तोमेन २२.१५
अग्निं हृदयेन ३९.८
अग्निं होतारं मन्ये १५.४७
अग्नि: पशुरासीत् २३.१७
अग्नि: पृथुर्धर्मणस्पति: १०.२९
अग्नि: प्रियेषु १२.११७
अग्नीषोमयोरुज्जितिम् २.१५
अग्ने अङ्गिर: शतम् १२.८
अग्ने अच्छा वदेह ९.२८
अग्नेऽदब्धायोऽ शीतम २.२०
अग्नेऽभ्यावर्त्तिन्नभि १२.७
अग्ने गृहपते सुगृह २.२७
अग्ने जातान् प्रणुदा १५.१
अग्ने तमद्याश्वं १५.४४, १७.७७
अग्ने तव श्रवो १२.१०६
अग्ने त्वन्नो अन्तम: ३.२५, १५.४८
२५.४७
अग्ने त्वं पुरीष्य: १२.५९
अग्ने त्वं सुजागृहि ४.१४
अग्ने दिवोऽ अर्णमच्छा १२.४९
अग्ने नय सुपथा ५.३६, ७.४३
४०.१६
अग्ने पत्नीरिहावह २६.२०
अग्ने पवस्व स्वपा: ८.३८
अग्ने पावक रोचिषा १७.८
अग्ने प्रेहि प्रथम: १७.६९
अग्ने ब्रह्म. गृभ्णीष्व १.१८
अग्ने यत्ते दिवि १२.४८
अग्ने यत्ते शुक्रं १२.१०४
अग्ने युङ्क्ष्वा हि ये १३.३६
अग्नेरनीकमप ८.२४
अग्नेर्जनित्रमसि ५.२
अग्नेर्भागोऽसि दीक्षाया १४.२४
अग्नेर्वोऽ पत्रगृहस्य ६.२४
अग्ने वाजजिद्वाजम् २.७
अग्ने वाजस्य गोमत: १५.३५
अग्ने वेर्होत्रं २.९
अग्ने व्रतपते १.५
अग्ने व्रतपते व्रतमचा २.२८
अग्ने व्रतपास्त्वे० तनूरियं ५.६
अग्ने व्रतपास्त्वे० तनूर्मय्य ५.४०
अग्ने शर्ध महते ३३.१२
अग्ने सहस्राक्ष १७.७१
अग्ने सहस्व ९.३७
अग्नेस्तनूरसि वाचो: १.१५
अग्नेस्तनूरसि विष्णवे ५.१
अग्ने स्वाहा कृणुहि २७.२२
अग्ने: पक्षतिर्वायोर्नि २५.४
अग्नेणीरसि स्वावेश ६.२
अग्ने बृहन्नुषसामूर्ध्वो १२.१३
अङ्गान्यात्मन् भिषजा १९.९३

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अङ्गिरसो नः पितरः १९.५०
अचिक्रदद् वृषा हरिः ३८.२२
अच्छायमेति शवसा २७.१४
अच्छिन्नस्य ते देव ७.१४
अजस्रमिन्दुमरुषं १३.४३
अजारे पिशङ्गिला २३.५६
अजीजनो हि पवमान २२.१८
अजो ह्यग्नेरजनिष्ट १३.५१
अति निहो अति स्रिधः २७.६
अति विश्वाः १२.८४
अत्यन्याँ२ ॥ऽ अगान् ५.४२
अत्र पितरो मादयध्वं २.३१
अत्रा ते रूपमुत्तमम् २९.१८
अथैतानष्टौ विरूपाना ३०.२२
अदब्धेभिः सवितः ३३.६९, ३३.८४
अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षम् २५.२३
अदितिष्ट्वा देवी ११.६१
अदित्यास्त्वगस्यदित्यै ४.३०
अदित्यास्त्वा पृष्ठे १४.५
अदित्यास्त्वा मूर्धन्ना ४.२२
अदित्यै रास्नासि विष्णो १.३०
अदित्यै रासनाणीन्द्राण्या ३८.३
अदित्यै रासनास्यदितिष्टे ११.५९
अदित्यै व्युन्दनमसि २.२
अदृश्रमस्य केतवः ८.४०
अद्भ्यः क्षीरं व्यपिबत् १९.७३
अद्भ्यः सम्भृतः ३१.१७
अद्भ्यः स्वाहा २२.२५
अद्या देवा उदिता ३३.४२
अधा यथा नः १९.६९
अधा ह्यग्ने क्रतोः १५.४५
अधि न इन्द्रैषाम् ३३.४७
अधिपत्न्यसि बृहती १५.१४
अध्यवोचदधिवक्ता १६.५
अध्वर्योऽअद्रिभिः २०.३१
अनड्वान्वयः पङ्क्तिः १४.१०
अनड्वाहमन्वारभामहे ३५.१३
अनाधृष्टा पुरस्तात् ३७.१२
अनाधृष्यो जातवेदाः २७.७
अनु ते शुष्मम् ३३.६७
अनुत्तमा ते मघवन् ३३.७९
अनु त्वा माता ४.२०
अनु त्वा रथो २९.१९
अनु नोऽद्यानुमतिः ३४.९
अनु वीरैरनु २६.१९
अनेजदेकं मनसोः ४०.४
अन्तरग्ने रुचा १२.१६
अन्तरा मित्रावरुणा २९.६
अन्तश्चरति रोचना ३.७
अन्तस्ते द्यावापृथिवी ७.५
अन्धन्तमः० येऽविद्यां ४०.१२
अधन्तमः० येऽसम्भूतिं ४०.९
अन्ध स्थान्धः ३.२०
अन्नपतेऽन्नस्य ११.८३
अन्नात्परिस्रुतः १९.७५
अन्यदेवाहुर्विद्यायाः ४०.१३
अन्यदेवाहुःसम्भवात् ४०.१०
अन्यवापोऽ र्धमासानाम् २४.३७
अन्या वोऽ अन्याम् १२.८८
अन्वग्निरुषसाम् ११.१७
अन्विदनुमते त्वं ३४.८
अपश्यं गोपामनि ३७.१७
अपाघमप किल्बिषम् ३५.११
अपातामश्विना घर्मम् ३८.१३
अपाधमदभिशस्तीः ३३.९५
अपामिदं न्ययनं १७.७
अपारुं पृथिव्यै १.२६
अपां गम्भन्त्सीद १३.३०
अपां त्वेमन्त्सादयामि १३.५३
अपां पृष्ठमसि ११.२९; १३.२
अपां पेरुरस्यापः ६.१०
अपां फेनेन नमुचेः १९.७१
अपांꣳ रसमुद्वयसम् ९.३
अपि तेषु त्रिषु २३.५०
अपेत वीत वि १२.४५
अपेतो यन्तु पणयोः ३५.१
अपोऽ अद्यान्वचारिषं २०.२२
अपो देवा मधुमतीः १०.१
अपो देवीरुप सृज ११.३८
अप्नस्वतीमश्विना ३४.२९
अप्स्वग्ने सधिष्टव १२.३६
अप्स्वन्तरमृतमप्सु भेषजं ९.६
अबोध्यग्निः समिधा १५.२४
अभि गोत्राणि सहसा १७.३९
अभि त्यं देवं सवितारं ४.२५
अभि त्वा शूर २७.३५
अभिधाऽ असि भुवनम् २२.३
अभि प्रवन्त समनेव १७.९६
अभिभूरस्येतास्ते १०.२८
अभि यज्ञं गृणीहि १६.२१
अभीमं महिमा ३८.१७
अभी षु णः० भवास्यूतये २७.४१
अभी षु णः० भवास्यूतिभिः ३६.६
अभ्यर्षत सुष्टुतिम् १७.९८
अभ्यादधामि समिधम् २०.२४
अभ्यावर्तस्व पृथिवि १२.१०३
अभ्रिरसि नार्यसि ११.१०
अमीषां चित्तं प्रति १७.४४
अमुत्र भूयादध २७.९
अमेव नः सुहवा २६.२४
अयमग्निर्गृहपतिः ३.३९
अयमग्निर्वीरतमः १५.५२
अयमग्निः पुरीष्यः ३.४०
अयमग्निः सहस्रिणः १५.२१
अयमिह प्रथमो धायि ३.१५
१५.२६; ३३.६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अयमुत्तरात्संयद्	१५.१८
अयमुपर्यर्वाग्वसुस्तस्य	१५.१९
अयं ते योनिर्ऋत्वियः	३.१४,१२.५२
	१५.५६
अयं दक्षिणा मनो	१३.५५
अयं दक्षिणा रथ	१५.१६
अयं नो अग्निः	५.३७, ७.४४
अयं पश्चाद्विश्व० चक्षु	१३.५६
अयं पश्चाद्विश्व० रथ	१५.१७
अयं पुरो भुवः	१३.५४
अयं पुरो हरिकेशः	१५.१५
अयं वां मित्रावरुणा	७.९
अयं वेनश्चोदयत्	७.१६
अयꣳ सहस्रमृषिभिः	३३.८३
अयꣳ सो अग्निर्यस्मिन्	१२.४७
अर्थेत स्थ राष्ट्रदा	१०.३
अर्धऽ ऋचैरुक्थानां	१९.२५
अर्धमासाः परूꣳषि	२३.४१
अर्मेभ्यो हस्तिपं	३०.११
अर्यमणं बृहस्पतिं	९.२७
अर्वाञ्चोऽ अद्या	३३.५१
अवतत्य धनुष्ट्वं	१६.१३
अवपतन्तीरवदन्	१२.९१
अवभृथꣳ रिषस्पाहि	३.४८
अवभृथ० रिषस्याहि देवानां	८.२७
अव रुद्रमदीमह्यव	३.५८
अवसृष्टा परापत	१७.४५
अविर्न मेषो नसि	१९.९०
अवेष्टा दन्दशूकाः	१०.१०
अवोचाम कवये	१५.२५
अश्मन्नूर्जं पर्वते	१७.१
अश्मन्वती रीयते	३५.१०
अश्मा च मे	१८.१३
अश्याम तं काम	१८.७४
अश्वत्थे वो निषदनं	१२.७९, ३५.४
अश्वस्तूपरो गोमृगः	२४.१
अश्वस्य त्वा वृष्णः	३७.९
अश्वावतीर्गोमतीर्न	३४.४०
अश्वावतीꣳ सोमावतीम्	१२.८१
अश्विनकृतस्य ते	२०.३५
अश्विना गोभिः	२०.७३
अश्विना घर्मं	३८.१२
अश्विना तेजसा	२०.८०
अश्विना नमुचेः	२०.५९
अश्विना पिबतां मधु०	२०.९०
अश्विना भेषजं	२०.६४
अश्विना हविरिन्द्रियम्	२०.६७
अश्विभ्यां चक्षुरमृतम्	१९.८९
अश्विभ्यां पच्यस्व	१०.३१
अश्विभ्यां पिन्वस्व	३८.४
अश्विभ्यां प्रातःसवनम्	१९.२६
अश्वो घृतेन त्मन्या	२९.१०
अषाढं युत्सु	३४.२०
अषाढासि सहमाना	१३.२६
अष्टौ व्यख्यत्	३४.२४
असवे स्वाहा	२२.३०
असंख्याता सहस्राणि	१६.५४
असि यमो अस्यादित्यः	२९.१४
असुन्वन्तमयजमानम्	१२.६२
असुर्या नाम ते	४०.३
असौ यस्ताम्रोऽ अरुणः	१६.६
असौ या सेना	१७.४७
असौ योऽ वसर्पति	१६.७
अस्कन्नमद्य देवेभ्यः	२.८
अस्ताव्यग्निर्नराꣳ सुशेवः	१२.२९
अस्माकमिन्द्रः समृतेषु	१७.४३
अस्मात्त्वमधि जातः	३५.२२
अस्मिन्महत्यर्णवे	१६.५५
अस्मे रुद्रा मेहनां	३३.५०
अस्मे वो अस्त्विन्द्रियम्	९.२२
अस्य प्रत्नामनु द्युतं	३.१६
अस्याजरासो दमाम्	३३.१
अस्येदिन्द्रो वावृधे	३३.९७
अहरहरप्रयावं	११.७५
अहः केतुना जुषतां	३७.२१
अहानि शं भवन्तु	३६.११
अहाव्यग्ने हविरास्ये	२०.७९
अहिरिव भोगैः	२९.५१
अह्ले पारावतान्	२४.२५
अह्रुतमसि हविर्धानम्	१.९
अꣳशुना ते अꣳशु	२०.२७
अꣳशुरꣳशुष्टे देव	५.७
अꣳशुश्च मे रश्मिश्च	१८.१९
आ	
आकूतिमग्निं प्रयुजं	११.६६
आकूत्यै प्रयुजेऽ ग्नये	४.७
आ कृष्णेन रजसा	३३.४३, ३४.३१
आ क्रन्दय बलम्	२९.५६
आक्रम्य वाजिन्	११.१९
आगत्य वाज्यध्वानम्	११.१८
आगन्म विश्ववेदसम्	३.३८
आग्नेयः कृष्णग्रीवः	२९.५८
आग्रयणश्च मे	१८.२०
आ घा येऽ अग्निम्	७.३२
आच्छच्छन्दः प्रच्छच्छन्दः	१५.५
आच्या जानु दक्षिणतः	१९.६२
आ जङ्घन्ति सान्वेषां	२९.५०
आजिघ्र कलशं	८.४२
आजुह्वानऽ ईड्यो वन्द्यः	२९.२८
आजुह्वानः सुप्रतीकः	१७.७३
आजुह्वाना सरस्वती	२०.५८
आ तत्तऽ इन्द्रायवः	३३.२८
आ तं भज सौश्रवेषु	१२.२७
आतिथ्यरूपं मासरं	१९.१४
आतिष्ठन्तं परि विश्वे	३३.२२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आतिष्ठ वृत्रहन् ८.३३
आ तू नऽ इन्द्र वृत्रहन् ३३.६५
आ ते वत्सो मनो १२.११५
आत्मने मे वर्चोदा ७.२८
आत्मन्नुपस्थे न वृकस्य १९.९२
आत्मानं ते मनसा २९.१७
आ त्वा जिघर्मि ११.२३
आ त्वाऽहार्षमन्तरभूः १२.११
आदित्यं गर्भम् १३.४१
आदित्यैर्नो भारती २९.८
आधत्त पितरो २.३३
आ नऽ इडाभिर्विदथे ३३.३४
आ न इन्द्रो दूरादा २०.४८
आ न इन्द्रो हरिभिर्या २०.४९
आ नऽ एतु मनः ३.५४
आ नासत्या त्रिभिः ३४.४७
आ नो नियुद्भिः शतिनीभिः २७.२८
आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु २५.१४
आ नो मित्रावरुणा घृतैः २१.८
आ नो यज्ञं दिविस्पृशं ३३.८५
आ नो यज्ञं भारती २९.३३
आन्त्राणि स्थालीर्मधु १९.८६
आपतये त्वा परि ५.५
आपये स्वाहा स्वापये ९.२०
आपवस्व हिरण्यवत् ८.६३
आपश्चित्पिप्युः ३३.१८
आपो अस्मान्मातरः ४.२
आपोऽ देवीः प्रतिगृभ्णीत १२.३५
आपो ह यद् बृहतीः २७.२५
आपो हि ष्ठा मयो ११.५०, ३६.१४
आ प्यायस्व मदिन्तम १२.११४
आ प्यायस्व समेतु १२.११२
आ ब्रह्मन् ब्राह्मणः २२.२२
आ मन्द्रैरिन्द्र हरिभिः २०.५३
आ मा वाजस्य प्रसवः ९.१९
आमूरज प्रत्यावर्त्तयेमाः २९.५७
आयदिषे नृपतिम् ३३.११
आयन्तु नः पितरः १९.५८
आयं गौः पृश्निरक्रमीत् ३.६
आ यातमुप भूषतम् ३३.८८
आ यात्विन्द्रोऽ वस उप २०.४७
आयासाय स्वाहा ३९.११
आयुर्मे पाहि प्राणं मे १४.१७
आयुर्यज्ञेन कल्पतां स्वाहा २२.३३
आयुर्यज्ञेन० प्राणो० पृष्ठं ९.२१
आयुर्यज्ञेन० प्राणो० वाग् १८.२९
आयुष्मानग्ने हविषा ३५.१७
आयुष्यं वर्चस्यम् ३४.५०
आयोष्ट्वा सदने १५.६३
आ रात्रि पार्थिवम् ३४.३२
आ रोदसीऽ अपृणदा ३३.७५
आ वाचो मध्यमरुहद् १५.५१
आ वायो भूष शुचिपा ७.७
आविर्मर्या आवित्तो १०.९
आ विश्वतः प्रत्यञ्चम् ११.२४
आ वो देवास ईमहे ४.५
आशुस्त्रिवृद् भान्तः १४.२३
आशुः शिशानो वृषभः १७.३३
आश्रावयेति १९.२४
आसन्दी रूपꣳ राजा १९.१६
आसीनासोऽ अरुणीनाम् १९.६३
आ सुते सिञ्चत ३३.२१
आ सुष्वयन्ती यजते २९.३१
आहं पितृन्त्सुविदत्रान् १९.५६

इ

इच्छन्ति त्वा सोम्यासः ३४.१८
इडऽ एह्यदितऽ एहि ३.२७,
इड एह्यदित एहि सरस्वती ३८.२
इडाभिरग्निरीड्यः २१.१४
इडाभिर्भक्षानाप्नोति १९.२९
इडामग्ने पुरुदꣳस १२.५१
इडायास्त्वा पदे ३४.१५
इडे रन्ते हव्ये काम्ये ८.४३
इदमापः प्रवहत ६.१७
इदमुत्तरात् स्वस्तस्य १३.५७
इदं पितृभ्यो नमः १९.६८
इदं मे ब्रह्म च ३२.१६
इदं विष्णुर्विचक्रमे ५.१५
इदं हविः प्रजननम् १९.४८
इन्दुर्दक्षः श्येन १८.५३
इन्द्र आसां नेता १७.४०
इन्द्र गोमन्निहा २६.४
इन्द्रघोषस्त्वा वसुभिः ५.११
इन्द्र मरुत्व इह ७.३५
इन्द्रमिद्धरी वहतो ८.३५
इन्द्रवायूऽ इमे० हि ३३.५६
इन्द्रवायू इमे० हि० उपयाम ७.८
इन्द्रवायू बृहस्पतिम् ३३.४५
इन्द्रवायू सुसन्दृशा ३३.८६
इन्द्रश्च मरुतश्च ८.५५
इन्द्रश्च सम्राड् वरुणश्च ८.३७
इन्द्रस्य क्रोडोऽ दित्यै २५.८
इन्द्रस्य रूपमृषभः १९.९१
इन्द्रस्य वज्रो मरुताम् २९.५४
इन्द्रस्य वज्रोऽसि मित्रा १०.२१
इन्द्रस्य वज्रो असि वाजसा ९.५
इन्द्रस्य वृष्णो वरुण १७.४१
इन्द्रस्य स्यूरसि ५.३०
इन्द्रस्यौज स्थ ३७.६
इन्द्रं दुरः कवष्यः २०.४०
इन्द्रं दैवीर्विशः १७.८६
इन्द्रं विश्वाऽ अवीवृधन् १२.५६
१५.६१, १७.६१
इन्द्रः सुत्रामा स्ववाँ २०.५१
इन्द्रः सुत्रामा हृदयेन १९.८५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्द्राग्नीऽ अपादियम् ३३.९३
इन्द्राग्नीऽ अव्यथमानाम् १४.११
इन्द्राग्नीऽ आगतं सुतं ७.३१
इन्द्राग्नी मित्रावरुणादितिम् ३३.४९
इन्द्राग्न्योः पक्षतिः २५.५
इन्द्राय त्वा वसुमते रुद्रवत ६.३२
इन्द्राय त्वा वसुमते रुद्रवते ३८.८
इन्द्रा याहि चित्रभानो २०.८७
इन्द्रा याहि तूतुजानः २०.८९
इन्द्रा याहि धियेषितो २०.८८
इन्द्रा याहि वृत्रहन् २६.५
इन्द्रायेन्दुꣳ सरस्वती २०.५७
इन्द्रेमं प्रतरां नय १७.५१
इन्द्रेहि मत्स्यन्धसः ३३.२५
इन्द्रो विश्वस्य राजति ३६.८
इन्द्रो वृत्रमवृणोच्छर्धनीतिः ३३.२६
इन्धानास्त्वा शतꣳ हिमा ३.१८
इममूर्णायुं वरुणस्य १३.५०
इमं जीवेभ्यः परिधिम् ३५.१५
इमं देवाऽ असपत्नम् ९.४०, १०.१८
इमं नो देव सवितः ११.८
इमं मा हिꣳसीरेकशफं १३.४८
इमं मा हिंसीर्द्विपादं १३.४७
इमं मे वरुण श्रुधी २१.१
इमं साहस्रं शतधारम् १३.४९
इमꣳ स्तनमूर्जस्वन्तम् १७.८७
इमाऽ उ त्वा पुरूवसः ३३.८१
इमा गिरऽ आदित्येभ्यः ३४.५४
इमा ते वाजिन्नव २९.१६
इमा नु कं भुवना २५.४६
इमामगृभ्णन् रशना २२.२
इमा मे अग्न इष्टकाः १७.२
इमा रुद्राय तवसे १६.४८
इमां ते धियं ३३.२९
इमौ ते पक्षावजरौ १८.५२
इयत्यग्रऽ आसीत् ३७.५
इयदस्यायुरसि १०.२५
इयमुपरि मतिस्तस्यै १३.५८
इयं ते यज्ञिया ४.१३
इयं वेदिः परो २३.६२
इरज्यन्नग्ने प्रथयस्व १२.१०९
इरावती धेनुमती ५.१६
इषमूर्जमहमित १२.१०५
इषश्चोर्जश्च शारदौ १४.१६
इषिरो विश्वव्यचा १८.४१
इषे त्वोर्जे त्वा १.१
इषे पिन्वस्वोर्जे ३८.१४
इषे राये रमस्व १३.३५
इष्कर्तारमध्वरस्य १२.११०
इष्कृतिर्नाम वो माता १२.८३
इष्टोऽ अग्निराहुतः १८.५७
इष्टो यज्ञो भृगुभिः १८.५६
इह रतिरिह रमध्वम् ८.५१
इहैवाग्नेऽ अधिधारया २७.४

ई

ईडितो देवैर्हरिवाँ २०.३८
ईड्यश्चासि वन्द्यश्च २९.३.
ईदृक्षासऽ एतादृक्षास १७.८४
ईदृङ् चान्यादृङ् च १७.८१
ईर्मान्तासः सिलिकमध्यमा २९.२१
ईशानाय परस्वतः २४.२८
ईशावास्यमिदम् ४०.१

उ

उक्ताः सञ्चरा एताः २४.१९
उक्ताः सञ्चराः० कृष्णा २४.१५
उक्ताः सञ्चरा एता० प्राशृंगा २४.१७
उक्थेभिर्वृत्रहन्तमा ३३.७६
उक्षा समुद्रो अरुणः १७.६०
उखां कृणोतु शक्त्या ११.५७
उग्रश्च भीमश्च ध्वान्तः ३९.७
उग्रं लोहितेन मित्रं ३९.९
उग्रा विघनिना मृध ३३.६१
उच्चा ते जातमन्धसः २६.१६
उच्छुष्माऽ ओषधीनाम् १२.८२
उत नोऽहिर्बुध्न्यः ३४.५३
उत स्मास्य द्रवतस्तुर ९.१५
उतेदानीं भगवन्तः ३४.३७
उत्क्राम महते सौभगाय ११.२१
उत्तानायामवभरा ३४.१४
उत्तिष्ठन्नोजसा सह ८.३९
उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते ३४.५६
उत्थाय बृहती भव ११.६४
उत्सक्थ्याऽ अव गुदम् २३.२१
उत्सादेभ्यः कुब्जं प्रमुदे ३०.१०
उदक्रमीद् द्रविणोदा ११.२२
उदग्ने तिष्ठ प्रत्यातनुष्व १३.१२
उदीचीमारोह १०.१३
उदीरतामवर उत् १९.४९
उदु तिष्ठ स्वध्वरावा ११.४१
उदुत्तमं वरुण १२.१२
उदु त्यं जातवेदसं० सूर्यं स्वाहा ७.४१
उदु त्यं जातवेदसम० ३३.३१
उदु त्यं जात वेदसम० उपयाम ८.४१
उदु त्वा विश्वेदेवाः १२.३१;१७.५३
उदेनमुत्तरां नयाग्ने १७.५०
उदेषां बाहू अति० ११.८२
उद् ग्राभं च निग्राभम् १७.६४
उद्दिवꣳ स्तभानान्तरिक्षम् ५.२७
उद्धर्षय मघवन् १७.४२
उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति १५.५४, १८.६१
उद्वयं तमसस्परि २०.२१; २७.१०; ३५.१४, ३८.२४
उन्नतऽ ऋषभो वामनः २४.७
उप ज्मन्नुप वेतसे १७.६
उप त्वाऽग्ने हविष्मतीः ३.४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उप नः सूनवो गिरः	३३.७७
उपप्रयन्तो अध्वरम्	३.११
उपप्रागाच्छसनं वाज्यर्वा	२९.२३
उपप्रागात्परमं यत्सधस्थं	२९.२४
उपप्रागात्सुमन्मे धायि	२५.३०
उपयामगृहीतोऽसि ध्रुवो	७.२५
उपयामगृहीतोऽसि प्रजा	२३.२, २३.४
उपयामगृहीतोऽसि बृहस्पति	८.९
उपयामगृहीतो ऽ सि मधवे	७.३०
उपयामगृहीतोऽसि सावित्रो	८.७
उपयामगृहीतोऽ सि सुशर्मा	८.८
उपयामगृहीतोऽ सि हरिः	८.११
उपयामगृहीतोऽ सीन्द्राय	७.२२
उपयामगृहीतो ऽ स्यग्रये	८.४७
उपयामगृहीतोऽ स्यन्तर्यच्छ	७.४
उपयामगृहीतोऽ स्यश्विभ्यां	२०.३३
उपयामगृहीतोऽ स्याग्रयणः	७.२०
उपयामगृहीतोऽ स्यादित्येभ्यः	८.१
उपमायगृहीतोऽ स्याश्विनम्	१९.८
उपश्वासय पृथिवीम्	२९.५५
उपहूताऽ इह गावः	३.४३
उपहूताः पितरः सोमयासः	१९.५७
उपहूतो द्यौष्पितोप	२.११
उपह्वरे गिरीणाम्	२६.१५
उपावसृज त्मन्या	२९.३५
उपावीरस्युप देवान्	६.७
उपास्मै गायता नरः	३३.६२
उभा पिबतमश्विना	३४.२८
उभाभ्यां देव सवितः	१९.४३
उभा वामिन्द्राग्नी	३.१३
उभे सुश्चन्द्र सर्पिषः	१५.४३
उरु विष्णो विक्रमस्व	५.३८, ५.४१
उशन्तस्त्वा निधीमहि	१९.७०
उशिक्त्वं देव सोमाग्नेः	८.५०
उशिक्पावको अरतिः	१२.२४
उशिगसि कविः	५.३२
उषस्तच्चित्रमाभरा	३४.३३
उषासानक्तमश्विना	२०.६१
उषासानक्ता बृहती	२०.४१
उषे यह्वी सुपेशसा	२१.१७
उस्त्रावेतं धूर्षाहौ	४.३३
ऊ	
ऊर्क् च मे सूनृता	१८.९
ऊर्गस्याङ्गिरस्यूर्णम्रदा	४.१०
ऊर्जं वहन्तीरमृतम्	२.३४
ऊर्जो नपाज्जातवेदः	१२.१०८
ऊर्जो नपातꣳ स हिनायं	२७.४४
ऊर्ध्व उ षु ण ऊतये	११.४२
ऊर्ध्वमेनमुच्छ्रयताद्गिरौ	२३.२७
ऊर्ध्वाऽ अस्य समिधो	२७.११
ऊर्ध्वामारोह	१०.१४
ऊर्ध्वामेनामुच्छ्रापय	२३.२६
ऊर्ध्वो भव प्रतिविध्या	१३.१३
ऋ	
ऋक्सामयोः शिल्पे	४.९
ऋचं वाचं प्रपद्ये	३६.१
ऋचे त्वा रुचे त्वा	१३.३९
ऋचो नामास्मि	१८.६७
ऋजवे त्वा साधवे	३७.१०
ऋजीते परि वृङ्धि	२९.४९
ऋतजिच्च सत्यजिच्च	१७.८३
ऋतये स्तेनहृदयम्	३०.१३
ऋतवस्त ऋतुथा	२३.४०
ऋतवस्ते यज्ञं	२६.१४
ऋतव स्थ ऋतावृध	१७.३
ऋतश्च सत्यश्च	१७.८२
ऋतं च मे ऽ मृतम्	१८.६
ऋतꣳ सत्यमृतम्	११.४७
ऋतावानं महिषम्	१२.१११
ऋतावानं वैश्वानरम्	२६.६
ऋताषाडृतधामाग्निः	१८.३८
ऋतुथेन्द्रो वनस्पतिः	२०.६५
ऋधगित्था स मर्त्यः	३३.८७
ए	
एकया च दशभिश्च	२७.३३
एकयाऽ स्तुवत प्रजाः	१४.२८
एकस्त्वष्टुरश्वस्याविशस्ता	२५.४२
एकस्मै स्वाहा द्वाभ्यां	२२.३४
एका च मे तिस्रश्च	१८.२४
एजतु दशमास्यो गर्भः	८.२८
एण्यह्वो मण्डूको मूषिका	२४.३६
एतत्ते रुद्रावसन्तेन	३.६१
एतं जनाथ परमे	१८.६०
एतं ते देव सवितः	२.१२
एतꣳ सधस्थ परि	१८.५९
एता अर्षन्ति हृद्यात्	१७.९३
एता उ वः सुभगा	२९.५
एताऽ ऐन्द्राग्ना द्विरूपा	२४.८
एतावद्रूपं यज्ञस्य	१९.३१
एतावानस्य महिमा	३१.३
एदमगन्म देव	४.१
एधोऽस्येधिषीमहिꣳ धेहि	३८.२५
एधोऽस्येधिषीमहि धेहि समा	२०.२३
एना विश्वान्यर्य आ	२६.१८
एना वो अग्निं नमसोः	१५.३२
एभिर्नो अर्कैर्भवा	१५.४६
एवश्छन्दो वरिवश्छन्दः	१५.४
एवेदिन्द्रं वृषणम्	२०.५४
एष छागः पुरः	२५.२६
एष ते गायत्रो भागः	४.२४
एष ते निर्ऋते भागः	९.३५
एष ते रुद्र भागः	३.५७
एष व स्तोमो मरुत इयं	३४.४८
एष स्य वाजी क्षिपणिम्	९.१४
एषा तेऽ अग्ने समित्तया	२.१४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एषा ते शुक्र तनू: ४.१७
एष: व: सा सत्या ९.१२
एषो ह देव: प्रदिश: ३२.४
एह्यु षु ब्रवाणि २६.१३

ऐ

ऐन्द्र: प्राणोऽ अङ्गेअङ्गे ६.२०

ओ

ओजश्च मे सहश्च १८.३
ओमासश्चर्षणीधृत: ७.३३
ओषधय: प्रतिगृभ्णीत ११.४८
ओषधय: समवदन्त १२.९६
ओषधी: प्रतिमोदध्वम् १२.७७
ओषधीरिति मातर: १२.७८

क

ककुभꣳरूपं वृषभस्य ८.४९
कत्यस्य विष्ठा: कत्यक्षराणि २३.५७
कदा चन प्रत्युच्छसि ८.३
कदा चन स्तरीरसि ३.३४, ८.२
कदा चन स्तरीरसि ३.३४; ८.२
कन्याऽ इव वहतुम् १७.९७
कया त्वं न ऊत्याभि ३६.७
कया नश्चित्रऽ आ २७.३९,३६.४
कल्पन्तां ते दिश: ३५.९
कवष्यो न व्यचस्वती: २०.६०
कस्त्वाछ्यति कस्त्वा २३.३९
कस्त्वा युनक्ति स त्वा १.६
कस्त्वा विमुञ्चति २.२३
कस्त्वा सत्यो मदानाम् २७.४०,३६.५
क: स्विदेकाकी चरति २३.९, २३.४५
काऽ ईमरे पिशङ्गिला २३.५५
काण्डात्काण्डात् प्ररोहन्ती १३.२०
कामं कामदुघे धुक्ष्व १२.७२
काय स्वाहा कस्मै २२.२०
कार्षिरसि समुद्रस्य ६.२८
काव्ययोराजानेषु ३३.७२
का स्विदासीत् पूर्वचित्ति: २३.११,२३.५३
किꣳ स्वित्सूर्यसमम् २३.४७
किꣳ स्विदासीदधिष्ठानमारम्भ १७.१८
किꣳ स्विद्वनं क उ स वृक्ष १७.२०
कुक्कुटोऽसि मधुजिह्व १.१६
कुतस्त्वमिन्द्र माहिन: ३३.२७
कुम्भो वनिष्ठुर्जनिता १९.८७
कुर्वन्नेवेह कर्माणि ४०.२
कुलायिनी घृतवती १४.२
कुविदङ्ग यजन्ति २३.३८
कुविदङ्ग० यजन्ति उप १०.३२, १९.६
कृणुष्वं पाज: प्रसितिं १३.९
कृष्णग्रीवाऽ आग्नेय: शिति २४.६
कृष्णग्रीवा आग्नेया बभ्रव: २४.९, २४.१४
कृष्णा भौमा धूम्रा: २४.१०
कृष्णोऽ स्याखरेष्ठ: २.१
केतुं कृण्वन्नकेतवे २९.३७
केष्वन्त: पुरुष आ २३.५१
कोऽअस्य वेद २३.५९
कोऽ दात्कस्माऽ अदात् ७.४८
कोऽ सि कतमोऽसि ७.२९, २०.४
क्रमध्वमग्निना १७.६५
क्रव्यादमग्निं प्र हिणोमि ३५.१९
क्षत्रस्य त्वा परस्पाय ३८.१९
क्षत्रस्य योनिरसि २०.१
क्षत्रस्योल्बमसि १०.८
क्षत्रेणाग्ने स्वायु: सं २७.५
क्षपो राजन्नुत १५.३७

ख

खड्गो वैश्वदेव: श्वा २४.४०

ग

गणानां त्वा गणपतिम् २३.१९
गन्धर्वस्त्वा विश्वावसु: २.३
गर्भोऽ अस्योषधीनाम् १२.३७
गर्भो देवानां पिता ३७.१४
गायत्रं छन्दोऽ सि ३८.६
गायत्री त्रिष्टुब्जगती २३.३३
गायत्रेण त्वा छन्दसा १.२७
गावऽ उपावतावतं ३३.१९, ३३.७१
गृहा मा बिभीत ३.४१
गोत्रभिदं गोविदं वज्रबाहुम् १७.३८
गोभिर्न सोममश्विना २०.६६
गोमदू षु णासत्या २०.८१
ग्रहाऽ ऊर्जाहुतय: ९.४
ग्रीष्मेणऽ ऋतुना देवा २१.२४

घ

घर्मैतत्ते पुरीषम् ३८.२१
घृतवती भुवनानामभिश्रि ३४.४५
घृतं घृतपावान: ६.१९
घृतं मिमिक्षे घृतमस्य १७.८८
घृताची स्थो धुर्यौ २.१९
घृताच्यसि जुहूर्नाम्ना २.६
घृतेन सीता १२.७०
घृतेनाक्तौ पशूंस्त्रायेथाम् ६.११
घृतेनाञ्जन्त्सं पथ: २९.२

च

चक्षुष: पिता मनसा १७.२५
चतस्रश्च मेऽ ष्टौ च १८.२५
चतुस्त्रिꣳशत्तन्तवो ८.६१
चतुस्त्रिꣳशद्वाजिनो देव २५.४१
चतु: स्रक्तिर्नाभि: ३८.२०
चत्वारि शृङ्गा त्रय: १७.९१
चन्द्रमाऽ अप्स्वन्तरा ३३.९०
चन्द्रमा मनसो जात: ३१.१२
चित्तिं जुहोमि मनसा १७.७८
चित्पतिर्मा पुनातु ४.४
चित्रं देवानामुदगादनीकं ७.४२,१३.४६
चिदसि तया देवतया १२.५३
चिदसि मनासि धीरसि ४.१९

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चोदयित्री सूनृतानाम्	२०.८५
ज	
जनयत्यै त्वा संयौमि	१.२२
जनस्य गोपाऽ अजनिष्ट	१५.२७
जनिष्ठाऽ उग्रः सहसे तुरा	३३.६४
जवो यस्ते वाजिन्निहितः	९.९
जिह्वा मे भद्रं वाङ् महो	२०.६
जीमूतस्येव भवति	२९.३८
जुषाणो बर्हिर्हरिवान्	२०.३९
ज्यैष्ठ्यं च मऽ आधिपत्यम्	१८.४
ज्योतिरसि विश्वरूपम्	५.३५
त	
तऽ आयजन्त द्रविणं समस्या	१७.२८
तच्चक्षुर्देवहितम्	३६.२४
ततो विराडजायत	३१.५
तत्त्वा यामि ब्रह्मणा	१८.४९; २१.२
तत्सवितुर्वरेण्यम्	३.३५;२२.९;३०.३
तत्सूर्यस्य देवत्वम्	३३.३७
तदश्विना भिषजा	१९.८२
तदस्य रूपममृतम्	१९.८१
तदिदास भुवनेषु	३३.८०
तदेजति तन्नैजति	४०.५
तदेवाग्निस्तदादित्यः	३२.१
तद्विप्रासो विपन्यवः	३४.४४
तद्विष्णोः परमं पदम्	६.५
तनूनपाच्छुचिव्रतः	२१.१३
तनूनपात्पथऽ ऋतस्य	२९.२६
तनूनपादसुरो विश्व	२७.१२
तनूपाऽ अग्नेऽ सि तन्वं	३.१७
तनूपा भिषजा सुते	२०.५६
तन्तुना रायस्पोषेण	१५.७
तन्नस्तुरीपमद्भुतम्	२७.२०
तन्नो वातो मयोभु	२५.१७
तन्मित्रस्य वरुणस्याभि	३३.३८
तपश्च तपस्यश्च	१५.५७
तपसे कौलालं मायायै	३०.७
तपसे स्वाहा तप्यते	३९.१२
तप्तायनी मेऽ सि	५.९
तमिद् गर्भं प्रथमं दध्र आपः	१७.३०
तमिन्द्रं पशवः सचा	२०.६९
तमीशानं जगतः	२५.१८
तमु त्वा दध्यङ्ङृषिः	११.३३
तमु त्वा पाथ्यो वृषा	११.३४
तरणिर्विश्वदर्शतः	३३.३६
तव भ्रमासऽ आशुया	१३.१०
तव वायवृतस्पते	२७.३४
तव शरीरं पतयिष्ण्वर्वन्	२९.२२
तवायꣳ सोमस्त्वमेह्यर्वाङ्	२६.२३
तस्मा अरं गमाम वः	११.५२,३६.१६
तस्मादश्वाऽ अजायन्त	३१.८
तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः	३१.७
तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः संभृतम्	३१.६
तस्य वयꣳ सुमतौ	२०.५२
तस्यास्ते सत्यसवसः	४.१८
तं त्वा शोचिष्ठ	३.२६
तं त्वा समिद्भिरङ्गिरः	३.३
तं पत्नीभिरनु गच्छेम	१५.५०
तं प्रत्नथा पूर्वथा	७.१२
तं यज्ञं बर्हिषि	३१.९
तं वो दस्ममृतीषहम्	२६.११
ताऽ अस्य सूददोहसः	१२.५५;१५.६०
ता उभौ चतुरः पदः	२३.२०
ता नऽ आ वोढमश्विना	२०.८३
ता नासत्या सुपेशसा	२०.७४
तान्पूर्वया निविदा	२५.१६
ता भिषजा सुकर्मणा	२०.७५
ताꣳ सवितुर्वरेण्यस्य	१७.७४
तिरश्चीनो विततः	३३.७४
तिस्रऽ इडा सरस्वती	२१.१९
तिस्रस्त्रेधा सरस्वती	२०.६३
तिस्रो देवीर्बर्हिरिदं	२७.१९
तिस्रो देवीर्हविषा	२०.४३
तीव्रान्घोषान्कृण्वते	२९.४४
तुभ्यं ता अङ्गिरस्तम	१२.११६
तेऽ अस्य योषणे	२७.१७
तेऽ आचरन्ती समनेव	२९.४१
तेजः पशूनाꣳ हविः	१९.९५
तेजोऽ सि तेजो मयि	१९.९
तेजोऽ सि शुक्रममृतम्	२२.१
ते नोऽ अर्वन्तो हवन	९.१७
ते हि पुत्रासोऽ अदितेः	३.३३
त्रया देवाऽ एकादश	२०.११
त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रम्	२०.५०
त्रिधा हितं पणिभिः	१७.९२
त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः	३१.४
त्रिवृदसि त्रिवृते त्वा	१५.९
त्रिꣳशद्धाम वि राजति	३.८
त्रीणि तऽ आहुर्दिवि	२९.१५
त्रीणि पदा विचक्रमे	३४.४३
त्रीणि शता त्री सहस्राणि	३३.७
त्रीन्त्समुद्रान्त्समसृपत्	१३.३१
त्र्यम्बकं यजामहे	३.६०
त्र्यवयो गायत्र्यै पञ्च	२४.१२
त्र्यविश्च मे त्र्यवी च	१८.२६
त्र्यायुषं जमदग्नेः	३.६२
त्वमग्न ईडितः कव्य	१९.६६
त्वमग्ने द्युभिस्त्वमा	११.२७
त्वमग्ने प्रथमोऽ अङ्गिराः	३४.१२
त्वमग्ने व्रतपाऽ असि	४.१६
त्वमङ्ग प्रशꣳसिषः	६.३७
त्वमिन्द्र प्रतूर्तिषु	३३.६६
त्वमिमाऽ ओषधीः सोम	३४.२२
त्वमुत्तमास्योषधे	१२.१०१
त्वया हि नः पितरः	१९.५३
त्वष्टा तुरीपोऽ अद्भुतः	२१.२०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्वष्टा दधच्छुष्मम् २०.४४
त्वष्टा वीरं देवकामम् २९.९
त्वं नो अग्ने तव देव ३४.१३
त्वं नोऽअग्ने वरुणस्य २१.३
त्वं यविष्ठ दाशुषः १३.५२; १८.७७
त्वꣳ सोम पितृभिः संविदानो १९.५४
त्वꣳ सोम प्रचिकितः १९.५२
त्वामग्नेऽ अङ्गिरसो गुहा १५.२८
त्वामग्ने पुष्करादधि १५.२२
त्वामग्ने यजमानाः १२.२८
त्वामग्ने वृणते ब्राह्मणा २७.३
त्वामद्यऽ ऋषऽ आर्षेयः २१.६१
त्वामिद्धि हवामहे साता २७.३७
त्वां गन्धर्वा अखनंस्त्वा १२.९८
त्वां चित्रश्रवस्तम १५.३१
त्वाꣳ हि मन्द्रतममर्कशोकैः ३३.१३
त्वे अग्ने स्वाहुत ३३.१४

द

दक्षिणामारोह १०.११
दधिक्राव्णोऽ अकारिषम् २३.३२
दस्रा युवाकवः सुता ३३.५८
दꣳष्ट्राभ्याम् ११.७८
दिग्भ्यः स्वाहा ३९.२
दिवस्परि प्रथमं जज्ञे अग्निः १२.१८
दिवि धाऽ इमं यज्ञम् ३८.११
दिवि पृष्ठोऽ अरोचत ३३.९२
दिवि विष्णुर्व्यक्रꣳस्त २.२५
दिवो मूर्धाऽसि पृथिव्या १८.५४
दिवो वा विष्ण उत ५.१९
दिवः पृथिव्याः पर्योज २९.५३
दीक्षायै रूपꣳ शष्पाणि १९.१३
दीर्घायुस्तऽ ओषधे १२.१००
दुरो देवीर्दिशो महीः २१.१६
दृते दृꣳह मा ज्योक्ते ३६.१९
दृते दृꣳह मा मित्रस्य ३६.१८
दृशानो रुक्म उर्विया १२.१;१२.२५
दृष्ट्वा परिस्रुतो रसम् १९.७९
दृष्ट्वा रूपे व्याकरोत् १९.७७
दृꣳहस्व देवि पृथिवि ११.६९
देव इन्द्रो० त्रिबन्धुरो २८.१९
देव इन्द्रो० सरस्वती २१.५५
देवकृतस्यैनसोऽव ८.१३
देवश्रुतौ देवेष्वा ५.१७
देव सवितरेष ते ५.३९
देव सवितः प्रसुवः ९.१;११.७,३०.१
देव सवितरेष ते ५.३९
देवस्त्वा सवितोद्वपतु ११.६३
देवस्य चेततो महीम् २२.११
देवस्य त्वा सवितुः १.१०, १.२१,
१.२४, ५.२२.५,२६; ६.१, ६.९,
६.३०; ९.३०, ९.३८; ११.९, ११.२८;
१८.३७; २०.३; ३७.१; ३८.१
देवस्य सवितुर्मतिम् २२.१४
देवस्याहꣳ सवितुः ९.१०,९.१३
देवहूर्यज्ञ आ च १७.६२
देवंदेवं वोऽवसे देवं देवम् ३३.९१
देवं बर्हिरिन्द्रꣳ सुदेवं २८.१२
देवं बर्हिर्वयोधसम् २८.३५
देवं बर्हिर्वारितीनाम् २१.५७
२८.२१;२८.४४
देवं बर्हिः सरस्वती २१.४८
देवा गातुविदो गातुम् ८.२१
देवा देवानां भिषजा २१.५३
देवा दैव्या होतारा २८.१७;२८.४०
देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजू २५.१५
देवान्दिवमगन्यज्ञः ८.६०
देवा यज्ञमतन्वत १९.१२
देवासो हि ष्मा ३३.९४
देवीऽ उषासानक्ता देवं २८.३७
देवीऽ उषासानक्तेन्द्रम् २८.१४
देवीऽ उषासावश्विना २१.५०
देवीऽ ऊर्जाहुती दुघे २१.५२
२८.१६;२८.३९
देवी जोष्ट्री वसुधिती २८.१५,२८.३८
देवी जोष्ट्री सरस्वती २१.५१
देवी द्यावापृथिवी ३७.३
देवीरापऽ एष वो ८.२६
देवीरापो अपां नपाद्य ६.२७
देवीरापः शुद्धा वोढ्वम् ६.१३
देवीर्द्वार इन्द्रꣳ सङ्घाते २८.१३
देवीर्द्वारोऽ अश्विना २१.४९
देवीर्द्वारो वयोधसम् २८.३६
देवीस्तिस्रस्तिस्रः २१.५४;२८.१८
२८.४१
देवेन नो मनसा देव ३४.२३
देवेभ्यो हि प्रथमं ३३.५४
देवो अग्निः स्विष्टकृत् २१.५८
२८.२२;२८.४५
देवो देवैर्वनस्पतिः २१.५६, २८.२०
देवो नराशꣳसो देवम् २८.४२
देवो वनस्पतिर्देवम् २८.४३
देव्यो वम्रो भूतस्य ३७.४
देहि मे ददामि ते ३.५०
दैव्याऽ अध्वर्यवस्त्वा २३.४२
दैव्या मिमाना मनुषः २०.४२
दैव्याय धर्त्रे जोष्ट्रे १७.५६
दैव्यावध्वर्यू आ गतं ३३.३३;३३.७३
दैव्या होताराऽ ऊर्ध्वम् २७.१८
दैव्या होतारा प्रथमा २९.३२
दैव्या होतारा भिषजा २१.१८
द्यां मा लेखीरन्तरिक्षं ५.४३
द्युभिरक्तुभिः परिपातम् ३४.३०
द्यौरासीत्पूर्वचित्तिः २३.१२;२३.५४
द्यौस्ते पृथिव्यन्तरिक्षम् २३.४३
द्यौस्ते पृष्ठं पृथिवी ११.२०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्यौः शान्तिरन्तरिक्षम् ३६.१७
द्रप्सश्चस्कन्द पृथिवीम् १३.५
द्रविणोदाः पिपीषति २६.२२
द्रापेऽ अन्धसस्पते १६.४७
द्रुपदादिव मुमुचानः २०.२०
द्रवन्नः सर्पिरासुतिः ११.७०
द्वारो देवीरन्वस्य २७.१६
द्विपदा याश्चतुष्पदाः २३.३४
द्वे विरूपे चरतः स्वर्थे ३३.५
द्वे सृतीऽ अशृण्वं पितृणां १९.४७

ध

धन्वना गा धन्वनाजिम् २९.३९
धर्ता दिवो विभाति ३७.१६
धाता रातिः सवितेदम् ८.१७
धानानाᳬं रूपं कुवलं १९.२२
धानावन्तं करम्भिणम् २०.२९
धानाः करम्भः सक्तवः १९.२१
धान्यमसि धिनुहि १.२०
धामच्छदग्रिरिन्द्रः १८.७६
धामन्ते विश्वं भुवनमधि १७.९९
धूम्रान्वसन्तायालभते २४.११
धूम्रा बभ्रुनीकाशाः २४.१८
धूरसि धूर्व धूर्वन्तम् १.८
धृष्टिरस्यपाग्नेऽ अग्रिम् १.१७
ध्रुवक्षितिर्ध्रुवयोनिः १४.१
ध्रुवसदं त्वा नृषदं ९.२
ध्रुवाऽ सि धरुणास्तृता १३.१६
ध्रुवाऽ सि धरुणेतः १३.३४
ध्रुवाऽ सि ध्रुवोऽ यं ५.२८
ध्रुवोऽ सि पृथिवीं दृᳬंह ५.१३

न

नक्तोषासा समनसा १२.२; १७.७०
नक्षत्रेभ्यः स्वाहा २२.२८
न तद्रक्षाᳬंसि न ३४.५१
न तस्य प्रतिमा ३२.३
न तं विदाथ य इमा १७.३१
न ते दूरे परमा ३४.१९
न त्वावाँ२ ॥ऽ अन्यो दिव्यः २७.३६
नदीभ्यः पौञ्जिष्ठम् ३०.८
नभश्च नभस्यश्च १४.१५
नमऽ आशवे च १६.३१
नमऽ उष्णीषिणे १६.२२
नमस्तऽ आयुधाय १६.१४
नमस्तक्षभ्यः १६.२७
नमस्तेऽ अस्तु विद्युते ३६.२१
नमस्ते रुद्र मन्यव १६.१
नमस्ते हरसे शोचिषे १७.११;३६.२०
नमः कपर्दिने च १६.२९
नमः कूप्याय च १६.३८
नमः कृत्स्नायतया १६.२०
नमः पर्णाय च पर्णशदाय १६.४६
नमः पार्याय च वार्याय च १६.४२
नमः शङ्गवे च १६.४०
नमः शम्भवाय च १६.४१
नमः शुष्क्याय च १६.४५
नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यः १६.२८
नमः सभाभ्यः १६.२४
नमः सिकत्याय च १६.४३
नमः सु ते निर्ऋते १२.६३
नमः सेनाभ्यः १६.२६
नमः सोभ्याय च १६.३३
नमः स्त्रुत्याय च १६.३७
नमो गणेभ्यः १६.२५
नमो ज्येष्ठाय १६.३२
नमो धृष्णवे १६.३६
नमो बभ्लुशाय १६.१८
नमो बिल्मिने १६.३५
नमो मित्रस्य वरुणस्य ४.३५
नमो रोहिताय १६.१९
नमो वञ्चते परि १६.२१
नमो वन्याय च १६.३४
नमो वः पितरः २.३२
नमो वात्याय च १६.३९
नमो विसृजद्भ्यः १६.२३
नमो व्रज्याय च १६.४४
नमोऽ स्तु नीलग्रीवाय १६.८
नमोऽ स्तु रुद्रेभ्यः १६.६४-६६
नमोऽ स्तु सर्पेभ्यो ये १३.६
नमो हिरण्यबाहवे १६.१७
नमो ह्रस्वाय च १६.३०
न यत्परो नान्तरः २०.८२
नराशᳬंसस्य महिमानमेषां २९.२७
नराशᳬंसः प्रति शूरः २०.३७
नर्माय पुंश्चलूᳬं हसाय ३०.२०
नवदशभिरस्तुवत १४.३०
नवभिरस्तुवत १४.२९
नवविᳬंशत्यास्तुवत १४.३१
न वाऽ उऽ एतन्म्रियसे २३.१६,२५.४४
नहि तेषाममा चन ३.३२
नहि स्पशमविदत् ३३.६०
नाना हि वां देव १९.७
नाभा पृथिव्याः ११.७६
नाभिर्मे चित्तं विज्ञानम् २०.९
नाभ्याऽ आसीदन्तरिक्षम् ३१.१३
नार्यस्ते पत्न्यो लोम २३.३६
नाशयित्री बलासस्या १२.९७
निक्रमणं निषदनम् २५.३८
नियुत्वान्वायवा गहि २७.२९
निवेशनः सङ्गमनः १२.६६
निषसाद धृतव्रतः १०.२७, २०.२
नि होता होतृषदने ११.३६
नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः १६.५६, १६.५७
नृत्ताय सूतं गीताय ३०.६
नृषदे वेडप्सुषदे १७.१२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

प

पञ्च दिशो दैवीः १७.५४
पञ्च नद्यः सरस्वतीम् ३४.११
पञ्चस्वन्तः पुरुषऽ आ २३.५२
पथस्पथः परिपतिम् ३४.४२
पयसा शुक्रममृतं १९.८४
पयसो रूपं यद्यवा १९.२३
पयसो रेतऽ आभृतम् ३८.२८
पयः पृथिव्यां पयः १८.३६
परमस्याः परावतः ११.७२
परमेष्ठी त्वा सादयतु १५.५८,१५.६४
परमेष्ठ्यभिधीतः ८.५४
परस्याऽ अधि संवतः ११.७१
परं मृत्यो अनु ३५.७
परि ते दूडभो रथः ३.३६
परि ते धन्वनो हेतिः १६.१२
परि त्वा गिर्वणः ५.२९
परि त्वाग्ने पुरं वयम् ११.२६
परि द्यावापृथिवी ३२.१२
परि नो रुद्रस्य हेतिः १६.५०
परि माग्ने दुश्चरितात् ४.२८
परि वाजपतिः कविः ११.२५
परि वीरसि परि त्वा ६.६
परीतो षिञ्चता सुतम् १९.२
परीत्य भूतानि परीत्य ३२.११
परीमे गामनेषत ३५.१८
परो दिवा परऽ एना १७.२९
पवमानः सोऽ अद्य नः १९.४२
पवित्रेण पुनीहि मा १९.४०
पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ १.१२, १०.६
पशुभिः पशूनाप्नोति १९.२०
पष्ठवाट् च मे पष्ठौही १८.२७
पष्ठवाहो विराजः २४.१३
पातं नोऽ अश्विना २०.६२
पावकया यश्चितयन्त्या १७.१०
पावकवर्चाः शुक्रवर्चाः १२.१०७
पावका नः सरस्वती २०.८४
पाहि नोऽ अग्नऽ एकया २७.४३
पिता नोऽ सि पिता नो ३७.२०
पितुं नु स्तोषं महः ३४.७
पितृभ्यः स्वाधयिभ्यः १९.३६
पीवोऽ अन्ना रयिवृधः २७.२३
पुत्रमिव पितरावश्विना १०.३४,२०.७७
पुनन्तु मा देवजनाः १९.३९
पुनन्तु मा पितरः १९.३७
पुनरासद्य सदनम् १२.३९
पुनरूर्जा निवर्त्तस्व १२.९, १२.४०
पुनर्नः पितरो मनः ३.५५
पुनर्मनः पुनरायुर्म ४.१५
पुनस्त्वादित्या रुद्रा १२.४४
पुनाति ते परिस्रुतम् १९.४
पुरा क्रूरस्य विसृपः १.२८
पुरीष्यासोऽ अग्नयः १२.५०
पुरीष्योऽ सि विश्वभराः ११.३२
पुरुदस्मो विषुरूपः ८.३०
पुरुष एवेदꣳ सर्वम् ३१.२
पुरुषमृगश्चन्द्रमसः २४.३५
पूर्णा दर्वि परापत ३.४९
पूषणं वनिष्ठुनान् २५.७
पूषन्तव व्रते वयं ३४.४१
पूषा पञ्चाक्षरेण ९.३२
पृच्छामि त्वा चितये २३.४९
पृच्छामि त्वा परमन्तम् २३.६१
पृथिवि देवयजनि १.२५
पृथिवि च मऽ इन्द्रश्च १८.१८
पृथिवीच्छन्दोऽ न्तरिक्षम् १४.१९
पृथिव्याऽ अहमुदन्तरिक्षम् १७.६७
पृथिव्याः पुरीषमसि १४.४
पृथिव्याः सधस्थादग्निम् ११.१६
पृथिव्यै स्वाहान्तरिक्षाय २२.२९
पृश्निस्तिरश्चीनपृश्निः २४.४
पृषदश्वा मरुतः पृश्निः २५.२०
पृष्टीर्मे राष्ट्रमुदरम् २०.८
पृष्टो दिवि पृष्टो अग्निः १८.७३
प्रघासिनो हवामहे ३.४४
प्रजापतये च वायवे २४.३०
प्रजापतये त्वा जुष्टं २२.५
प्रजापतये पुरुषान् २४.२९
प्रजापतिर्विश्वकर्मा १८.४३
प्रजापतिश्चरति ३१.१९
प्रजापतिष्ट्वा सादयतु १३.१७
प्रजापतिः सम्भ्रियमाणः ३९.५
प्रजापते न त्वदेता १०.२०; २३.६५
प्रजापतेस्तपसा २९.११
प्रजापतौ त्वा देवतायां ३५.६
प्र तद् विष्णु स्तवते ५.२०
प्र तद् वोचेदमृतं नु ३२.९
प्रति क्षत्रे प्रति २०.१०
प्रतिपदसि प्रतिपदे १५.८
प्रति पन्थामपद्महि ४.२९
प्रतिश्रुत्कायाऽ अर्तनम् ३०.१९
प्रति स्पशो विसृज १३.११
प्रतीचीमारोह १०.१२
प्रतूर्तं वाजिन्नाद्रव ११.१२
प्रतूर्वन्नेह्यवक्रामन् ११.१५
प्रत्युष्टꣳ रक्षः प्रत्युष्टा १.७, १.२९
प्रथमा द्वितीयैः २०.१२
प्रथमा वाꣳ सरथिना २९.७
प्र नूनं ब्रह्मणस्पतिः ३४.५७
प्र नो यच्छत्वर्यमा ९.२९
प्र पर्वतस्य वृषभस्य १०.१९
प्र प्रायमग्निर्भरतस्य १२.३४
प्र बाहवा सिसृतम् २१.९
प्र मन्महे शवसानाय ३४.१६
प्रमुञ्च धन्वनस्त्वम् १६.९

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्र याभिर्यासि दाश्वान् २७.२७
प्र वऽ इन्द्राय बृहते ३३.९६
प्र वायुमच्छा बृहती ३३.५५
प्रवावृजे सुप्रया बर्हिरेषाम् ३३.४४
प्र वीरया शुचय: ३३.७०
प्र वो महे मन्दमानायान्धस: ३३.२३
प्र वो महे महि नमो ३४.१७
प्रसद्य भस्मना योनिम् १२.३८
प्रस्तरेण परिधिना १८.६३
प्रागपागुदगधराक्सर्वत: ६.३६
प्राचीनं बर्हि: प्रदिशा २९.२९
प्राचीमनु प्रदिशम् १७.६६
प्राच्यै दिशे स्वाहा २२.२४
प्राणदाऽ अपानदा १७.१५
प्राणं मे पाह्यपानं १४.८
प्राणपा मेऽ अपानपाश्चक्षु: २०.३४
प्राणश्च मेऽ पानश्च १८.२
प्राणाय मे वर्चोदा ७.२७
प्राणाय स्वाहाऽ पानाय २२.२३,२३.१८
प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रम् ३४.३४
प्रातर्जितं भगमुग्रम् ३४.३५
प्रेता जयता नर: १७.४६
प्रेदग्ने ज्योतिष्मान् याहि १२.३२
प्रेद्धोऽ अग्ने दीदिहि पुर: १७.७६
प्रैतु ब्रह्मणस्पति: ३३.८९, ३७.७
प्रैतु वाजी कनिक्रदत् ११.४६
प्रैषेभि: प्रैषानाप्नोति १९.१९
प्रोथदश्वो न यवसे १५.६२
प्रोह्यमाण: सोमऽ आगतो ८.५६

ब

बट् सूर्य श्रवसा ३३.४०
बण्महाँ२ ।।ऽ असि सूर्य ३३.३९
बर्हिषद: पितर ऊती १९.५५
बलविज्ञाय-स्थविर: १७.३७
बह्वीनां पिता २९.४२
बाहू मे बलम् २०.७
बीभत्सायै पौल्कसं ३०.१७
बृहदिन्द्राय गायत २०.३०
बृहन्निदिध्मऽ एषाम् ३३.२४
बृहस्पतेऽ अति यदर्यो २६.३
बृहस्पते परिदीया १७.३६
बृहस्पते वाजं जय ९.११
बृहस्पते सवितर्बोधय २७.८
बोधा मे अस्य वचसो १२.४२
ब्रह्म क्षत्रं पवते १९.५
ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं १३.३
ब्रह्मणस्पते त्वमस्य यन्ता ३४.५८
ब्रह्मणे ब्राह्मणं क्षत्राय ३०.५
ब्रह्म सूर्यसमं ज्योति: २३.४८
ब्रह्माणि मे मतय: ३३.७८
ब्राह्मणमद्य विदेयम् ७.४६
ब्राह्मणास: पितर: २९.४७
ब्राह्मणोऽ स्य मुखम् ३१.११

भ

भग एव भगवान् ३४.३८
भग प्रणेतर्भग सत्य ३४.३६
भद्रं कर्णेभि: शृणुयाम २५.२१
भद्राऽ उत प्रशस्तय: १५.३९
भद्रो नोऽ अग्निराहुत: १५.३८
भद्रो मेऽ सि प्रच्यवस्व ४.३४
भवतन्न: समनसौ ५.३; १२.६०
भायै दार्वाहारम् ३०.१२
भुज्यु: सुपर्णो यज्ञ: १८.४२
भुवो यज्ञस्य रजसश्च १३.१५;१५.२३
भूताय त्वा नारातये १.११
भूम्याऽ आखूनालभते २४.२६
भूरसि भूमिरसि १३.१८
भूर्भुव: स्वर्द्यौरिव ३.५
भूर्भुव: स्व: तत्सवितु: ३६.३
भूर्भुव: स्व: सुप्रजा: ३.३७
भेषजमसि भेषजम् ३.५९

म

मखस्य शिरोऽ सि ३७.८
मधवे स्वाहा माधवाय २२.३१
मधु नक्तमुतोषस: १३.२८
मधुमतीर्नऽ इषस्कृधि ७.२
मधुमान्नो वनस्पति: १३.२९
मधु वाताऽ ऋतायते १३.२७
मधुश्च माधवश्च १३.२५
मध्वा यज्ञं नक्षसे २७.१३
मनस: काममाकूतिम् ३९.४
मनस्तऽ आप्यायतां ६.१५
मनो जूतिर्जुषताम् २.१३
मनो न येषु हवनेषु ७.१७
मनो न्वाह्वामहे ३.५३
मनो मे तर्पयत ६.३१
मन्यवेऽ यस्तापं क्रोधाय ३०.१४
मयि गृह्णाम्यग्रे १३.१
मयि त्यदिन्द्रियम् ३८.२७
मयीदमिन्द्रऽ इन्द्रियम् २.१०
मयु: प्राजापत्यऽ उल: २४.३१
मरुताᳬ स्कन्धा विश्वेषाम् २५.६
मरुतो यस्य हि क्षये ८.३१
मरुत्वन्तं वृषभम् ७.३६
मरुत्वाँ२ ।।ऽ इन्द्र वृषभ: ७.३८
मर्माणि ते वर्मणा १७.४९
मशकान् केशैरिन्द्रम् २५.३
महानाम्न्यो रेवत्य: २३.३५
महाँ२ ।।ऽ इन्द्रो नृवदा ७.३९
महाँ२ ।।ऽ इन्द्रो य ओजसा ७.४०
महाँ२ ।।ऽ इन्द्रो वज्रहस्त: २६.१०
महि त्रीणामवोऽ स्तु ३.३१
मही द्यौ: पृथिवी च न: ८.३२;१३.३२
महीनां पयोऽ सि ४.३
महीमू षु मातरम् २१.५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महोऽ अग्नेः समिधानस्य ३३.१७
महोऽ अर्णः सरस्वती २०.८६
मा च्छन्दः प्रमा च्छन्दः १४.१८
मा तऽ इन्द्र ते वयम् १०.२२
मता च ते पिता च २३.२४, २३.२५
मातेव पुत्रं पृथिवी १२.६१
मा त्वाग्निर्ध्वनयीत् २५.३७
मा त्वा तपत्प्रियः २५.४३
मा नस्तोके तनये १६.१६
मा नः शꣳसो अररुषः ३.३०
मा नो महान्तमुत १६.१५
मा नो मित्रो वरुणः २५.२४
मापो मौषधीर्हिꣳसीः ६.२२
मा भेर्मा संविक्था अत १.२३
मा भेर्मा संविक्था ऊर्ज ६.३५
मा मा हिꣳसीज्जनिता १२.१०२
मा वो रिषत्खनिता १२.९५
मा सु भित्था मा सु ११.६८
माहिर्भूर्मा पृदाकु॰ उरुं ८.२३
महिभूर्मा पृदाकुर्नमस्त ६.१२
मित्रश्च म इन्द्रश्च १८.१७
मित्रस्य चर्षणीधृतः ११.६२
मित्रस्य मा चक्षुषा ५.३४
मित्रꣳ हुवे पूतदक्षं ३३.५७
मित्रः सꣳ सृज्य पृथिवीम् ११.५३
मित्रावरुणाभ्यां त्वा ७.२३
मित्रो न एहि ४.२७
मित्रो नवाक्षरेण ९.३३
मीढुष्टम शिवतम १६.५१
मुखꣳ सदस्य शिरः १९.८८
मुञ्चन्तु मा शपथ्यात् १२.९०
मूर्धानं दिवो अरतिम् ७.२४, ३३.८
मूर्धा वयः प्रजापतिः १४.९
मूर्धाऽसि राड् ध्रुवासि १४.२१
मृगो न भीमः कुचरः १८.७१
मेधां मे वरुणो ३२.१५
मो षू णऽ इन्द्रात्र ३.४६

य

य आत्मदा बलदा २५.१३
यऽ इन्द्रऽ इन्द्रियं दधुः २०.७०
यऽ इमा विश्वा भुवनानि १७.१७
यऽ इमे द्यावापृथिवी २९.३४
य एतावन्तश्च भूयाꣳसः १६.६३
यकासकौ शकुन्तिका २३.२२
यकोऽ सकौ शकुन्तकः २३.२३
यजा नो मित्रावरुणा ३३.३
यजुर्भिराप्यन्ते ग्रहाः १९.२८
यज्जाग्रतो दूरम् ३४.१
यज्ञ यज्ञं गच्छ यज्ञपतिम् ८.२२
यज्ञस्य दोहो विततः ८.६२
यज्ञायज्ञा वो अग्नये २७.४२
यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः ३१.१६
यज्ञो देवानां प्रत्येति ८.४; ३३.६८
यते स्वाहा धावते २२.८
यतोयतः समीहसे ३६.२२
यत्ते गात्रादग्निना २५.३४
यत्ते पवित्रमर्चिषि १९.४१
यत्ते सादे महसा २५.४०
यत्ते सोम दिवि ज्योतिः ६.३३
यत्पुरुषं व्यदधुः ३१.१०
यत्पुरुषेण हविषा ३१.१४
यत्प्रज्ञानमुत चेतो ३४.३
यत्र धारा अनपेता १८.६५
यत्र बाणाः सम्पतन्ति १७.४८
यत्र ब्रह्म च क्षत्रम् २०.२५
यत्रेन्द्रश्च वायुश्च २०.२६
यत्रौषधीः समग्मत १२.८०
यथेमां वाचं कल्याणीम् २६.२
यदक्रन्दः प्रथमं जायमानः २९.१२
यदग्रे कानिकानि चित् ११.७३
यदत्त्युपजिह्विका ११.७४
यदत्र रिप्तꣳ रसिनः १९.३५
यदद्य कच्च वृत्रहन् ३३.३५
यदद्य सूरऽ उदिते ३३.२०
यदश्वस्य क्रविषो मक्षिका २५.३२
यदश्वाय वास उपस्तृणन्ति २५.३९
यदस्या अꣳहुभेद्याः २३.२८
यदाकूतात्समसुस्रोत् १८.५८
यदापिपेष मातरं १९.११
यदापो अघ्न्या इति २०.१८
यदाबध्नन् दाक्षायणा ३४.५२
यदि जाग्रद्यदि २०.१६
यदि दिवा यदि नक्तम् २०.१५
यदिमा वाजयन्नहम् १२.८५
यदूवध्यमुदरस्यापवाति २५.३३
यद् ग्रामे यदरण्ये ३.४५; २०.१७
यद् दत्तं यत्परादनम् १८.६४
यद्देवा देवहेडनम् २०.१४
यद्देवासो ललामगुम् २३.२९
यद्धरिणो यवमत्ति २३.३०, २३.३१
यद्धविष्यमृतुशो देवयानम् २५.२७
यद्वाजिनो दाम २५.३१
यद्वातोऽ अपोऽ अगनीगन् २३.७
यद्वाहिष्ठं तदग्नये २६.१२
यन्ता च मे धर्ता १८.७
यन्त्री राड् यन्त्र्यसि १४.२२
यन्निर्णिजा रेक्णसा २५.२५
यन्नीक्षणं माँस्पचन्या २५.३६
यन्मे छिद्रं चक्षुषः ३६.२
यमग्ने कव्यवाहन १९.६४
यमग्ने पृत्सु मर्त्यमवा ६.२९
यमश्विना नमुचेरा १९.३४
यमश्विना सरस्वती २०.६८
यमाय त्वा ङ्गिरस्वते ३८.९
यमाय त्वा मखाय ३७.११

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यमाय यमसूमथर्वभ्य: ३०.१५
यमाय स्वाहान्तकाय ३९.१३
यमेन दत्तं त्रित: २९.१३
यवानां भागोऽ स्ययवानां १४.२६
यश्चिदापो महिना २७.२६
यस्तु सर्वाणि भूतानि ४०.६
यस्तेऽ अद्य कृणवद्भद्रशोचे १२.२६
यस्तेऽ अश्वसनिर्भक्ष: ८.१२
यस्ते द्रप्स स्कन्दति ७.२६
यस्ते रस: सम्भृत: १९.३३
यस्ते स्तन: शशय: ३८.५
यस्माज्जातं न पुरा ३२.५
यस्मान्न जात: पर: ८.३६
यस्मिन्त्सर्वाणि भूतानि ४०.७
यस्मिन्नश्वास ऋषभास: २०.७८
यस्मिन्नृच: साम ३४.५
यस्य कुर्मो गृहे १७.५२
यस्य प्रयाणमन्वन्य ११.६
यस्यायं विश्व: ३३.८२
यस्यास्ते घोरऽ आसन् १२.६४
यस्येमे हिमवन्त: २५.१२
यस्यै ते यज्ञियो गर्भ: ८.२९
यस्यौषधी: प्रसर्पथा १२.८६
यं क्रन्दसी अवसा ३२.७
यं ते देवी निर्ऋति: १२.६५
यं परिधिं पर्यधत्था २.१७
य: प्राणतो निमिषतो २३.३; २५.११
या इषवो यातुधानानाम् १३.७
याऽ ओषधी: पूर्वा १२.७५
याऽ ओषधी: सोमराज्ञी १२.९२,१२.९३
या तेऽ अग्नेऽय: शया ५.८
या ते घर्म दिव्या ३८.१८
या ते धामानि परमाणि १७.२१
या ते धामानि हविषा ४.३७
या ते धामान्युश्मसि ६.३
या ते रुद्र शिवा १६.२, १६.४९
या ते हेतिर्मीढुष्टम १६.११
यामिषुं गिरिशन्त १६.३
यावती द्यावापृथिवी ३८.२६
या वां कशा मधुमति ७.११
या वो देवा: सूर्ये १३.२३; १८.४७
या व्याघ्रं विषूचिकोभौ १९.१०
या शतेन प्रतनोषि १३.२१
याश्चेदमुपशृण्वन्ति १२.९४
यास्तेऽ अग्ने सूर्ये रुच: १३.२२,१८.४६
याँ२ ॥ऽ आवहऽ उशतो देव ८.१९
यां मेधां देवगणा: ३२.१४
या: फलिनीर्या: १२.८९
या: सेनाऽ अभीत्वरी: ११.७७
युक्तेन मनसा वयं ११.२
युक्त्वाय सविता देवान् ११.३
युक्ष्वा हि केशिना हरी ८.३४
युक्ष्वा हि देवहूतमान् १३.३७; ३३.४
युजे वां ब्रह्म ११.५
युञ्जते मन उत ५.१४; ११.४; ३७.२
युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषम् २३.५
युञ्जन्त्यस्य काम्या २३.६
युञ्जाथाᳬं रासभं युवं ११.१३
युञ्जान: प्रथमं मन: ११.१
युनक्त सीरा वि युगा १२.६८
युवं तमिन्द्रापर्वता ८.५३
युवᳬं सुराममश्विना १०.३३; २०.७६
युष्माऽ इन्द्रोऽ वृणीत १.१३
यूपव्रस्काऽ उत ये २५.२९
येऽ अग्निष्वात्ता १९.६०
ये चेह पितरो ये १९.६७
ये जनेषु मलिम्लव: ११.७९
ये तीर्थानि प्रचरन्ति १६.६१
ये ते पन्था: सवित: ३४.२७
ये त्वाहिहत्ये मघवन् ३३.६३
ये देवाऽ अग्निनेत्रा: ९.३६
ये देवा देवानाम् १७.१३
ये देवा देवेष्वधि १७.१४
ये देवासो दिव्येकादश ७.१९
येनऽ ऋषयस्तपसा १५.४९
येन कर्माण्यपस: ३४.२
येन द्यौरुग्रा पृथिवी ३२.६
येन वहसि सहस्रम् १५.५५; १८.६२
ये न: पूर्वे पितर: सोम्यास: १९.५१
ये न: सपत्नाऽ अप ते ३४.४६
येना पावक चक्षसा ३३.३२
येना समत्सु सासह: १५.४०
येनेदं भूतं भुवनम् ३४.४
येऽ न्नेषु विविध्यन्ति १६.६२
ये पथां पथिरक्षय १६.६०
ये भूतानामधिपतय: १६.५९
ये रूपाणि प्रति २.३०
ये वाजिनं परिपश्यन्ति २५.३५
ये वामी रोचने दिवो १३.८
ये वृक्षेषु शष्पिञ्जरा १६.५८
येषामध्येति प्रवसन्येषु ३.४२
ये समाना: समनस: १९.४५, १९.४६
योऽ अग्निरग्नेरध्यजायत १३.४५
योऽ अग्नि: कव्यवाहन: १९.६५
यो अस्मभ्यमराती ११.८०
योगेयोगे तवस्तरम् ११.१४
यो देवेभ्यऽ आतपति ३१.२०
यो न: पिता जनिता १७.२७
यो भूतानामधिपति: २०.३२
यो रेवान्यो अमीवहा ३.२९
यो व: शिवतमो रस: ११.५१; ३६.१५

र

रक्षसां भागोऽ सि ६.१६
रक्षोहणं बलगहनम् ५.२३
रक्षोहणो वो बलगहन: ५.२५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रक्षोहा विश्वचर्षणिः	२६.२६
रजता हरिणीः सीसा	२३.३७
रथवाहनꣳ हविरस्य	२९.४५
रथे तिष्ठन्नयति	२९.४३
रयिश्च मे रायश्च	१८.१०
रश्मिना सत्याय सत्यम्	१५.६
राजन्तमध्वराणाम्	३.२३
राज्ञ्यसि प्राची दिक्	१४.१३,१५.१०
रातिꣳ सत्पतिं महे	२२.१३
राया वयꣳ ससवाꣳसः	७.१०
राये नु यं जज्ञतु	२७.२४
रुचं नो धेहि	१८.४८
रुचं ब्राह्मं जनयन्तो	३१.२१
रुद्राः सꣳसृज्य पृथिवीम्	११.५४
रूपेण वो रूपमभ्यागाम्	७.४५
रेतो मूत्रं विजहाति	१९.७६
रेवती रमध्वम्	३.२१
रेवती रमध्वं बृहस्पते	६.८
रोहितो धूम्ररोहितः	२४.२
ल	
लाङ्गलं पवीरवत्	१२.७१
लोकं पृण छिद्रम्	१२.५४; १५.५९
लोमभ्यः स्वाहा	३९.१०
लोमानि प्रयतिर्मम	२०.१३
व	
वक्ष्यन्ती वेदाः	२९.४०
वनस्पतिरवसृष्टः	२०.४५
वनस्पतेऽ वसृजा	२७.२१
वनस्पते वीड्वङ्गो हि भूयाः	२९.५२
वनेषु व्यन्तरिक्षं ततान	४.३१
वयं ते अद्य ररिमा	१८.७५
वयं नाम प्रब्रवामा	१७.९०
वयꣳ सोम व्रते तव	३.५६
वयꣳ हि त्वा प्रयति	८.२०
वरुणस्योत्तम्भनमसि	४.३६
वरुणः क्षत्रमिन्द्रियम्	२०.७२
वरुणः प्राविता भुवन्	३३.४६
वरूत्रीं त्वष्टुर्वरुणस्य	१३.४४
वर्षाभिर्ऋतुनाऽऽदित्या	२१.२५
वर्षाहूर्ऋतूनामाखुः	२४.३८
वसन्ताय कपिञ्जलान्	२४.२०
वसन्तेन ऋतुना देवा	२१.२३
वसवस्त्रयोदशाक्षरेण	९.३४
वसवस्त्वा कृण्वन्तु	११.५८
वसवस्त्वाछृन्दतु	११.६५
वसवस्त्वाञ्जन्तु गायत्रेण	२३.८
वसवस्त्वा धूपयन्तु	११.६०
वसु च मे वसतिश्च	१८.१५
वसुभ्य ऋश्यानालभते	२४.२७
वसुभ्यस्त्वा रुद्रेभ्यः	२.१६
वसूनां भागोऽ सि रुद्राणाम्	१४.२५
वसोः पवित्रमसि द्यौः	१.२
वसोः पवित्रमसि शतधारम्	१.३
वस्व्यस्यदितिरसि	४.२१
वह वपां जातवेदः	३५.२०
वाचस्पतये पवस्व	७.१.
वाचस्पतिं विश्वकर्माणं	८.४५;१७.२३
वाचं ते शुन्धामि	६.१४
वाचे स्वाहा प्राणाय	३९.३
वाजश्च मे प्रसवश्च	१८.१
वाजस्य नु प्रसव आ	९.२५
वाजस्य नु प्रसवे	१८.३०
वाजस्य मा प्रसव	१७.६३
वाजस्येमं प्रसवः	९.२३
वाजस्येमां प्रसवः	९.२४
वाजः पुरस्तादुत	१८.३४
वाजाय स्वाहा	१८.२८; २२.३२
वाजेवाजेऽवत वाजिनः	९.१८,२१.११
वाजो नः सप्त प्रदिशः	१८.३२
वाजो नोऽ अद्य	१८.३३
वातरꣳहा भव वाजिन्	९.८
वातस्य जूतिं वरुणस्य	१३.४२
वातं प्राणेनापानेन	२५.२
वाताय स्वाहा धूमाय	२२.२६
वातो वा मनो वा	९.७
वाममद्य सवितर्वामम्	८.६
वायव्यैर्वायव्यान्याप्नोति	१९.२७
वायुरग्रेगा यज्ञप्रीः	२७.३१
वायुरनिलममृतम्	४०.१५
वायुष्ट्वा पचतैरवतु	२३.१३
वायुः पुनातु सविता	३५.३
वायो ये ते सहस्रिणः	२७.३२
वायो शुक्रोऽ अयामि ते	२७.३०
वायोः पूतः पवित्रेण	१९.३
वार्त्रहत्याय शवसे	१८.६८
विकिरिद्र विलोहितः	१६.५२
विज्यं धनुः कपर्दिनः	१६.१०
वित्तं च मे वेद्यं	१८.११
विदद्यदी सरमा	३३.५९
विद्या तेऽ अग्ने त्रेधा	१२.१९
विद्यां चाविद्यां च	४०.१४
विधृतिं नाभ्या घृतम्	२५.९
विधेम ते परमे जन्मन्नग्ने	१७.७५
वि न इन्द्र मृधो जहि	८.४४;१८.७०
वि पाजसा पृथुना	११.४९
विभक्तारꣳ हवामहे	३०.४
विभूरसि प्रवाहणः	५.३१
विभूर्मात्राः प्रभूः पित्रा	२२.१९
विभ्राड् बृहत्पिबतु सोम्यम्	३३.३०
विमान एष दिवः	१७.५९
विमुच्यध्वमघ्न्या	१२.७३
विराडसि दक्षिणा दिक्	१५.११
विराड् ज्योतिरधारयत्	१३.२४
विवस्वन्नादित्यैष ते	८.५
विश्वकर्मन् हविषा वर्धनेन	१७.२४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वकर्मन् हविषा वर्द्धनेन ८.४६
विश्वकर्मन् हविषा वावृधानाः १७.२२
विश्वकर्मा त्वा सादयतु १४.१२; १४.१४
विश्वकर्मा विमना १७.२६
विश्वकर्मा ह्यजनिष्ट १७.३२
विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतः १७.१९
विश्वस्मै प्राणायापानाय १३.१९
विश्वस्य केतुर्भुवनस्य १२.२३
विश्वस्य दूतममृतम् १५.३३
विश्वस्य मूर्धन्नधि १८.५५
विश्वाऽ आशा दक्षिण ३८.१०
विश्वानि देव सवितर्दुरितानि ३०.३
विश्वा रूपाणि प्रतिमुञ्चते १२.३
विश्वासां भुवां पते ३७.१८
विश्वेऽ अद्य मरुतः १८.३१;३३.५२
विश्वे देवा अꣳशुषु ८.५७
विश्वे देवाश्चमसेषु ८.५८
विश्वे देवासऽ आगत ७.३४
विश्वे देवाः शृणुतेमम् ३३.५३
विश्वेभिः सोम्यम् ३३.१०
विश्वेषामदितिर्यज्ञियानाम् ३३.१६
विश्वो देवस्य नेतुः ४.८, ११.६७ २२.२१
विष्णो रराटमसि ५.२१
विष्णोर्नु कं वीर्याणि ५.१८
विष्णोः कर्माणि पश्यत ६.४; १३.३३
विष्णोः क्रमोऽ सि सपत्नहा १२.५
वीतꣳ हविः शमितम् १७.५७
वीतिहोत्रं त्वा कवे २.४
वृष्णऽ ऊर्मिरसि १०.२
वेदाहमस्य भुवनस्य २३.६०
वेदाहमेतं पुरुषम् ३१.१८
वेदेन रूपे व्यपिबत् १९.७८
वेदोऽ सि येन त्वम् २.२१
वेद्या वेदिः समाप्यते १९.१७
वेनस्तत्पश्यन्निहितम् ३२.८
वैश्वदेवी पुनती देव्या १९.४४
वैश्वानरस्य सुमतौ २६.७
वैश्वानरो न० अग्निरु २६.८
वैश्वानरो न० अग्निर्नः १८.७२
व्यचस्वतिरुर्विया २९.३०
व्रतं कृणुता ४.११
व्रतं च मे १८.२३
व्रतेन दीक्षामाप्नोति १९.३०
व्रीहयश्च मे यवाश्च १८.१२
व्रेशीनां त्वा पत्मन्ना ८.४८

श

शतमिन्नु शरदः २५.२२
शतं वो अम्ब १२.७६
शमिता नो वनस्पतिः २१.२१
शर्म च स्थो वर्म च ११.३०
शर्मास्यवधूतं० अद्रिः १.१४
शर्मास्यवधूतं० धिषणा १.१९
शं च मे मयश्च १८.८
शं ते परेभ्यो गात्रेभ्यः २३.४४
शं नो देवीरभिष्टये ३६.१२
शं नो भवन्तु वाजिनः ९.१६ २१.१०
शं नो मित्रः शं वरुणः ३६.९
शं नो वातः पवताम् ३६.१०
शं वातः शꣳ हि ते ३५.८
शादं दद्भिरवकाम् २५.१
शारदेनऽ ऋतुना देवा २१.२६
शिरो मे श्रीर्यशः २०.५
शिल्पा वैश्वदेव्यः २४.५
शिवेन वचसा त्वा १६.४
शिवो नामासि ३.६३
शिवो भव प्रजाभ्यः ११.४५
शिवो भूत्वा मह्यमग्ने १२.१७
शुक्रज्योतिश्च चित्र १७.८०
शुक्रश्च शुचिश्च १४.६
शुक्रं त्वा शुक्रेण ४.२६
शुद्धवालः सर्वशुद्धवालः २४.३
शुनꣳ सुफाला वि १२.६९
शैशिरेणऽ ऋतुना देवाः २१.२८
श्रायन्तऽ इव सूर्यम् ३३.४१
श्रीणामुदारः १२.२२
श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च ३१.२२
श्रुधि श्रुत्कर्ण वह्निभिः ३३.१५
श्वात्रा स्थ वृत्रतुरः ६.३४
श्वात्राः पीता भवत ४.१२
श्वित्रऽ आदित्यानाम् २४.३९

ष

षडस्य विष्ठाः शतम् २३.५८
षोडशी स्तोमऽ ओजः १५.३

स

सऽ इधानो वसुष्कविः १५.३६
सऽ इषुहस्तैः स निषङ्गिभिः १७.३५
सखायः सं वः सम्यञ्च १५.२९
स जातो गर्भोऽ असि ११.४३
सजूरब्दोऽ अयवोभिः १२.७४
सजूर्ऋतुभिः सजूः १४.७
सजूर्देवेन सवित्रा ३.१०
सजोषाऽ इन्द्र सगणः ७.३७
सत्यं च मे श्रद्धा १८.५
सत्रस्यऽ ऋद्धिरसि ८.५२
स त्वं नश्चित्र वज्रहस्त २७.३८
स त्वं नोऽ अग्नेऽ वमः २१.४
सदसस्पतिमद्भुतम् ३२.१३
स दुद्रवत्स्वाहुतः १५.३४
सद्यो जातो व्यमिमीत २९.३६
सधमादो द्युम्निनीराप: १०.७
स नऽ इन्द्राय यज्यवे २६.१७
स नः पावक दीदिवः १७.९
स नः पितेव सूनवे ३.२४
स नो बन्धुर्जनिता ३२.१०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स नो भुवनस्य	१८.४४
सन्धये जारं गेहायोप	३०.९
सत्र: सिन्धुरवभृथाय	८.५९
स पर्यगाच्छुक्रम्	४०.८
सप्तऽ ऋषय: प्रति	३४.५५
सप्त तेऽ अग्ने समिध:	१७.७९
सप्तास्यासन्परिधय:	३१.१५
स प्रथमो बृहस्पति:	७.१५
स बोधि सूरिर्मघवा	१२.४३
समख्ये देव्या धिया	४.२३
समग्निरग्निना गता	३७.१५
समध्वरायोषस:	३४.३९
समास्त्वाग्नऽ ऋतव:	२७.१
समितꣳ संकल्पेथां	१२.५७
समिदसि सूर्यस्त्वा	२.५
समिद्धऽ इन्द्रऽ उषसाम्	२०.३६
समिद्धेऽ अग्नावधि	१७.५५
समिद्धो अग्निरश्विना	२०.५५
समिद्धोऽ अग्नि: समिधा	२१.१२
समिद्धोऽ अञ्जनकृदरं	२९.१
समिद्धोऽ अद्य मनुषो	२९.२५
समिधाग्निं दुवस्यत	३.१; १२.३०
समिन्द्र णो मनसा	८.१५
समुद्रस्य त्वावकयाग्ने	१७.४
समुद्रं गच्छ स्वाहा	६.२१
समुद्रादूर्मिर्मधूमाँ उदार:	१७.८९
समुद्राय त्वा वाताय	३८.७
समुद्राय शिशुमारान्	२४.२१
समुद्रे ते हृदय० यज्ञस्य	८.२५
समुद्रे ते हृदय० सुमित्रिया	२०.१९
समुद्रे त्वा नृमणा:	१२.२०
समुद्रोऽ सि नभस्वान्	१८.४५
समुद्रोऽ सि विश्वव्यचा	५.३३
सम्प्रच्यध्वमुप सम्	१५.५३
सम्भूतिं च विनाशं	४०.११
सम्यक्स्रवन्ति० एते	१७.९४
सम्यक्स्रवन्ति० घृतस्य	१३.३८
सम्राडसि प्रतीची दिक्	१५.१२
स यक्षदस्य महिमा	२७.१५
सरस्वती मनसा	१९.८३
सरस्वती योन्याम्	१९.९४
सरोभ्यो धैवरम्	३०.१६
सर्वे निमेषा जज्ञिरे	३२.२
सविता ते शरीराणि	३५.५
सविता ते शरीरेभ्य:	३५.२
सविता त्वा सवानाम्	९.३९
सविता प्रथमेऽ हन्	३९.६
सविता वरुणो दधद्	२०.७१
सवितुस्त्वा प्रसव	१.३१
सवित्रा प्रसवित्रा	१०.३०
सहदानुम्पुरुहूत	१८.६९
सह रय्या निवर्त्तस्व	१२.१०;१२.४१
स हव्यवाडमर्त्य:	२२.१६
सहश्च सहस्यश्च	१४.२७
सहसा जातान्	१५.२
सहस्तोमा: सह	३४.४९
सहस्रशीर्षा पुरुष:	३१.१
सहस्रस्य प्रमासि	१५.६५
सहस्राणि सहस्रश:	१६.५३
सहस्व मेऽ अराती:	१२.९९
सं क्रन्दनेन निमिषेण	१७.३४
सं चेध्यास्वाग्ने	२७.२
संज्ञानमसि	१२.४६
सं ते पयाꣳसि समु	१२.११३
सं ते मनो मनसा	६.१८
सं ते वायुर्मातरिश्वा	११.३९
सं त्वमग्ने सूर्यस्य	३.१९
सं बर्हिरङ्क्ताम्	२.२२
सं मा सृजामि	१८.३५
संवत्सरोऽ सि परि	२७.४५
सं वर्चसा पयसा	२.२४;८.१४,८.१६
सं वसाथाꣳ स्वर्विदा	११.३१
सं वां मनाꣳसि	१२.५८
सꣳ शितं मे ब्रह्म	११.८१
सꣳशितो रश्मिना	२३.१४
सꣳ समिद्युवसे वृषन्	१५.३०
सꣳ सीदस्व महान्	११.३७
सꣳ सृष्टां वसुभि:	११.५५
सꣳ स्रवभागा	२.१८
सꣳ हितासि विश्व	३.२२
सꣳ हितो विश्वसामा	१८.३९
साकं यक्ष्म	१२.८७
सा विश्वायु:	१.४
सिꣳ ह्यसि सपत्नसाही	५.१०
सिꣳ ह्यसि स्वाहा	५.१२
सिञ्चति परिषिञ्चन्ति	२०.२८
सिनीवालि पृथुष्टुके	३४.१०
सिनीवाली सुकपर्दा	११.५६
सिन्धोरिव प्राध्वने	१७.९५
सीद त्वं मातु:	१२.१५
सीद होत: स्वऽ उ लोके	११.३५
सीरा युञ्जन्ति	१२.६७
सीसेन तन्त्रं मनसा	१९.८०
सुगव्यं नो वाजी	२५.४५
सुगा वो देवा:	८.१८
सुजातो ज्योतिषा	११.४०
सुत्रामाणं पृथिवीम्	२१.६
सुनावमारुहेयम्	२१.७
सुपर्णं वस्ते मृग:	२९.४८
सुपर्ण: पार्जन्य:	२४.३४
सुपर्णोऽ सि गरुत्मान्	१२.४
सुपर्णोऽ सि गरुत्मान् पृष्ठे	१७.७२
सुप्रजा: प्रजा:	७.१८
सुबर्हिरग्नि: पूषण्वान्	२१.१५
सुभू: स्वयम्भू:	२३.६३
सुमित्रिया नऽ आप:	३५.१२;३६.२३ ३८.२३
सुरावन्तं बर्हिषदम्	१९.३२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुवीरो वीरान् ७.१३
सुषारथिरश्वानिव ३४.६
सुषुम्णः सूर्यरश्मिः १८.४०
सुष्टुतिᳪ सुमतीवृधः २२.१२
सुसन्दृशं त्वा वयं मघवन् ३.५२
सुसमिद्धाय शोचिषे ३.२
सूपस्थाऽ अद्य देवः २१.६०
सूर्यऽ एकाकी चरति २३.१०, २३.४६
सूर्यत्वचस स्थ राष्ट्रदा १०.४
सूर्यरश्मिर्हरिकेशः १७.५८
सूर्यस्य चक्षुरारोह ४.३२
सोऽ अग्निर्यो वसुर्गृणे १५.४२
सोममद्भ्यो व्यपिबत् १९.७४
सोम राजन् विश्वास्त्वम् ६.२६
सोमस्य त्वा द्युम्नेन १०.१७
सोमस्य त्विषिरसि० आग्नेय १०.५
सोमस्य त्विषिरसि० मृत्योः १०.१५
सोमस्य रूपं क्रीतस्य १९.१५
सोमᳪ राजानमवसे ९.२६
सोमः पवते सोमः ७.२१
सोमानं स्वरणम् ३.२८
सोमाय कुलङ्ग आरण्यः २४.३२
सोमाय लबानालभते २४.२४
सोमाय हᳪसानालभते २४.२२
सोमो धेनुं सोमः ३४.२१
सोमो राजामृतम् १९.७२
सौरी बलाका शार्गः २४.३३
स्तीर्णं बर्हिः सुष्टरीमा २९.४
स्तोकानामिन्दुं प्रति २०.४६
स्थिरो भव वीड्वङ्ग ११.४४
स्योना पृथिवी नो ३६.१३
स्योनापृथिवी नो० अप ३५.२१
स्योनासि सुषदासि १०.२६
स्रुचश्च मे चमसाश्च १८.२१
स्वगा त्वा देवेभ्यः २२.४
स्वतवाँश्च प्रघासी च १७.८५
स्वयम्भूरसि श्रेष्ठो २.२६
स्वयं वाजिँस्तन्वं २३.१५
स्वराडसि सपत्नहा ५.२४
स्वराडस्युदीची दिक् १५.१३
स्वर्ण घर्मः स्वाहा १८.५०
स्वर्यन्तो नापेक्षन्तः १७.६८
स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः २५.१९
स्वाङ्कृतोऽ सि विश्वेभ्यः ७.३, ७.६
स्वादिष्ठया मदिष्ठया २६.२५
स्वादुषᳪसदः पितरः २९.४६
स्वाद्वीं त्वा स्वादुना १९.१
स्वाहा पूष्णे शरसे ३८.१५
स्वाहा प्राणेभ्यः साधि ३९.१
स्वाहा मरुद्भिः परि ३७.१३
स्वाहा यज्ञं मनसः ४.६
स्वाहा यज्ञं वरुणः २१.२२
स्वाहा रुद्राय रुद्र ३८.१६
स्वैर्दक्षैर्दक्षपितेह १४.३

ह

हरयो धूमकेतवः ३३.२
हविर्धानं यदश्विना १९.१८
हविष्मतीरिमाऽ आपः ६.२३
हस्तऽ आधाय सविता ११.११
हंसः शुचिषद्वसु १०.२४ १२.१४
हिङ्काराय स्वाहा २२.७
हिमस्य त्वा जरायुणा १७.५
हिरण्मयेन पात्रेण ४०.१७
हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे १३.४ २३.१ २५.१०
हिरण्यपाणिमूतये २२.१०
हिरण्यपाणिः सविता ३४.२५
हिरण्यरूपाऽ उषसः १०.१६
हिरण्यशृङ्गोऽ योऽ अस्य २९.२०
हिरण्यहस्तोऽ असुरः ३४.२६
हृदे त्वा मनसे त्वा ६.२५, ३७.१९
हेमन्तेनऽ ऋतुना देवा २१.२७
होताध्वर्युरावयाः २५.२८
होता यक्षत्तनूनपातम् २८.२, २८.२५
होता यक्षत्तनूनपात् २१.३०
होता यक्षत्तिस्रो देवीः २१.३७,२८.८
होता यक्षत्त्वष्टारम् २८.९
होता यक्षत्पेशस्वतीः २८.३१
होता यक्षत्प्रचेतसा २८.३०
होता यक्षत्प्रजापतिम् २३.६४
होता यक्षत्समिधाग्निम् २१.२९
होता यक्षत्समिधानम् २८.२४
होता यक्षत्समिधेन्द्रम् २८.१
होता यक्षत्सरस्वतीम् २१.४४
होता यक्षत्सुपेशसा २८.२९
होता यक्षत्सुपेशसोषे २१.३५
होता यक्षत्सुबर्हिषम् २८.२७
होता यक्षत्सुरेतसम् २८.३२
होता यक्षत्सुरेतसमृषभम् २१.३८
होता यक्षत्स्वाहाकृतीः २८.३४
होता यक्षदग्निᳪ स्वाहा २१.४०
होता यक्षदग्निᳪ स्विष्ट २१.४७
होता यक्षदश्विनौ २१.४१,२१.४३
होता यक्षदश्विनौ सरस्वतीम् २१.४२
होता यक्षदिडाभिः २८.३
होता यक्षदिडेडितः २१.३२
होता यक्षदिन्द्रम् २१.४५, २८.११
होता यक्षदीडेन्यम् २८.२६
होता यक्षदुषे २८.६
होता यक्षदोजो न २८.५
होता यक्षद्दुरो दिशः २१.३४
होता यक्षद्दैव्या होतारा: २१.३६,२८.७
होता यक्षद्बर्हिरूर्णं २१.३३
होता यक्षद्बर्हिषीन्द्रम् २८.४
होता यक्षद्वनस्पतिम् २१.३९, २१.४६; २८.१०, २८.३३
होता यक्षद् व्यचस्वतीः २८.२८
होता यक्षन्नराशᳪसम् २१.३१

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.